16745

श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः

श्री १०८ श्रीस्वामी श्रीमद्युगलानन्यशरण जी महाराज के जीवनचरित

मंगलाचरण ।

श्लोक

नित्यमुक्तः स्वतः सर्ववेदकृत् सर्ववेदवित् ।
स्वपरज्ञानदातायस्तंवन्देगुरुमीश्वरम् ॥ १ ॥

कवित्त—श्रीगुरु देव ही ते ज्ञान विज्ञान होत भक्ति वर भेद वहु ग्रंथ वीच गाये हैं। इहलोक परलोक लोकालोक जेते ज्ञेयध्येय अनुमेय गुरू जू जनाये हैं ॥ वेद सब खेद विन गुरु को परत्व करै गुरु विन भेद कोऊ कहूं नहीं पाये हैं। कोऊ करो साधन अराधन अनादि देव जानकी सुवर महाराज गुरु पाये हैं ॥ १ ॥

श्रीगुरु स्वामी जू ते भये न कोऊ और होने विन अखिल लोक विदित प्रताप हैं। काम क्रोध लोभ मोह माया मद करि कर नाशवे को पञ्चानन राजैं करि दाप हैं ॥ दंभरत पाप गत विमुख कुजन तमतोम के समान दिनकर सम आप हैं। रसिकन रस शालि

पोषिवे को वारिद से मेरे से अधम को तो एई माई बाप हैं ॥ २ ॥

श्रीमन्महाराजायनमः श्रीसद्भ्योनमः ॐ नमोगुरुभ्यः
गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुदेवमहेश्वरः ।
गुरुरेवपरंब्रह्मतस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ १ ॥
विज्ञानरत्नमुकुटंज्ञानवैराग्यकुण्डलम् ।
श्रीमद्गुरुंगुणातीतंमनोभजनिरन्तरम् ॥ २ ॥
गुशब्दस्त्वन्धकारस्स्यात्रुशब्दस्तन्निवर्त्तकः ।
अन्धकारविरोधित्वात्गुरुरित्यभिधीयते ॥ ३ ॥

श्रुतिरपि ॥ आचार्य्यवान् पुरुषोवेद सगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठमिति ।

यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ।
तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशन्तेमहात्मनः ॥ ४ ॥
तस्माद्ब्रह्मैवाचार्य्यरूपेणावतिष्ठते ।
आचार्य्यंमाम्विजानीयात्नावमन्येत्कर्हिचित् ।
नमर्त्यवुद्ध्यासूयेतसर्वदेवमयोगुरुः ॥ ५ ॥
गुरौतुष्टेस्वयंतुष्टोगुरौरुष्टेनकश्चन ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनगुरुमेवप्रसादयेत् ॥ ६ ॥
भगवद्वाक्यं ॥ मद्भक्तंहिमनोयस्यशान्तोदान्तस्तथैवच ।
निरहंकारः क्षमाशक्तोगुरुरित्येववैश्रुतिः ॥ ७ ॥
मद्वेत्तामत्कथाशक्तः शृणोतिकथतेस्वयम् ।

नित्योत्सवप्रमुदितोजन्मकर्मादिभिस्तथा ॥ ८ ॥
मदभिज्ञंगुरुंशान्तंउपाशीतमदात्मकं ।
अमान्यमत्सरोदक्षोनिर्ममोदृढसौहृदः ॥ ९ ॥
स्मृतिसारे ॥ प्राकृतैः संस्कृतैश्चैवगद्यपद्याक्षरैस्तथा
देशकालादिभिः शिष्यंवोधयेत्सगुरुः स्मृतः ॥ १० ॥
वामनकल्पे ॥ योमंत्रःसगुरुःसाक्षात्योगुरुःसहरिःस्मृतः
गुरुर्यस्यभवेतुष्टस्तस्यतुष्टोहरिः स्वयम् ॥ ११ ॥

अतएव सर्ब प्रकार से गुरुदेव आराधन पूजन अर्चन बन्दन स्मरण करने योग्य हैं अकरणमे सर्वथा अनिष्टापत्ति है स्मृतिसारावल्याम् ।

गुरुत्यागीभवेद्रोगीमंत्रत्यागीदरिद्रता ।
गुरुमंत्रावुभौत्यागीविपदस्तुपदेपदे ॥ १२ ॥

प्रस्तावना ।

श्रीगुरु परत्व महिम्मा अगम अपार है प्रयोजन यह है के श्रीगुरु देव भजन से सर्व साधन साध्य सम्पन्न है यद्यपि श्रीगुरु माहात्म्य अथाह सागर है तथापि निजानन्दार्थ श्रीमत्सत्गुरु प्रेरणा से कुछ संक्षेप से लिखा जाय तौ कुछ आश्चर्य्य नहीं, यह नियम नहीं है के कोई पक्षी आकाश के अन्त लेने वास्ते उड़ता है सो नहीं किन्तु जितना सामर्थ्य जिस चिड़िया को है ऊँचे जाने का हर्ष उसको अवश्य प्राप्त

होता है इसी तरह यद्यपि मैं मतिमलीन दीन दुर्भागी विषयानुरागी हूं तौभी श्रीसद्गुरु प्रताप प्रभाकर के किरिण प्रकाश में यह छोटीसी चिड़िया भी बड़े पक्षी को ऊपर चढ़ते देख के अपने मन को उत्साह उड़ने को देती है, जहाँतक जाय सके, उह श्रीसद्गुरु चरित्र अगम अपार रूप चरित्र आकाश वे अंत का अन्त आज तक किसी ने पाया नहीं परन्तु कुछ संक्षेप से लिखते हैं।

जन्मोत्सव।

जो श्रीस्वामी महाराज लोकोद्धार के निमित्त साक्षात् परं ब्रह्मांश अपनी इच्छा से मंगलमय विग्रह मनुष्याकार ब्राह्मणों में उत्तम जो आदि ब्राह्मण पंचगौड में प्रसिद्ध हैं।

मोक्षधर्मे १७३ अध्याये।

अथभूयोजगत्स्रष्टाभोशब्देनानुवादयन्।
सरस्वतीमुच्चारतत्रसारस्वतोभवत् ॥

सारस्वत वंशावतंस में फल्गू गंगा के निकट ईशरामपुर जो प्रसिद्ध नगर अद्यापि विराजमान है स्वतंत्र अपनी इच्छा से श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य सम्बतानुसार १८७५ में सर्वोत्तम कार्तिक मास शुक्ल पक्ष ७ सप्तमी तिथि पुनर्वसू नक्षत्र सिंह लग्नादि यावत् ग्रह-

जन्मस्थान

जन्मतिथि

ज्योतिष शास्त्रानुसार उच्चप्रवल यथा श्रीरामचन्द्र जी महाराज के प्रादुर्भाव विषे उत्कृष्ट प्रताप युक्त वर्तमान रहे वह सब पाये जाते ग्रौर जिस ज्योतिर्विदने श्रीमहाराज जू का जन्म पत्र देखा ग्रौर जितनी उसकी कुशलता उस शास्त्र में हुई तितनाही ग्राश्चर्य्य होके प्रशंसा किया ग्रौर कहा के यह मनुष्य के लक्षण नही ग्रौर कहा के जैसे श्रीरामचन्द्र जी महाराज के शुभग्रह ऐसे पाये जाते हैं मनुष्य की ऐसी कुंडली नहीं दूसरी देखी गई जब से श्रीमहाराज प्रगट भये तब से ग्रामपुरनिवासी तथा देशवासी माता पिता से ग्रधिक प्रसन्न होते भए श्रीस्वामी जू के ग्रनंत वालचरित्र अलौकिक हैं ग्रौर ग्रकथनीय हैं वाल्यावस्था में जैसी जैसी क्रीड़ा ग्रौर लीला ग्रापने करी है वह सुख विलास माता पिता तथा सम्बन्धी ग्रामपुर बासी देख के ग्रपना सब कृत भूल जाते सब खेलौं में ग्राप को पतङ्ग डोर का खेल ग्रति पसंद था जिन बालकौं के साथ ग्राप चंग को खींचते वह बड़ भागी लड़का ग्रापकी माधुरी देख के थकित होता ग्रौर कहता के ग्राप मेरे पतंग को मत काटिये नहीं तौ मैं ग्राप की डोरी से जुदा हो जाऊंगा तौ यह संवन्ध सुख मेरा जाता रहेगा तब तो कभीं ग्राप बचा जाते ग्रौर कभी

यज्ञोपवीत

शिक्षा

उस डोरी को काट देते वह बालक कहता के अबकी बेर आप उड़ाइए किसी तरह आप मेरे पतंग को नहीं लेजा सकेंगे तब तौ आप हंस पड़ते और उस बच्चे सच्चे खेलाड़ी को आप जिता देते फिर बालक आप के चरण कमलों में खुस होके लोट जाता और आप प्रसन्न होके उसे उठाके आज्ञा करते के अब आज घर जावो कल्ह फिर आना ऐसे ऐसे अनन्त चरित्र कर के सबको सुख देते जब आपकी अवस्था आठ वर्ष की भई तब आपका यज्ञोपवीत को संस्कार हुवा और श्रीमहाराज पण्डित श्रीहरे कृष्ण जी बड़े विद्वान सर्व शास्त्र वेत्ता उस काल में अद्वितीय ब्रह्मज्ञ थे तिन से कुछ दिन श्रीस्वामी जी ने शास्त्राध्ययन किया श्रीउक्त पंडित जी आप से अति हर्षित होके कहने लगे के आप का पढ़ना एक लीला मात्र है क्योंकि जो दुरूह शास्त्रार्थ विषय बड़े श्रम करके भी पढ़ने से नहीं आता उसको आप विना श्रवण कियेही निरूपण करते हैं श्रीमहाराज मर्ज्जादापालक जू श्रीपंडित जू की प्रशंसा करके कहने लगे के आपही की अनुग्रह से तो यह सब है और श्रीमहाराज पारस देशोद्भवा बाणी में ऐसे निपुण हुए के पश्चिम देशीय विद्वान आलिम फ़ाज़िल से जो मतमतान्तर की चर्चा कभी होती तब

तो वह लोग आश्चर्य्य होते और कहते के ऐसी सर्वज्ञता हमलोग दूसरे में नहीं देखी अर्थात् सर्व वेद-वेदांग वेत्ता होते भए श्रीमहाराज जू की माता जी थोरेही काल में श्रीरामधाम पधारती भईं और श्रीस्वामी जी के दो भ्राता और दो भगिनी थीं और पिता जी श्रीस्वामी जू के अति प्रसन्न रहते हेतु यह है के स्वाभाविक पिता को पुत्रानुराग होता है आप श्रीमहाराज ऐसे बहुज्ञ पुत्र जिनका मंगल विग्रह मय शरीर ऐसा सुंदर मनोहर परम मंगल मय देहँ आप को स्वरूप अनूप न तो अति लम्बे और न अति छोटे मध्यभाग का आप का क़द बड़े विशाल सरस करुणा रस युक्त नेत्र और कमलप्राय हस्त और चरण वक्षस्थल उच्च प्रौढ मस्तक प्रसन्न विशाल, कटि सूक्ष्म कंठ कपोतवत् प्रसंशनीय, सिर के बाल सचिक्कन कोमल घुघुरारे पेंचदार, और दन्त आपके स्वेत सघन दाडिम वीजवत, बचन आपका ऐसा मधुर हितकारक के जो कोई सुनता सोई बसीभूत हो जाता चाल आपकी हंस कीसी तात्पर्य्य यह के नखसिख पर्यंत सर्वांग सामुद्रिक शास्त्रानुसार अति सुंदर सुलक्षण, पंडित गुणज्ञ धर्मज्ञ पितृ भक्त जिस पिता के ऐसा मनोहर पुत्र हुआ उस बाप को हर्षातिशय प्रसन्नता आल्हादा-

परिवार

धिक्य कैसे न होगा॥ एक बेर आप के श्रीपिता जी ने कहा कोई पारसी की बात सुनाइये उस समय में आप के पास किस्सा हातमताई की किताब मौजूद थी आप ने ऐसा बयान किया के श्रीमहाराज जी के पिता जी ऐसे प्रसन्न हुये के ऐसे कभी कम हुए होंगे और आशीर्वचन करने लगे के परमेश्वर आप का मनोरथ सिद्ध करै और शारीरक बल आप के देह में ऐसा था के एक बेर एक महंथ बड़े पहलवान युवा अवस्था प्रेमहास्य समेत आपका हाथ पकड़ के कुछ ज़ोर किया आपने सहज में दबादिया महंथ जी चिल्ला उठे और कहा के यह अमित पराक्रम आप के कैसे बाल्यावस्था में भया यह सुनिके आप हँसपड़े और गान विद्या आपने किसी से सीखा नहीं परन्तु जिस समै आप रागिनी अलाप करते और लय के साथ समबंध जाता तब तो अच्छे अच्छे गुनी जो लोग बीस वर्ष पर्यन्त गाने में श्रम किये हुये सो आश्चर्य्य होके आप से शिक्षा लेते यद्यपि आपको किसी व्यवहार परमार्थ की अपेक्षा न थी अपने सच्चिदानंद स्व स्वरूप में यथावस्थित रहते तौभी मर्य्यादा पालनार्थ विचार किया के दोनों मार्ग सत्पुरुषों ने धारन किया है एक यह के स्वतः उपदेष्टा होके संसारी जीवों को

शारीरिक शक्ति

संगीतप्रेमी

सदुपदेश करिके कृतार्थ करना यथा दत्तात्रेय आदि इदानींकाल में श्रीबाबा नानक जी श्रीजगजीवनदास जी आदि बहुत महापुरुष स्वतंत्र होके विचरे और अनंत जीवन को भगवत्सन्मुख करते भये और बहुत परमेश्वर रूप महात्मा लोगों ने परंपरा धारन किया यथा श्रीरामानुजाचार्य्य विष्णुस्वामी प्रभृत्यादि अनंत जीवन को कृतार्थ किए हैं दोनों मार्ग उत्तम सर्वोपरि हैं तथापि श्रीस्वामी जी परंपरा मार्ग पसन्द किया जिसको संप्रदाय कहते हैं एक समय में एक महात्मा श्रीभक्तमाली जी करिके विख्यात श्रीमहाराज जी के भवन में आये उन महापुरुष की रहस्य देख के आप खुश हुये और कहा हमको श्रीसीताराम मंत्ररहस्य तथा भावना की रीति आप कह दीजै तब श्रीभक्तमाली जी ने निवेदन किया के जो आपको ऐसाही करना है तौ हमारे स्वामी चिरान नगर में रहते हैं परम विज्ञशिरोमणि हैं तिनसे आप जानि लीजिए श्रीस्वामी जी ने अंगीकार किया कालान्तर में जब श्रीचिरान नगर निवासी सर्व शुभ गुण प्रकाशी शास्त्रज्ञ कवि शिरोमणि श्रीसीतारामानुराग में निमग्न श्रीमहाराज महंथ श्रीजीवाराम जी जिनका उपासना संबन्ध नाम श्रीयुगल प्रियाजी है स्वाभाविक आपके

परंपरामार्ग

गुरु की इच्छा

गुरु

श्रीस्वामी जी के शुभस्थान में पधारते भए श्रीमहाराज सत्यसंकल्प जू ने निश्चै किया के परंपरा मार्ग संप्रदाय रहस्य धारण करना ही सत्पुरुषों को योग्य है यह शिष्टाचर स्वीकार करके आप श्री महन्थ जी महाराज जू से दीक्षा ग्रहण करते भए कुछ दिन के बाद नगर पाटलि पुत्र जो प्रसिद्ध पटना शहर अजी मां बाद है जहाँ प्रसिद्ध हरिमंदिर अद्यापि पर्यन्त है वह गुरु गोविन्द सिंह जी का मुख्यस्थान है और श्रीग्रंथ साहेब जी की पूजा होती है शिष्यों का विशेष स्थान माननीय है जब उस हरिमंदिर में भीतर पधारे तब आप की छोटी अवस्था देख के जो वहां के पुजारी ग्रंथी रहे कुछु मन में सामान्य रीति से देखा तब आप मंद मुसुकान करके जो श्रीग्रंथ साहेब का हार्द है उस को श्रीस्वामीजी ने निरूपण किया तब तो वहाँ के जो प्रधान महंथ आदि रहे आश्चर्य्य हो के अपने सिंहासन पर अत्यंत आदर समेत बैठाया और प्रार्थना किया के हे गरीबनेवाज़ आप सच्चे बादशाह श्री बाबा नानकसाह स्वरूप हैं हम लोग बिना समझे आप को प्रथम सामान्य दृष्टि से देखा सो क्षमा कीजिये और श्रीगुरु देव बाणी से कृतार्थ कीजिये तब श्री स्वामी जी ने श्री ग्रंथ जी का व्याख्या किया

श्री ग्रंथसाहेब
और महाराजजी

और बहुत भांति से समझाया और जो जो दुरूह अर्थ छिपा हुआ भेद है उनको आपने स्पष्ट बयान किया एक वर्ष परयन्त उक्त नगर में आप निवास करके अपने प्रताप और कृपा से सब को आनन्द दिया और सत्पुरुषों को तो ऐसा हर्ष हुआ कि ऐसी प्रसन्नता किसी के समागम से न हुई थी पुनःस्वस्थान को आए जब पंद्रह वर्ष की आप की अवस्था भई और परंब्रह्मा नंद में आप ऐसे लीन रहते के न तो कोई लौकिकी बाधा होती और न कोई पंच क्लेश का संभव होता एक आश्चर्य्य रहस्य होता भया क्योंकि प्रथम ही जब से श्री महादेव जी ने स्वप्न में षड़क्षर मंत्र राज दिया था तब से प्रबल प्रताप प्रगट था तोभी श्री स्वामी जी विशेष अनुभव प्रकाश को गुप्त ही रखते थे तोभी सूर्य्य कैसे छिप सक्ते हैं अत्यंत उद्दंड प्रताप देख के श्री महाराज जू के पिता जी और भी जो जो विशेष लोग आप के चारु चरित्र रचना को देखते और कुछ संभावना नहीं कर सक्ते कई बार ऐसा भया है कि कोई किसी से पूछता कि अमुक पुरुष इस समय में कहाँ हैं और उस सभा में आप भी विराजे होते तुर्त कह देते के उस स्थान में हैं और जो जो बात परोक्ष में होती और आप से

१५ वर्ष की
अवस्था

दूर और गुप्त भी होती तोभी अनुभव से आप हंस करके सहज से कह दिया करते वह सब सत्य होता ऐसी बातों से लोग संभव करते कि यह देखने मात्र पुरुष का शरीर मनुष्य की न्याई आचरण करते हैं यह कोई अवतार या देवता अथवा परमेश्वर लीला धारण करके उत्पन्न हुए हैं एक उदासी संतराम सेवक दास जी नाम रहे उनका सनेह श्री महाराज जू के चरणों में प्रबल था जो अनुरागावेश की कोई बात होती तब उन संत से अब कुछ भेद अपना कभी कभी कहा करते और जब आप का शारीरक व्यवहार क्षुधा पिपासादिक बाधा कुछ न होती तब लोग आपस में मिल के कहते कि बड़ा आश्चर्य्य है न तो कुछ ए खाते हैं न पीते हैं और परमानन्द से प्रसन्न रहते हैं यह कौन दिव्य मंगल पुरुष हैं कैसे रहेंगे और क्या होगा जब यह बात घर घर फैल गई और बहुती बातैं ऐसी प्रगट होने लगीं जो सेवाय भगवत अवतार में और में नहीं पाई जावे तब श्री स्वामी जी ने बिचारा के अब गृह संबंध में रहने से लोगों को बड़ा प्रयत्न मालूम होने लगा और वैराग्य समेत इहाँ से जाने में सब लोगों को महा विषाद होगा इसलिये श्री महाराज जी ने गृह संबंधियों से तथा

ઉદાસી સંતરામ
સેવકદાસ

પર્યટન

अपने पिता से कहा कि काशी जाने का इरादा है यह सुनि के श्री पिता आदि सब सम्बन्धी मूर्छित से हो गए तथापि धैर्य्य किया यद्यपि वियोग जन्य दुःख असह्य था परंतु आपकी आज्ञा भंग करनी योग्य नहीं बिचार के सब लोग धैर्य्य करते भए जब श्री महाराज जी काशी जी को चले और पूर्वोक्त उदासी संत श्री राम सेवक दास जी भी संग हुए श्री स्वामी जी महाराज घोड़े पर सवार भए और बहुत से लोग आप के साथ भए गृह से चलते वेर जो खेद श्रीमहाराज जी के पिता तथा ग्राम पुरवासियों को भया है वह क्लेश श्रीदशरथ जी महाराज आदि श्री अयोध्या वासी लोगों के सेवाय और क्यों किसी को होने लगा जैसे श्रीरामचंद्र जी महाराज बन यात्रा को चले तैसेही श्री स्वामी जी महाराज जब अपनी जन्म भूमि से श्री काशी जी चले वैसेही विषाद सब को होता भया इस ग्रामपुरवासी परम पुरुष बिरह जन्य खेद प्रकाशी अति व्यग्र होते भए श्री महाराज भक्त जनवत्सल जू ने उन सबों को अपना बचनामृत पानकराय के धैर्य्य करते भए और यह आज्ञा किया कि तुम खेद मत करो हम कहीं नहीं जाते हम तुम्हारे निकट हैं और जिसकी प्रीति जिस में होती है उसे

वियोग भास होता है तादृश वियोग नहीं होता जो सनेह के समेत हृदय में है वह दूर नहीं कहा जाता

श्लोक

दूरस्थोपि समीपस्थो योयस्य हृदयेस्थितः
योयस्यहृदयेनास्ति समीपस्थोपिदूरगः ॥१॥

अर्थात् सब की वाक्यावलम्बन करि के घर को विदा किया और आप श्री काशी जी को चलते भये थोरे ही काल में श्रीवाराणसी पहुंच गए श्री काशी जी में नायब गोकुल चंद जी जो उस समय में वहाँ के हाकिम बड़े प्रतापी थे वह श्री महाराज जी के शरीर सम्बन्धी पैतृष्वस्त्रेय भ्राता रहे जब श्री स्वामी जी का आना सुना तुर्त दौड़ परे औ हाथोहाथ अपने स्वकीय गृह में निवास कराया और अति आदर से जैसी सेवा शुश्रूषा उचित रही तैसही करते भये श्रीमहाराज जी यद्यपि भीतर से परम तीव्र वैराग्यावस्था में स्थित रहे तथापि वाह्य व्यवहार वस्त्र पौशाक आदि जैसे उत्तम गृहस्थ लोगों के होते हैं तैसाही आप धारन करते रहे और पंच क्रोश आदि तीर्थ यात्रा श्रीकाशी जी का जब कर चुके तदुपरांत सत्समागम होने लगा उसी काल विषे श्रीबाबा रघुनाथ दास जी जो सिंधु देश के रहने वाले षटशास्त्री भाषा संस्कृत के परम वेत्ता

गोकुलचंद

श्री गोस्वामी जी के रामायण पर जो मानसदीपिका नाम टीका अपूर्व निरूपण निरूपिता विद्यमान है इन बाबा जी की प्रशंसा नवीन भक्तमाल में विद्यमान है सो यह है।

छप्पै

श्रीरघुनाथ सुदास की कथा मधुर काशी प्रगट
सर्व शास्त्र संग्रही हेतु वरतत्त्व विचारी
सरस सार निर्धार भार संसार निहारी
श्रीगोस्वामी कलित ग्रंथ वक्ता मृदुशीला
नाम रूप अविरुद्ध छके प्रीतम रसलीला
मिष्ट बचन रचना लिए वानी रससानी सुघट
श्रीरघुनाथ सुदा सकी कथा मधुर काशी प्रगट १

ए श्री बाबा जी परम विज्ञशिरो मणि जब श्रीस्वामी जी को देखा दर्शन मात्र से कृत कृत्य हो जाते भए और अनेक रहस्य की बात श्री महाराज जी से जानते भए और एक महात्मा श्री आत्माराम जी परम विरक्त जिनसे उपनिषद आदि ब्रह्म विद्या संकथन श्री स्वामी जी से प्रायः हुआ करता था और जो वेदान्त शास्त्र का हार्द अभिप्राय तात्पर्य्यार्थ भावार्थ श्रीमहाराज जी निरूपण करते भए वह किसी पंडित या शास्त्री से नहीं हो सक्ता था

उसको श्री स्वामी जी परिश्रम रहित निरुपन करि तुर्त समझा देते थे तब श्रीकाशी जी के सव पंडित लोग आश्चर्य्य हो श्री महाराज जी की प्रशंसा इस तरह पर करते भये के हे करुणासागर आपकी मूर्ति के दर्शन मात्र से हम लोग कृतार्थ हो गए आप का उपदेश सुनते हीं हम लोगों का अंधकार दूर हो गया और सब काशी जी के विद्वान लोग काशिराज से अति प्रसंसा किया और श्रीमहाराज जी को चाहा कि ऐसे पुरुषों के दर्शन अवश्य किया चाहिये उसी सभा में श्रीबाबा रघुनाथ दास जी वोल उठे कि जिन की प्रशंसा यह पंडित लोग कर रहे हैं उन महा पुरुष को हम आप के घर में ले आवेंगे इस बात के सुनते ही राजे बनारस अति प्रसन्न भए और श्रीबाबा जी की प्रसंसा करके बावा जी को विदा किया जब श्रीराम लीला की समय आई तब तो श्रीस्वामी जी के खुद ही श्रीराम लीला देखने की रुचि होती भई और नायब गोकुल चंद जी श्री महाराज जी के शरीर संबंध से भाई लगते थे उनको मालूम हुआ कि आप श्रीराम नगर में लीला देखने जावेगे तब तो बहुत से लोगों को साथ कर दिया और एक नौका बहुत अच्छी तैयार करवाय के श्री बाबा रघुनाथ दास जी

समेत श्री स्वामी जी सवार हो के श्री राम लीला सुस्थान रामनगर में पहुंचे और उत्तम स्थल में आसन भया दूसरे दिन श्रीबाबा रघुनाथ दास जी काशिराज से कहा कि आज हम पूर्वोक्त महापुरुष की आप के पूजन समय पर ल्यावेंगे इस बात को सुन के काशिराज अतिही प्रसन्न भए जब प्रातःकाल हुआ श्री बाबा जी श्री स्वामी जी महाराज से प्रार्थना किया कि चलिये आप को सैर करावें उस काल में श्री महाराज जी को अवस्था १९ वत्तीश वर्ष की थी गंगा तट विचरते हुए राजद्वार पर आए श्री बाबा जी के साथ श्री स्वामी जी महाराज का आना काशिराज को ज्ञात हो गया तुर्त दौड़ के चरणों पर गिर पड़ा बाद सावधान होने के श्री स्वामी जी को उच्च स्थान पर बैठा के बहुत प्रकार के प्रसंग ज्ञान भक्ति बैराग्य के हुए श्री महाराज जी का संभाषण सरस सार उपदेश सुन के राजा लोटपोट हो गया और प्रार्थना करने और स्तुति में असमर्थ जान के फिरि चरणों में गिरि के कहा कि हे स्वामिन् कुछ रोज श्री काशी जी में रहि के कृतार्थ करिये बहुत पूजन सतकार करिके श्री स्वामी जी को विदा किये श्री महाराज जी अपने आसन पर आए ॥ श्री बाबा जी

अौर एक महात्मा माहाराष्ठ ब्राह्मण रामचन्द्र भट्ट नाम दशाश्वमेध घाट पर रहते रहे श्री सीताराम जी के अनुराग में तत्पर रहते रहे अौर जब श्रीमद्रामायण पाठ करने लगते एकही सर्ग में पहरों व्यतीत हो जाता क्योंकि अश्रुपात पुलकावली गदगद कंठ से पाठ नहीं चल सकता था श्रीस्वामी जी को देख के भट्ट जी परम स्नेह करते भए अौर कहा कि आप का श्री काशी आना मेरे उद्धार के निमित्त हुआ है श्रीमहाराज जी भी भट्ट जी से प्रेम करते एक वेर भट्टजी अपना वृत्तान्त श्री महाराज जी से कहने लगे के हे स्वामिन् थोरही काल भया की मैं वेदान्त शास्त्र विचार कर रहा था कि आकस्मात् मेरे हृदय में अखंडनिर्विशेष ब्रह्म साक्षात्कार होने लगा तुर्त मेरे अन्तःकर्ण दिब्य स्फूर्ति हो गई के हमारे इष्ट तो श्रीश्याम सुन्दर दशरथ राज कुमार अनन्त ब्रह्मसत्ता के कारण हैं यह निरावयव ब्रह्म का अनुभव कैसे हुआ इसी चिंतन में श्री जानकी बल्लभ जू की प्रेरणा हुई तुर्त श्री अयोध्या जी को चला गया अौर श्री सरजू जी में गोता लगाते ही श्री सीताराम जी का प्रकाश उदय हो गया अौर दिब्य दर्शन श्री अयोध्या जी के हुए पूर्व निराकार का गंध मिट गया इस बात

के सुनतेही श्री महाराज ने भट्ट जी को हृदय में लगा लिए और कहा के प्रेम का देश यही है उपासना इसी को कहते हैं इस प्रकार एक बर्ष परयन्त श्री काशी जी में महाराज जी ने निवास किया और चित्त में उमंग श्रीचित्रकूट जाने को भया गोकुल चंद जी ने जाना के जाया चाहते हैं तब तो श्री महाराज जू से प्रार्थना किया के जल्दी नहीं करिये अगर जो आप को अवश्य ही जाना है तब तो सवारी और नौकर साथ जायंगे और वहां के हाकिम को लिखा जायगा जिस में किसी बात का तरद्दुत नहीं होवे और श्री चित्रकूट दर्शन करि के शीघ्र फिरि आइ जाइएगा तब श्री महाराज जू ने आज्ञा किया के वहां के हाकिम से हम से खूब जान पहचान है और आना जाना भी उसी के आधीन में है तब नायब गोकुलचंद जान गए के यह स्वतंत्र पुरुष हैं इच्छा चारी हैं जहां चाहैं तहां के मालिक हैं श्री महाराज जी श्री चित्रकूट चलते भए काशी निवासी शतशः मनुष्य संग हो लिए विलाप के साथ चलते भए श्री स्वामी जी सब के बारन करते भए और धैर्य्य कराके बिदा किया कुछ लोग संग रहे थोड़े ही काल में श्री चित्रकूट पहुंच गए वहां की अवस्था अकथनीय है परम तीब्र बैराग्य धारण करते

चित्रकूट
यात्रा

भए यह प्रथम चित्रकूटागमन है घोड़ा जो आपकी सवारी का था उसको तथा और जो कुछ असबाब रहा सब को दे दिला दिए और लोगों की बिदा कर दिया परंतु वह उदासी संत जो प्रथम से संग रहे श्री राम सेवक दास जी उन्होंने साथ नहीं छोड़ा यद्यपि श्रीमहाराज जू ने बहुत समझा के कहा था जाने वास्ते तो भी संग ही में रहे जब श्री कामदगिरि जी का दर्शन किए तब तो श्री महाराज जू की अवस्था श्री भरत जू की सी होती भई उस विरागानुराग को देख के लोगों की मति गति थकित हो जाती भई पंच क्रोश यात्रा विधि संयुक्त करते भए और जो कोई ग्राम पुर निवासी श्री चित्रकूटबासी श्री महाराज साहेब को देखते वह लोग यह अनुमान करते के देखने में तो मनुष्य मालूम होते हैं परंतु इनका आकार और स्वभाव बिलक्षण देखने में आवता है न तो मनुष्य कह सक्ते हैं न देवता कहा जाता है आश्चर्य्य शोभा सर्व गुण संपन्न दीखते हैं यह निश्चै होता है के साक्षात श्री रामचंद्र जी महाराज हम सबों के आनंद देने के वास्ते प्रगट भए हैं परंतु जब श्री रामचंद्र जी महाराज होते तब तो श्री जानकी जी अवश्य होतीं न कही के दूसरे पुरुष को श्री लक्ष्मण जी का संभावना करे

કામદગિરિ
ના દર્શન.

तब यह भी नहीं हो सक्ता क्योंकि श्री जानकी जू का न होना यह तो पंचवटी की लीला है और यह स्थल श्री चित्रकूट जी हैं यह कैसे हो सकैगा निश्चै हुआ के यह कोई परमेश्वरांश महा पुरुष हैं यही विचार करते हुए कहते हैं के हम नहीं धार सकते के यह कौन मंगल मय बिग्रह हैं इत्यादिक अनेक तर्क वितर्कणा करिके कहने लगे के इन के माता पिता संबंधी कैसे इनका वियोग जन्य दुःख सहते होंगे तब तो सब लोग आपस में बिलाप करिके कहते भए के राजा श्री दशरथ जी महारानी श्री कौशल्या जी भी तो वियोग सहते ही थे तैसहीं इन के भी माता पिता सहते होंगे इत्यादि अनेक वार्ता करते हैं और कहते के जो यह हमारे घर भोजन पावते तब तो हम अपना जन्म सफल मानते इसी प्रकार एक वर्ष परयंत श्री चित्रकूट में निवास करते भये इसके अनन्तर श्री महाराज जू की उत्कंठा श्री अयोध्या जी देखने को ऐसी प्रबल भई जैसे श्री विभीषण जू के राज्याभिषेक के पीछे श्री सीताराम जी को स्व कीया राजधानी देखने की अभिलाषा हुई थी उसी समै उन पूर्वोक्त उदासी संत श्रीराम सेवक दास जी को परम सुहृदता के साथ संग ले करके श्री अयोध्या जी को चलते भए और शहर बांदा

અયોધ્યા ગમન

વાંદા

બ્રહ્માવર્ત

લખનૌમેં

ઉદાસીકો
રામદેઈકો
ઘરે મોકલ્યા

होते हुए ब्रह्मावर्त में पहुंचे वहां कुछ दिन रहते भए अब अधिक प्रतिष्ठा से भीरभार बहुत होने लगी तो वहां से लक्ष्मण पुर जो प्रसिद्ध शहर लखनौ है तहां पहुंचे और दैव योग से उन उदासी संत का शरीर खेदित हुआ श्री महाराज जी को अनुभव से ज्ञात हो गया के इन का देह नहीं रह सक्ता यह बिचार के श्री स्वामी जी ने एक मनुष्य भेजा राम देई जो के घरकों यह रामदेई जी महाराज जू की सहोदर भगिनी थीं जो उसी शहर लखनौ में व्याही रहीं और रामदेई जी के ससुराल के लोग बादशाही मुलाजिम बड़े ऐश्वर्य्य वाले थे आप उन के घर जाना उचित नहीं समझ के सवारी पालकी मगा के उदासी जी को उनके घर को बड़े सुबिस्ते के साथ भेज दिया और आप कई दिन के बाद श्री अयोध्या जी पहुंचे और अयोध्या जी का परम प्रकाश जगमग रूप चमत्कार देख के परमानंद स्वरूप समुद्र हृदय उमड़ता भया और उस आनंद को आप बहुत रोकते थे परंतु नहीं रुकता था कभी आप गाने लागते और कभी नृत्य करने लागते और कभी आप के मुखारबिंद से अनेक प्रकार की बाणी छंद प्रबंध की प्रेम रस भरी हुई निकसती जिन बचनो को सुन के अनुरागावेश में लोग आनंदित होते भए सो

आश्चर्य बात सोहावनी कभी ऐसी बानी विरहमय निकसती पद ॥ मंगल चित नित अति अकुलाय हाय कासे भावों हो ॥ विरह व्यथा बहु जागत छवि अभिलाखों हो ॥ बीते दिवस अनेक नेक सुधि नाहि न हो ॥ युगल अनन्य बेदरदी दरद नहि बूझै हो ॥ ललना तदपि न छाड़न योग प्रीति रस सूझै हो ॥ सागर विरह अपार पार कैसे पाऊ हो ॥ ललना जेहि तेहि विधि गहि मौन मनहि समुझाऊं हो इत्यादिक अनेक प्रकार के पद आप अनुराग संयुक्त हो के अलाप करते और मणी कूटादिक सुस्थलो में स्वतंत्र बिचरते जितने विशेष लोग श्री अयोध्या वासी उस काल में विद्यमान रहे श्री महाराज जी का भाव अनुराग दशा देख के चकित होते भए और कभी सदा चार बिचार के माधुकरी भिक्षा के लिये जिस अयोध्याबासी के घर आप जाते वह कृत कृत्य हो के पद प्रक्षालनार्थ जल लेके दौड़ता तब आप आज्ञा करते के थोड़ी सी रोटी लेगें और सत्कार का कुछ काम नहीं है वह लोग भोजन वास्ते बहुत प्रार्थना करते तो भी भोजन नहीं पावते केवल भिक्षामात्र ले लेते और कभी आप के पाव में घूंघुरु होता जो नृत्य करते तब आश्चर्य अवस्था आप की देख के अनुमान करते के ऐसे संत अनंत गुन संपन्न हम लोग कभी देखाही नहीं ऐसी बात फैलते

अयोध्या
दर्शन एवं
प्रेमावेश

माधुकरी
वृत्ति

श्री पं. उमापत

श्री अयोध्या जी भर में विख्यात हो गई उस समय में श्री पंडित उमापति जी जो प्रबल ब्याकरण में अद्वितीय थे इन श्री पंडित जी का छप्पा नवीन भक्तमाल में प्रगट हैं ॥ मूल ॥ उमादत्त पंडित बिमल अवध कुंज बनबास लियो ॥ नाम रूप लीला प्रताप अरुधाम विशेषी ॥ श्री सरयू तट पुलिन कुंज की लीला पेखी ॥ मानस उज्वल रीति नीति रसिकन में प्रीती ॥ अति उदार संशय निवृति चित अद्भुत रीती ॥ संस्कृत भाषा काव्य रचि संतन को सुख राश दियो ॥ उमादत्त पंडित विमल अवध कुंज बनबास लियो १ टीका कवित्त उमापति पंडित् अखण्डित सुनेम प्रेम राजै सभा, नित्य चक्रवर्ति महाराज के। सीता राम लखन भरत रिपुसूदन के, मंगल सुसाजै मिलि वृन्द द्विजराज के ॥ शील क्षमा दया वात्सल्य के तो सागर से, सख्य के सहायक भवन रस राज के ॥ आगम निगम शास्त्र विद्या सिंधु मंदरसे, मथिकै निकासे गुण रत्न रघुराज के ॥१॥ सरजू निकट यामदग्नि तपोभूमि ताके, पूरब दिशा में जन्म भूमि सुखदाई है। द्विज संस्कार सब भए काशी गए तहां ब्याकरण शिक्षा भाष्य अन्त लगि पाई है ॥ चले शास्त्र पठि विश्वनाथ पद शीसनाय, पेखी सभा जहां तहां कोविद बड़ाई है। देखे बहु भूमि पति कोई नहीं नीति रत, त्यागि अन्य गति विंध्याचली

उर ध्याई हैं ॥२॥ लोचन उघारि के बिलोकी चहु दिशि भूमि ईश इच्छा प्रेरित पुनीत पत्र पायो है ॥ वाचेते विलोकेते गोशांई के कवित्त धिग जीवन जो राम पद नेह न लगायो है॥ भई अरवरी कहा कियो नरहरी बात साच देखि परी तब यहै उर आयो है । त्यागि जग आस कियो अवध निवास पेखि सकल सुपास क्षेत्रन्यास मन भायो है ॥३॥ आये अनुरागी जे अवध पुरवासी तिन निज निज भावना की चरचा चलाई है ॥ राघव ब्रह्मण्य देव गुन गन भायो उर अति सुख पायो नीर नयन झरि लाई है ॥ श्री परमहंस भक्तमाली आदि भावुक जे तिन के समागम मेंपरा रति छाई है॥ अंक में बैठाय शिर घ्राण करि फेरनि मे उपमान पाई कवि मति हूं लजाई है ॥४॥ जेती धन आवै तेती विप्रन को बांटि देत आप फलाहार वृत्ति रीति शुचिलई है॥ पाठ जेते पढ़ैं तिन्है सब को पढ़ावत हैं ऐसे राम भक्तन सो रीति कछु नई है॥ राम रूप धाम लीला न्यूनता न सहि सकैं विमुखी पाखंडिन को ताडना हूं दई है॥ आठोयाम वारामास लीला नई नई करैं संतगुन गावैं इह धन्य रस कई है ॥५॥ वह श्रीपंडित जी महाराज जब श्रीस्वामी जी का रहस्य श्रवण किये और सब लोगों से अद्भुत प्रसंसा श्रवण किये तब तो अति उत्कंठित

ઉમાપતિજીને
મં.૮.

होके अपने भ्रातृज रंगराज पति जी को भेजा और कहा के जैसे वनै तैसे उन महापुरुष को अवश्य ले आय के घर पवित्र कराइये बड़े प्रेम प्रसंसा समेत श्रीस्वामी जी महाराज पंडित जी के घर पधारते भये श्रीपंडत जी अति आदर करके प्रसाद पावने अर्थ निमंत्रन करते भये श्रीमहाराज जी श्रीपंडित जी की सज्जनता और भाव देखिके प्रसन्न भये प्रसाद सेवन किये और आगन में बैठे श्रीपंडित जी की पत्नी और पुत्री तथा सब परिवार भर घेर के बैठते भये और सब कोई प्रार्थना करने लगे के नित्य प्रति यहां हीं प्रसाद सेवन किया करैं तब श्रीस्वामी जी ने आज्ञा किया के कभी कभी ऐसही होगा नित्य प्रति एकत्र प्रसाद नहीं हो सक्ता परन्तु कभी कभी आप के पास अवश्य आया करेंगे क्योंकि आप ज्ञान वृद्ध वयोवृद्ध उभय संपन्न हैं इस बचन को सुनि के श्रीपंडित जी प्रसन्न होके श्रीस्वामी जी पर मंगलाभिषेक आशीर्वचन करके कहा के आप हमारा मनोरथ सिद्ध किया और कृतार्थ किये बहुत मिन्नत करके विदा किये और उस समै में श्रीअयोध्या जी के सब अनुरागी महापुरुष लोग श्रीस्वामी जी को देखि के आन्द भये और जो जो रसिक मंडली के संत समागम किये वह कृतकृत्य हो

गये और एक परमहंस महात्मा परम अनुरागी विख्यात जिनके अनंत माधुर्य्य प्रेमावेश के चरित्र विद्यमान हैं एक बेर श्रीरघुनंदन चितचंदन जू की टोपी का दर्शन करि करि के तीन दिन प्रयन्त श्रीपरमहंस जी प्रेम में विव्हल रहे खाने पीने सोने बोलने का कुछ होश नहीं रहा अैसे श्रीपरमहंस जू की शुभगाथा नवीन भक्तमाल में भी कुछ निरुपण है (भक्तमाल मूल) श्रीपरमहंस वरहंस सम्मनन मांझ भीज्यो हियो । पक्ष सख्य संबंध सरस सारंस सुखदवर। चलन माधुरी रीति प्रीति संबंधित मन हर। भाव अनूपम क्षीरनीर निरणय नित भावत। मानस प्रीतम रहस रमत रस सहज सोहावत। प्रबल उपासक मित्र गुनगन सोइ मुक्ता हल कियो। श्रीपरमहंस वरहंस सममनन मांझ भीज्यो हियो १ (टीका) श्री सीताराम रसिक परम हंस भाविक प्रवर सुखदायक सुभायक सरस हैं। राज पुत्र सख्य सनबन्ध पक्ष धारे रसराज रीति वारेन के प्रेम पर बसहैं। मधुर चलनि वर बोलनि हंसनि मृदु माधुरी बिलोकनि में करत स्वबस हैं। भाव भेद मंडन विरुद्ध पक्ष खंडन समर्थ को जू पायो बड़े भागते दरस हैं ॥१॥ प्रथम अवस्था मांहिँ ग्रहण संन्यास कियो बसन कषाय युत वेष शुभ साजे हैं। हींगलाज आदि देश देशन अनेक

શ્રીપરમહંસ
જી સ્નેહી

फिरे जहां देखे तहां सीताराम शुभ भ्राजे हैं। राघव की प्रेरनाते अवधिपुरी में आये सरजू नहातही सकल दुख भाजे हैं। सरल स्वभाव देखि रसिकन अपनाये पायके प्रतोष संतसभा में विराजे हैं ॥२॥ श्री पैहारी दास जू की रहस्य पुनीत देखि सहित विनीत जाय शिष्य शुचि भये हैं। भुजन धनुषवान कंठ में युगल कंठी सुंदर तिलक मंत्र राज श्रुतिलये हैं ॥ नाम सीताराम दास रसिकन मन भायो नाम धाम रूप के परत्व सुख छये हैं। भाव भेद सकल विचारि गुरु आयसु लै रामानुज जी से सख्य भाव रंग रये हैं ॥३॥ सुंदर सुशील देखि शील मनी नाम दियो वय क्रम यथोचित सकल दरसाये हैं ॥ रघुबंशी मातु पितु जाति पांति भांति एक राघव मिलन के विवेक सरसाये हैं। भयो निज रूपको प्रकाश यही तनहीमें इन्द्रिनके विषम विकार लै नसाये हैं। रसिक सुजान उर अंतर की जानि जिय मानि तुल्य प्रण निज महल बसाये हैं ॥४॥ जब ते महल को निवास सुख छायो उर तबते लडैती लाल कृपा अधिकाई है। रसिक समाज बहु आवैं सुख पावैं देखि सादर बैठाय रस चरचा चलाई है। निज निज भाव की अधिकता जनावै धृष्ट बचन सुनावै तहां मति न समाई है। मानहु शृंगार बीर इनहीं को रूप धरे निज

निज सेनसाजि करत लराई है ॥५॥ अवधि महान मानसर के निवासी लाल क्रीडा के भवन कञ्ज बन में रहत हैं । नीर क्षीर इमि जीव वृन्द विषे अंबु मिले इष्ट संबंधिन को न्यारे कै गहत हैं । क्षण क्षण नई नई लीला को विवेक गुण चुनि चुनि मुक्ता सम योग को लहत हैं । औरन की चाल जिन चाल आगे फीकी लागे रसिक परमहंस ताहीते कहत हैं ॥६॥ यह पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्ट श्रीपरमहंस जी महाराज और श्रीस्वामी जी महाराज जू से अविचल परस्पर सनेह रहा उस काल में जो इन सरस सनेहिन का मिलाप और इष्ट संबंधी बार्ता जो होती रही वह अन्यत्र दुर्लभ से सुनाजा सक्ता है उन बचनों को श्रवण करके सठ भी सुधर जाते रहे और इष्टाराधन में तत्पर हो जाते रहे और श्रीस्वामी जी महाराज कभी कभी श्रीसरजूजी के पुलिन में जो नामोच्चारण करते उस काल में सच्ची आँख वालों की गुल्मलता वृक्षों की स्निग्धता और सरसता जैसी देखि परती उन्ही सज्जनो की आखें जानती हैं अनुराग पूर्वक जब श्रीसीताराम नाम उच्चारण आप करते उस काल में यह जाना जाता के शतशः पुरुष श्रीसीताराम नाम उच्चारण कर रहे हैं यद्यपि श्रीस्वामी जी का परामर्श भावनातीत मन भावन

नित्यानंद में था शांत दास्य सख्य वात्सल्य शृंगार के पोषक रहें और सबका प्रबर्तक राह देखावने वाले साक्षत् आचार्य्य स्वरूप आपका आविर्भाव इसी लोकोपकारार्थ है परन्तु तौ भी रस राज में आप की प्रवृत्ति अति ही प्रबल थी क्योंकि जीवमात्र को आत्म समर्पण परतंत्रता अबलता श्री उज्वल रस ही में पूर्वाचर्य्यों का सिद्धान्त है और रस भेद जो मुख्य श्रुती रसोवैसः पुकारती हैं इत्यादिक निरणय जो लोग चाहैं तब तो श्री स्वामी जी के निर्मित जो ग्रंथ उज्वल उत्कंठा विलाश और सर्ब सिद्धांत सार और मधुर मंजुमाला और श्रीसीताराम सनेह बाटिका आदिक जो पचासी छियासी ग्रन्थ अति सर्ब लोकोपकारक नाना प्रकार के रहस्य भावना साधन ज्ञान भक्ति बैराग्यादि अनन्त प्रकार प्रकरण गुंफित बहुत ही चित्र सुचित्र रचना सुरचित हैं जिन श्रीमहाराज स्वामी जू के बचनामृत के प्रसंसा में एक अनुरागी के कुछ कवित्त संक्षेप से हैं सो यह लिखेजाते हैं (कवित्त) भावनि सो छानी क्षमा छोरली समानी भ्रमतापि नहि मानी परमानन्द की दानी हैं। ठानी महिमानी मन मानी प्रिय प्राणिन की ज्ञानिन प्रमाणी प्रति नीति की निशानी हैं। सकै को बखानी वानी युगल अनन्य जू

कविताकी
प्रशंसा

की रामरस सानी चारु चोजन की खानी हैं । सारदा चुपानी सुधा माधुरी छिपानी परवानी शरमानी सबै मानी महरानी हैं ॥ १ ॥ सीताराम नाम सुधासिंधु में समाने रहे माया मान भाने गहेबान मोद जन्य हैं । शीलताई साधुताई सरल सनेहताई शुद्ध बुद्धताई पंडिताई के अनन्य हैं । मोह दल गंजन को दीनजनरंजन को भारी भीति भंजन की को संवली शरण्य हैं । रसिक अनन्यन में संत अग्रगण्यन में धन्यन में धन्य गण्य युगल अनन्य हैं ॥ २ ॥ रोम रोम सीयराम नाम लै अराम लहैं लोचन विराम गौर स्याम सोन अनन्य हैं । योगजप संजम समाधि नेम ज्ञान ध्यान पूजन बिधान में सुजान अग्र गण्य हैं ॥ सुखद महान दया शील को निधान सबै प्रेमिन के प्राण वे प्रमाण मोद जन्य हैं । घोर भव धारता को तारक उदार रागरङ्ग वेशुमार छाके युगल अनन्य हैं ॥ ३ ॥ पंडित महान महा ज्ञान प्रेम को निधान ज्ञानमान दयामान बुद्धिमान लेखे मैं । भगति भंडार भले भावनि को पारावार दीनन अधार सुउदार अबरेखे मैंँ । रागवंत रूपवंत सरल स्वभाववंत शीलवंत सत्यवंत संत बहु पेखे मैं । परम अनन्य राम धरम धुरीन धन्य युगल अनन्य सो न अन्य सुने देखे मैं ॥४॥ काहे को कलेश देत देह कों वेहेत मूढ़ याग तप त्याग नेम ब्रतहि विहा-

પ્રશંસા

वरे। तीरथ पयान बे ठेकान को भुलान फिरे दान के विधान हूँ न जान कों जुडावरे। योगजप संजम समाधि में उपाधि महा मानि मत मेरो सब साधन बहाउ रे। श्रीयुगल अनन्य जू की शरण सिधारि चारु वेगि वे शुमार भव धार पार पाउरे ॥५॥ कठिन कराल कलिकाल मे बेहाल जीव हेरि ह्वै दयाल मोह जाल मेटि डारी है। सीताराम नाम रूप धाम गुन गायभलोभाय सरसाय सुख छाय दियो भारी है। त्याग औ विराग अनुराग राग रङ्ग लाग सुगुन सुभाग की अदाग उजियारी है। रसिक अनन्य जग जाहिरन ऐसो अन्य युगल अनन्य धन्य महिमा तिहारी है ॥६॥ दूतन बुलाय कै रिसाय धर्मराज कह्यो गयो गफिलाय काहे पातकी न लावते। कीजे कहा नाथ उहां युगल अनन्य सबै जीवन शरण्य पुन्य मारग चलावते। राम नाम रूप धाम लीला गुन आठो याम खलक तमाम यही काम में लगावते। खोरि खोरि ग्राम ग्राम धाम धाम राम राम कौन हूं कलाम विना राम नही पावते ॥७॥ शेष बहुवदन गणेश गज बदन महेश पंच बदन न वेश योग जन्य हैं। अजमुख चारि चतुरानन प्रपंच करि सनक सुचारि ध्यान धारि अग्र गन्य हैं। अपर महान भक्ति ज्ञान के निधान तेऊनाफ वे समान जे जहान महा मन्य हैं। सगुन सुजान

सवे भांतिन सुधन्य सुखी युगल अनन्य जू से युगल अनन्य हैं ॥८॥ आनन अनेक एक एक प्राण धारिण के एक एक आनन में जीभ कोटि सरसाय। एक २ जीभनपै कोटि रूप धारण कै आनन हजारन कै बैठे सारदा शुभाय। सुनिये कृपानिधान युगल अनन्य भान कोटिन जुगान करैं गान आन विसराय । रावरी रसज्ञताई विज्ञता विवेकताई बिद्या बुद्धि शीलताई शुद्धता न गाय जाय ॥९॥ दोहा अष्टक युगल अनन्य को परम सुमंगल रूप। पढ़ै सुनै तेहि चित चढ़ै युगल अनंद अनूप ॥१॥ इत्यादि आगे और लिखे जायंगे एक समय के विषे श्रीस्वामी जी अकेले सरजू तटमें अनुराग पूर्वक नामोच्चारण करिरहे थे और अश्रुपात पुलकावली गदगद कण्ठ रोमांचादि सात्विक भाव हो रहा था श्रीसरजूजी के तरफ से अनायास एक प्रकाशमान मूर्ति दृष्टि पड़ी और उस दिव्य मंगल विग्रह से श्रीमहाराज जू के तरफ यह आवाज आई के क्या चाहते हो उस समय आपके मुखारबिन्द से यह बानी निस्सरन हुई अरिल छंद। हौं मतिमलिन हमेश आप शुचि शुद्ध हैं। पराधीन हौं सुप्त सुप्रभुपर बुद्ध हैं। हौंहर सायत बंध्यो आप नित मुक्त हैं। हरिहाँ हौं अलपज्ञ अयुक्त आपगुन युक्त हैं ॥१॥ हौं कृतहन नृप नीच आप कृतविज्ञ हो । हौं अधमाधम समल

चमत्कार

आकाशवाणी

आप शिरयज्ञहीं। हौं प्रभु पद सद विमुख स्वामि शिरताजहौ। हरि हाँ सत संबंध विचारि शरण महराज हौं ॥२॥ दीजे दया निधान नाम गुन प्रीति कौं। कीजे करुणा कोश सरल विपरीत कौं। हे प्रभु मोहि अपनाव भाव लखि होय की। हरि हां युगल अनन्य अजान तऊ सिय पीय की ॥३॥ अति अनूप आनंद रसीले नयन से। दीजै दृष्टि मिलायनैन सरपैन से। विधिहरीश ऐश्वर्य्यन सपनेहूं पेखि हौं। हरि हाँ उर उज्वल विचदरस सुअम्बक देखिहौं। श्रीसीतावर वदन मनोहर दृगन से। सजिहौं सरस सनेह नेह निधि मृगन सें। सुखमा सुसरस सरोज मीन बहु वारिये। हरि हाँ एकटक दृष्टि विलोकि नैन नहि टारिये ॥५॥ इस बचन के कहते हुये ऐसा जोश आप को भया के अकथनीय है उसी काल में फिरि शब्द हुवा के धैर्य्य करना उचित है जो चाहोगे सोई होगा इस बचनामृत के श्रवण से श्रीस्वामीजी कों गाम्भीर्य गुणावलंबन करना पड़ा और उस माधुरीमूर्ति को और प्रीति कों आपने ऐसा छिपाया के यह मालूम होता था के कुछ भयाही नहीं यह चमत्कार सामान्य पुरुष का काम नहीं है के ऐसे प्रकाश प्रभाव को प्रगट न करै पुनः वही पूर्ववत् रहस्य रीति से वर्तमान होते रहे और सत उपदेश और प्रियाप्रीतमकी लीला रहस्य

यथा योग्याधिकार सतपुरुषों कौं किया करते और विषयी जीवन को शुभ मार्ग में लगावते जब श्रीअयोध्याजी के लोग आपके अतिप्रबलप्रभाव से समागम से उपराम न होते तब तो आपने सदाचार विचार के श्रीअयोध्याजी से पश्चिम द्वादश कोश पर श्रीसरजू-तट में घृताची कुंड जो श्रीअयोध्या माहात्म्य में प्रगट महत्व है वहां आप जाय रहे और चतुर्दश मास मौन ब्रतका नेम किया सीताराम नाम अखंड उच्चारण पांचवा अक्षर मुखसे नहीं बोलते और सात घर उत्तम सत्पात्र ब्राह्मण के यहां का जव की रोटी अलोनी और श्रीसरजूजल एक ब्राह्मण का बालक श्रीसीताराम नाम उच्चारण करते हुए ले जाता आप उस को एक बेर अति प्रसन्नता के साथ पाय लेते और कोई पदार्थ अंगीकार न करते ।यद्यपि तरह तरह के व्यंजन प्रेमी लोग ले जाते उन प्रेमियों के मनोरंजनार्थ आप रखते पीछे जो कोई उसका अधिकारी होता उस को आप दे देते और उसी समय का यह दोहा था दो दो रोटी मोटी ललित पाय गाय सियराम। युगल अनन्य खटका तजी सहजै मनविश्राम ॥१॥ और ऐसे लगन के साथ श्रीसीताराम नाम पुकारते के जब अर्द्धरात्रि के उपरान्त अनुराग में आते तब कोशों तक

ઘૃતાચીકુંડ
ગમન ઔર
મૌનવ્રત

[illegible]

आवाज जाती और लोग सुनि के आर्द्र चित्त हो जाते और जो अनुरागी पुरुष होते वह तो परमानन्द समुद्र में निमग्न होते और जो आप अनुराग में आय उस समय में गान करते ऐसे ऐसे पद गाते ॥"पद"॥ मोंसे करले हो प्यार पियारे यौवन मतवारे। तोरे हेत बन बन डोलों योगिनि होय साँझ सवारे। काहे निठुरता धारी कोमल चितहो राजदुलारे। सुनि शील स्वभाव सजीलो मन लगि नाहि विसारे। युगल अनन्य न त्यागो अनुरागी हों चरण अधारे ॥१॥ निरमोहिया से लागी लगनियारे। जागत जतन जुगुत करि दूनी ऐसी विरह अगिनियारे। काहे को सिखदेत वृथा अब डसि गई नेह नगिनियारे॥ श्रीयुगल अनन्य अली आतुर चित चातकि भईयोगिनियारे ॥२॥ इत्यादिक अनेक अनुराग के सरसपदोंको आप गान करते परन्तु जब से मौनव्रत धारण किया था तब से श्रीसीतारामनामहीं को स्वरालाप करके उच्चस्वरसे गानकराकरते और अखंड नामोच्चारण करते उन्ही दिनो में रुस्तमशाह राजा जिसका राज्य बादशाह ने जप्त कर लिया था वह दरशनसिंह चकलेदार की नौकरी करता था फौजदार होके पीलखाना ग्राम में तइनात रहा वह रुस्तम श्रीस्वामीजी महाराज जी के चरणो में दर्शनार्थ जाया करता और पूजा उपहार द्रव्य जो

रुस्तमशाह

राखता तब तो आप लिख देते के जिस कों इस की जरूरत होवे उसको देदेना और आप कुछ भी नहीं अंगीकार करते तब वह रुस्तमशाह प्रार्थना करने लगा के हे दीनदयाल जो मेरा पदार्थ आप नहीं स्वीकार करते तो मुझी को कुछ कृपा करि के दीजिये श्रीमहाराज जी ने आज्ञा किया के क्या कहते हो कहो तव तो उसने चरणो में गिरिके कहा के किंकर की रक्षा करिये यह कहि के गिर पड़ा और रोने लगा श्रीस्वामी जी महाराज उस राजा रोस्तमशाह को बिह्वल देख के करुणार्द्रचित्तहोकर बोलते भए मंद मुसक्यान कर के कहा के उठो राजा रोस्तमसिंह खडे हो जावो इसी बचन की देरी थी थोरे ही दिन के बाद बादशाही लिखा आया के रोस्तमशाह बहादुर को समस्त दियरा का राज्य मिल गया और खिलत हुई यद्यपि ऐसी वार्ता लिखते अति लज्जा मालूम होती है क्योंकि राज्य दे देना अथवा पुत्र देना अथवा और लौकिक ऐश्वर्य्य मुख से कहनेसेहो जाना यह सामान्य योगी में भी हो शक्ती है और येस्वामीजी महाराज वह योगीश्वर हैं के जिनके दृष्टि परने से या उपदेश श्रवन से यद्वा विशेष समागम होने से मनुष्यों की वह सुख लाभ होता है कि जिसके प्रमाण में यह आप्त वाक्य

श्लोक है, ॥ 'श्लोक' ॥ यत्स्वादात् बिरसाभवंतिसकला त्रैलोक्य राज्यादयः अर्थात् जिस किसी बडभागी को श्रीसीतारामानुराग परंब्रह्मानंद की छीट हूं परि गई होगी वह इस लोक और परलोक के सुख को तुच्छ से भी तुच्छ जानैगा और ये स्वामी जी महाराज तो अति हीं करुणा समुद्र थे यद्यपि आपने अपने लिये कोई लौकिकी पदार्थ न चाहा और न अपने सेवकों के लिये इरादा किया तो भी अनंत मनोरथ लोगों के सिद्धि होते ही रहे महत्पुरुषों के स्वभाव कल्प वृक्ष वत् होते हैं एक वेर श्रीस्वामीजी महाराज उसी घृताची कुंड श्री सरजू तट मे तषूत के ऊपर विराजे हुये थे और बहुत से लोग चौतरफ बैठे थे और शांत चित्त सब कोई श्रीस्वामी जी का दर्शन करि रहे हैं कदाचित् किसी प्रकार का प्रश्न कोई ज्ञान भक्ति वैराग्य का हो रहा था उसी काल में एक पंडित राम जीवन नाम आये साष्टांग प्रणाम करि के बैठ गए श्रीस्वामीजी महाराज से प्रार्थना किया के हे दीनदयाल विद्या धनमान आदिक सब पदार्थ परमेश्वर ने हम को दिया है परंतु अपुत्र रूप दूषन करि के मैं दूषित हूं आप कृपा करिके पुत्र हम को दीजिये इतना कहिके चरणों में लोट गए तब तो श्रीस्वामी जी ने उठाया और

चमत्कार

आज्ञा किया के पंडित जी शोक मत करो परमेश्वर से अविनासी पदार्थ पावने की वांच्छा रखनी चाहिए पुत्र तुमारे अवश्यमेव होगा दसवें मास में पंडित राम जीवन के पुत्र भया ॥ और बड़े आनंद समेत उत्साह किया और अपने मनोरथ को सिद्ध किया श्रीस्वामी जी दीन का दुःख देख के अति दयार्द्र चित हो जाते और अपनी कृपालुता स्वभाव से दुःखों का दुख दूर कर देते एक बेर एक वृद्ध संत आए और रसायन बनाना प्रगट किया श्रीस्वामी जी ने कहा यह जाल छोड़ देवो उसने कहा के संसार में धन बडी चीज है दुनिया का काम विना संपत्ति के कोई सिद्ध नहीं होता श्रीस्वामी जी ने कहा के संसारी संपति विपति का मूल है इस्से कोई सुखी नहीं होता तब उस रसायनी ने कहा के हमने बड़े परिश्रम से यह किमिआं सीखी है और धन सब को प्यारा होता है ऐसा कोई हमने नहीं देखा के रुपिया पैसा प्रिय न राखता हो तब तो श्रीस्वामीजी ने आज्ञा किया के जिसको श्रीसीताराम जी प्रिय नहीं होते उस को लौकिक पदार्थ भले मालूम होते हैं प्रमाण गोस्वामी जी का बचन है चौ० रमा विलाश राम अनुरागी तजतबमन इव जन बड भागी १ अंत में श्री महाराज जी उस वेष धारी रसा-

यनी पर अनुग्रह करके आज्ञा किया श्री सरजू जी स्नान करि आइये जब साधु नहाने को गया तब क्या आश्चर्य देखता भया के श्रीसरजू के पुलिन मे कोशो तक चांदी का रेत पड़ा हुवा है और श्रीसरजू के भीतर से एक प्रकाश मय स्त्री रूप देखा तिन के पीछे सोलह सखी दिव्य भूषण बसन पहिने और हाथों में पूजन का सामान लिए और कुछु मधुर स्वर से गाती हुई उसी रजतमय रेत के तरफ़ चली जाती हैं फिरि देखता भया के श्री सरजू जी में स्वर्ण के पुष्प बहे जाते हैं इत्यादिक और भी कई रचना देख के आश्चर्य होके श्री महाराज जी के पास फिरि आया और साष्टांग प्रणाम किया और त्राहि त्राहि कहा श्रीस्वामी जी महाराज हंस करके पूछते भये के कहिये रसायनी जी स्नान करि आये तब तो उसने प्रार्थना करके कहा के हे महाराज मैने अद्भुत चरित्र देखा है इसका भेद आप स्पष्ट करि कहिये तब श्रीमहाराज जी ने आज्ञा किया के तुमारा मन प्रथमसा है या कुछु बीच बाच है तब उस साधु ने कहा के जब से श्रीसरजू जी का प्रकाश का दर्शन हुआ है तब से सोना चांदी की चाह नही कदाचित् सब सृष्टि का ऐश्वर्य्य प्राप्त होवे तो भी उसको देखने का जी नहीं करता जब से वह पुलिन श्री सरजू जी का

मैंने देखा है सो हे महाराज वह क्या चमत्कार है सो मुझ से बर्नन करिये और अपने चरण के शरण कीजिये तब श्री स्वामी जी ने कहा तुम बड़ भागी हो और श्री सीताराम जी महाराज के अनुग्रहीत हो जो तुम ने देखा है वह श्रीसत्या जी का प्रभाव है ऐसे ऐसे चमत्कार श्री अयोध्या जी में तथा श्री सरजू तट में अनेक प्रकार के अद्भुत रचना देख पड़ते हैं परन्तु जिस जन पर संतगुरु सुदृष्टि से देखि देवें, अब तुमारा प्रयोजन सिद्ध हो गया अब जो मैं तुम से कहता हूं उसको याद रखना और स्वच्छंद हो के श्री जानकी बल्लभ जू का गुणगावते रहना और लौकिक बासना पर धूर डार देना इतना बचन कहि के श्री स्वामी जी महाराज ने आज्ञा किया ॥ अरिल छंद ॥ छोड़ कीमिया आसफास दुख रूप का। जोड़ रसायन रसिक राम रस भूप का। निर्बिकार निर्लेप तबीयत कीजिये। हरिहां पर प्रभु प्रेम पियूख निरंतर पीजिये ॥१॥ चिंतामनि सुर धेनु अमर तरु कहा है। मानुष बपुष समान परम फल तहां हैं। ऐसो अनुपम काय कलिल कलि कीच में। डारि देत बिन बोध मगन भव बीच में ॥२॥ बिना विमल सतसंग अंग सब भंग है। श्रुति पुरान बख्यान संग से रंग है। हानि हृदय तजबीज कुसंगति बीच में। हरि हां

सपने हूं मत बैठ कुसंग नगीच में ॥ ३ ॥ नित्यानित्य बिचार निरंतर क्रिया कर । देहादिक बुद्धि वृथा बूझि निति जिया कर। सुद्ध स्वरूप सुखैंन सुधा रस पिया कर। हरिहां अमित अंड ऐश्वर्य्य न सपनेहु छिया कर ॥४॥ सुधा सरोवर नाम मांझमन मगन हों। क्या विष वारिधि बीच बूड़ता नगन हों । संतत संत सुबोध बिचारो बैन से। हरिहां पावो परम प्रधान पुरुष निज ऐनसे ॥५॥ रसना मन मति पवन नाम रँग रंगिये। भिन्न न होवैं हृदय पाव पल अंगिये। चाहे दोनो लोक शोक मय रहेना। हरिहां पै पविपाहन नरन नेह दिशिवहेना ॥६॥ जिसकी जिसकी चाह मिलेगा सो सही। सांची कहिये प्रीति वसल में शक नहीं। दुनिया दीन दरोग समर बिसराइये। हरिहां हिरस हरामी निदरि सुमनसि सिराइये ॥७॥ कारण सूक्ष्म सुथूल समष्टी व्यष्टि है। ईश्वर सुबरन गर्भ विराट सुसृष्टि है। प्राज्ञ सुतेजस विश्व व्यष्टि अभिमानि है। हरिहां विद्याविद्या भेद युगल मधि मानि है ॥८॥ राम सच्चिदानंद शुद्ध रस एक है। जीव ईश पुनि प्रकृति नियामकठेक है। जाकी सत्या पाय तीन हूं सत्य है। हरिहां ऐसा अनुपम राम ब्रह्म निज नित्य हैं ॥९॥ इस परम रसायन सरसशांत दायक बचनामृत को सुन के नीरस संसारी धन रूप संशय दायक अ-

भिलाखा त्याग के श्री सीताराम रूप नाम गुण को पान करता हुआ श्री स्वामी जी से बिदा होके स्वच्छंद बिचरने लगे ऐसे करुणा सागर श्री महाराज जी का चौदह महीने का नेम मौन ब्रत का रहा सो आप का पूर्ण होता भया बहुत ब्राह्मण और बैष्णवन को भोजन हुवा प्रथम श्री महाराज जी सैंतालिस मंत्र जो बेद प्रणीत श्रीराम तापिनीका है उसको पढ़ते भये और उस घृताची कुंड श्री सरयू तट से इरादा श्री अयोध्या जी को किये श्री महाराज जी के चलते समय सब प्रेमी लोग विह्वल होते भये श्री स्वामीजी महाराज सब को समझा बुझा के नौका पर सवार हो के कुछ लोगों के साथ श्री अवध पहुंचे श्रीअयोध्याबासी लोग आगे हो ल्याये श्री महाराज परमहंस जी श्रीसुधा-मुखी सरजू दास जी अवधूत सिया राम शरण जी अयोध्या दास जी श्री पंडित उमा पति आदि जितने सत पुरुष महात्मा अनुरागी लोग उस काल में विद्यमान थे सब लोग गाते बजाते साथ हो के श्री प्रमोदबन में निवास होता भया सत समाज होने लगी बाद कई दिन के सब सत पुरुषौं ने श्री स्वामी जी से प्रार्थना किया के हे रसिक-राज महाराज कुछ दिन यहां आप के न रहने के हेतु से हम

અયોધ્યાગમન

સ્નેહી

પ્રમોદવન

सबो की मति कुंठित हो गई है इसलिये आप कुछ सरस ग्रंथ श्रवण कराइये और कृतार्थ कीजिये जब बहुत आग्रह सब प्रेमियों ने किया तब श्री महाराज जी भगवद्गुण दर्पण जो श्रीमधुराचार्य्य जी महाराज का ग्रंथ जिस में श्री रघुनंदन जी महाराज के अनंत दिव्य मंगल कल्याण गुणनिरूपण उस कथा के श्रवण से ऐसा अनुरागी बड़भागी रसिक महात्मा लोगों को लाभ हुआ के कहां तक कहा जाय इष्ट गुणालवन से शोक दूर होता भया श्री महाराज श्रीसाक्षात परं ब्रह्मावतार इनके मुखारबिंद से श्रवण करने से स्वाभाविक ही परमानंद की प्राप्ति होती है शोक उसी का मिटता है जिसको आत्म दर्शन होता है "तरति शोक मात्मवित्" इस श्रुति से जाना जाता है के निसोच होना ही जीवन मुक्त कहावता है सो श्रीस्वामी जी महाराज की दया से शतसः मनुष्य परमानंद की प्राप्त होते भए वही श्री भगवत गुण दर्पण ग्रंथ संस्कृत क्लिष्ट में है सो लोकोपकारार्थ श्री महाराज करुणा सागर जू ने वार्तिक भाषा में निर्माण करते भए जिसके पाठ मात्र से सब सुख होता है जो बड़े बड़े श्रम साधन से भी नहीं लाभ होता ऐसे श्रीस्वामी जी महाराज दया समुद्र जू ने जब देखा के बड़ी भीर होने लगी

और अति सगामग से आप को कुछ विक्षेप ज्ञात होने लगा तब तो एक गुफा श्री लक्ष्मण कोट के नीचे श्री सरजूजी के करार में प्राचीन बनी हुई थी आप उस में निवास किया जो कोई सब से प्रथम दे जाता सोई आप अंगीकार कर लिया करते अकेले आप रहा करते जो कोई सतसंगाभिलाखी जाता उसका परितोष आप करा दिया करते और कई तरह का प्रसंग हुआ करता एक प्रेमी अगरवाले गोरखी मल नाम बड़े बिचारमान विशेष श्री महाराज जी के पास जाया करते और योग बाशिष्ठ का सतसंग किया करते एक दिन कोई संसारी विक्षेप से नहीं जाय सके श्रीस्वामी जी को प्रार्थना पत्र भेजा उस में कुछ असावधनता लिखी उस पत्र के उत्तर में श्री महाराज जी ने उनके मनोल्लासार्थ यह कुंडलिया लिखी भेजी थी॥ स्वस्ति श्रीगुर ज्ञान गुन रमन गोरखी लाल। भजी भाव बल्लभ भवन भव प्रबाह हर हाल। भव प्रवाह हर हाल भाल सुखसाल सम्हारो। हौं तजिहौं तन तीन अयस तप प्रबल विचारो॥ मिलिहैं रस निधि राम श्याम सुंदर पर हरि ही। श्री युगल अनन्य प्रमोद अमल वाचत स्वस्ति श्री॥ ऐसहीं बहुत काल तक सतसंग होता भया जब लाला गोरखी लाल जी का अंत

काल का समा आया तब सब लोग उनको देखने को गए श्रीस्वामी जी महाराज भी गोरखी लाल के पास बिराजे रहे जब सब लोग चले गए तब श्री स्वामी जी ने पूछा के कहिये लाला गोरखी मल जी अब तुमारा चित्त क्या कहता है तब तो उन्हों ने कहा लोगो से के मुझको उठा के बैठा देवो, जब लोगो ने बैठा दिया तब श्री महाराज जी के तरफ मुतवज्जह हो के कहा के स्वामी जी इसी दिन के वास्ते आप सबो का सतसंग मैने किया है अब मुझ को कुछ भी खटका नहीं है और इस संसार को मैंने खूब देख लिया इस में जो बिचार किया तो फकत आप का नामहीं सारांश पाया और इस समय आप मेरे आखो के सामने बैठे है इस समय का आनंद मैं कहि नहीं सक्तता इतना कहि के आप लेट गए जब श्री स्वामी जी चले आये थोड़े देर के बाद नामोच्चारण करते हुये लाला गोरखी का अयोध्या बास हो गया ऐसे श्री महाराज जी दीन जन वत्सल लोगों पर अहेतु की कृपा करते हुए श्री सरजू तट गुफा में निवास करते भए एक समय में होली का दिन आया और सब महात्मा लोग श्रीस्वामी जी महाराज से प्रार्थना किया के हे रसिक राज शिरोमणि श्री महाराज आज होली का दिन है

इस वीच पुलिन जो श्री सरजू जी में चमक रहा है इसी रेत में आज होली की बहार होवे श्री महाराज जी ने कहा के वहुत अच्छा है नौका आगई सब लोग सवार हो के मध्य पुलिन में श्रीस्वामी जी महाराज शतसः लोगों के साथ कई तवायफ नाचनेवाले बहुत से गवैये और भावुक संत लोग अनुरागी साज समाज समेत सब सामान एकट्ठा हो के श्री सरजू जी के बीच रेता में श्री लक्ष्मण कोट के पश्चिम गुफा के सामने श्री सरजू पुलिन में परम उत्सव में समाज जुटती भयी इस समाज को सुनि के लोग परम हर्षित हो के चौतर्फ से लोग किस्तीयों पर चढ़ चढ़ के उस पुलिन में आये जहां श्रीस्वामी परम महोत्सव स्वरूप रसिकाधिराज बिराजे थे फाल्गुनान्त का दिन जब चन्द्रमा उदय होने से जब प्रकाश हो गया तब नाचना गाना प्रारंभ होता भया ऐसा सामान बँधा के लोगो की सुधि बुधि भूलि जाती भई। और अबीर कुंकुमा गुलाल केशर करिके श्री सरजू जी रंगारंग हो जाती भई जब पहर रात के प्रथम अर्द्ध रात्रि ढलते हुवे सोरठांत मे देश का आलाप हुआ उस काल में सरजू जी के तरफ से उच्च आवाज़ एक बारगी डंफ की सुनाई दी तब तो पुलिन का समाज कुछ रुकसा गया उस वक्त श्री

सरजू के तरफ से ऐसी सुगंध आई के लोगों को आश्चर्य्यानंद भया और मृदग और बीन और सारंगी मुरचंग के शब्द साफ साफ सुनाई देने लगे और घुंघुरु की झमझमाहट इस तरह की भई के सब लोग चकित होके चारो तरफ देखने लगे परंतु कोई किसी से कहि नहीं सक्ता उस काल में एक महात्मा सियाअली करि के जिनका जानकीदास करवावाले नाम करि के प्रसिद्ध था और गान विद्या और सितार बजाने में बड़े कुशल थे जिनके सियाराम सागर आदि ग्रंथ कई एक बनाए प्रसिद्ध है बड़े बैराग्यमान एक गुदड़ी और मट्टी का कमंडल राखते और श्रीसरजू रज सब शरीर में धारन करते और कभी कभी सीपी अर्थात् सिया पिया कहि करके पुकारते और कभी जै श्री सरजू पुलिन विहारिनी बिहारी कहि करके पुकारते और अपना नाम सिया राम शमसेर बहादुर कहा करते शृंगार उपासना में बडे बीर थे वह श्री सिया अली जी यह श्री सरजू जी का अमृत चरित्र देख के श्री स्वामी जी महाराज जू के निकट जाय के पूछते भए के हे रसिक सिरताज यह अद्‌भुत रचना न तो कभी हम ने देखी और न कभी सुनी यह क्या चमत्कार आनंद सुगंध और प्रकाश और गाने बजाने

का शब्द कहाँ से आवता है तब तो श्री महाराज मंद मुसकान करिके कहने लगे के पूछ लेवो अपने श्री सरजू पुलिन विहारिनी बिहारी जू से जिसके रंग में तुम रंगीन हुवा चाहते हौ इतना कहि के हंस पड़े और निज समाज में फिर सावधान हो के धमारि और कहरवा की नाच होना शुरू हुवा इसी प्रकार से भोर हो गया बड़े प्रातःकाल श्री महाराज यह होली नवीन गानेकी आज्ञा किया।

ये होली गोली सी मारि गई गोइयाँ। चल न सकत बिरहा रसमाती कासों करों ठठोली बिन सैंयाँ॥ सूखत पान की ढोली पिया बिन पहिरों पीत न चोली सरमैंयाँ। युगल अनन्य श्रीकुंज विहारणि अब रहिवे अनबोली अपनैयाँ॥१॥ खेमटा कस्मीर॥ ए होली भोली जानि दगा दे गई। मैं नहीं जानी जानी दिलवर नेह सरस भें गई॥ जीवन धन मन मोहन महरम तिनकों संग निज ले गई। युगल अनन्य श्रीकुंज-विहारिनि नाजुक नाज जगे गई॥२॥ समाज के लोगों कों वड़ा हर्ष हुवा सब लोग यही कहते थे के ऐसा आनंद दायक उत्साह हम लोग कभी नहीं देखा इति, एक बेर श्रीस्वामी जी महाराज स्नान करिके वाहेर खड़े थे के एक फँकीर मुसलमान श्री लक्ष्मण घाट

के तरफ से आया और श्रीस्वामी जी महाराज से अर्ज किया के हे दीनार्तहर गरीबनेवाज मेरा घोड़ा नहीं मिलता ऐसी मेहरबानी की नजर कीजै के हाथ लग जावै श्रीमहाराज जी उनको कृपा दृष्टि से देख के कहा के शाह जी ॥दो०॥ घोड़ा अति चालाक है रुकत नहीं दिन रात ॥ रोक सको तो रोकिये लात घात उतपात ॥१॥ कठिन बेग मन अश्व को सीक पाव वर पुस्त ॥ फेकत छेकत रहत नित होत न कबहू सुस्त ॥२॥ तब तो वह दुरबेस की आख खुलि गई और श्रीमहाराज जी से प्रार्थना किया के और कुछ हुकुम कीजे मेरा मन दुनिया के घोड़े से पलटि गया श्रीस्वामी जी ने कहा खूब हुवा सुनिये ॥ चूं मुरादे नफस अज़ तो दूर शुद ॥ मूनमूजि कि रेव हक़ पुर नूर शुद ॥१॥ यह शैर उस वक्त श्रीस्वामी जी पढ़ा था यह मुझे निश्चै नहीं है के खुद निर्मित था या और कहीं का था सो जानिये और वह यमन संत ऐसा आनंद होके जाता भया के घोड़े के बदले में सलतन्त हाथ लग गई क्यों न हो ॥कवित्त॥ संतन की रीति चली आई है हमेश ते। आवै जौन पास राव रंक छोटे बड़ो कोई ताको उपदेशें नाम विमल विशेषते॥ छावै छबि छावनी वहावै हाय ताप ज्वर जीवन बतावैं रूप रमन रसेस ते। लावै निज ठौर भौर विषमते

काढ़िताहि देवै दिव्य ज्ञान दुति अधिक दिनेशते ॥
युगल अनन्य साचो सीष सिखलावैं स्वच्छ संतन की
रीति चली आई है हमेशते ॥१॥ ऐसे रसवंत संत श्याम
प्रान प्रेय हैं। जिनकी जहान यश सहस उपाधि व्याधि
आधि सम वैभव विशेषही से हेय है॥ दारुण दवार तर
बार विषभार प्यार सदृश बिहार हाय हाय सारमें य
है। सदा अधिकार सार सुख में समाने नित तिलहू न
जम्यो जिय बासना को नेय है। श्री युगल अनन्य
शिरताज महाराज मेरे ऐसे रसवंत संत श्याम प्रान
प्रेय हैं ॥ २ ॥ संत गुन गाइये रिझाइये भली प्रकार
जानकी रमनजू को बेगही उमंग से। अंत नहीं जाइये
बिकाइये बेदाम बिन सदनसमीप सरसाइये उमंग से ॥
अमल अनंत अनघंत जश ध्येय मन मनन कराइये न
कारज अनंग से। श्रीयुगल अनन्य सरसाइये पुनीत पद
सद रस एक टेक धारिये सुसंग से ॥३॥ संतन की रीति पर
बाह बाह बाह है। कहा मैं बखानो मति मंद द्वंद रंग रंग्यो
संतन को यशस्वच्छ शेष को अथाह है ॥ एक एक पल
मध्य जौन करतूति करैं तौन कोटि कल्प लो गाये ना
निबाह है। नैन बैन ऐन रैन श्याम गौर रूप रस रमन
कहन नहीं दूसरी निगाह है॥ श्रीयुगल अनन्य और
कह्यो नहीं जात मोपैं संतन की रीति पर बाह बाह बाह है

॥४॥ एक बेर श्री परम हंस जी महाराज श्रीकनक भवन निवासी श्रीशीलमणि जी श्रीस्वामी जी को एक पत्र लिखा इस तरह का ॥ स्वस्ति श्री परम प्रबीण रंगीन नवीन सनेही सजन साहेब अजायब नायब दम्पति संपति सलोने अनूपम सर्वेश बेश सुदेश देश श्री अवध सरजू सुजीवन धन सर्बदा परम अनन्य श्रीसहस सतयुक्त श्रीयुगल अनन्य शरण प्राण प्रिय उभय लोक संजीवन जीवन जू कों लिखि श्रीसीतारामानन्य शील मणि कृत अनन्त जोहार अंकमाल छवि जाल रसाल दम्पति संपति ख्याल हाल लाल बाल सर्बकाल रस रसिक न के धन को जयति जयति जय इत्यादि पत्र लिखि कै और एक ग्रंथ अनुरागात्मक लिखि भेजा और दर्शनाभिलाष किये उनके प्रत्युतर में श्रीस्वामीजी यह पत्र लिखते भये ॥ स्वस्ति श्री प्रताप दाप आपको सदा भरे । न शंक बंक तंक रंक राव को हिए करे ॥ अपंक प्रेम अंक की कला क लालसी धरे ॥ अटंक डंक ठोकि काम कंक कालिमा हरै ॥ सदा दमंक दामिनी दिमाग रागही भरै ॥ सखे सुजान शील शान शौक सामुहेसाजे ॥ उछाह शाह वाहते विशेष वीरलौ बजे । सुदेह गेह खेहसी विवेक से सभी तजे । बिहार जान जानिके यशीर सेसही भजे ॥ हमेश हाय हीय को मिले बिना

कहा तजे ॥ सुदेश वेश पीय को खिले विना कहा सजे ॥ वशिष्ठ जासुतीरतान गान की गमे गजे ॥ विशेष ओट चोटते विचार हू घजे धजे ॥ हुलाश हास रास को कहूं झलक पलक परे ॥ अदोश जोश होश कोश रोश हू तके तरे ॥ गुलाब आप माहताब ताव खाक सी करे ॥ अनन्य मौज मानसी प्रकाश बे वहा भरे ॥ ५ ॥ बरवा ॥ शीलमनी नव नागर आगर रूप ॥ इन्द्रनील मणि मोहित अजब अनूप ॥ विरवा बिरह वहरवा नित कुंभिलात ॥ शीलमनी सुख सींचत कुछु हरिआत ॥१॥ और पत्र वृत्तान्तोत्तर लिखि करिके श्रीस्वामीजी महाराज उस ग्रंथ की प्रसंसा लिखा जो पोथी श्री परम हंस जी ने बना के श्री महाराज जी के पास भेंजी थी ॥पद॥ जय श्रीशीलमनी बखानी ॥ अमल अगाध अपार सुधा सागर सोहाग सतसानी ॥ विशद विचित्र बिलाश रास रस सुन्दर सदन शोभाय सोहानी ॥ अनुभव अकथ अदाग वाग छवि छटा घटा सजनी सरसानी ॥ गंग मधुर मुक्ता मराल मन मधुर मोहब्बत मिलत लखानी ॥ बीज विचित्र बिहार हार हिय सिय पिय परम प्रभा झमकानी ॥ नेहिन जीवन मूरि मनहुं मृदु परमानंद परेश प्रमानी ॥ घोल धाम दूति का चतुर तर कि धौ रसेस राज़ पटरानी ॥ प्रीति

प्रतीति प्रकाश कौमुदी किधौ मोद मैमान कहानी ॥ बिधि हरि हर नायका सान गुन रूप अनूप विशेष समानी ॥ तिलसमात सरसात स्वयं संवर अजूब दरसानी ॥ किधौं कला कामिनी काम मद पूरन किधौं उमंग बितानी ॥ सुखमा रमा परत्व पूरिका किधौं लाल लय लाड लोभानी ॥ युगलानन्य अली मोहन हित मनो भाव भावना छुरानी ॥ ३ ॥ बरवा ॥ शीलमनी मन मोहन बचन बिहार ॥ सुने सुनावै कौन कठिन संसार १ शीलमनी सम गुन निधि सरस वकील ॥ नहि जानी केहि कारन लागी ढील ॥ २ ॥ भूलत नहीं भुलाये मीठी बैन । हाय कहौ केहि सन मै निज रस ऐन ॥ एक बेर एक साधु का बेष बनाय के बड़ा आडंबर बनाये हुये पांच सात भेष धारी संग में ऐसी मुद्रा धारण करी थी कुछ सिद्धाई भी प्रगटाते वहुत लोंगो को जाल में लाय के अपने में ज्ञान योग भक्ति का यादकाद कराया करते और कहते के इस काल ऐसा ज्ञाता कहां कोई है के मेरे प्रश्न का उत्तर देगा यह बात एक संत सिया बल्लभ शरण नामक श्री महाराज जी से कहा श्रीस्वामी जी ने आज्ञा किया के कल्ह उसी घाट स्नान करैंगे हम भी जहां वह हैं आखिर श्री महाराज जी और पूर्वोक्त साधु भी संग

में पहुंचे उस आडंबरी योगीं के पास, कई तरह का प्रश्न उसने श्रीस्वामी जी से पूछा और आप सहज में उत्तर देते गए उसने जाना के यह प्रवल प्रतापी महा पुरुष हैं तब उसने कहा अच्छा जब हम जांने के आप सव भेद जानते हैं जब पँच मुद्रा कों स्पष्ट करिके निरूपण करैं श्री महाराज जू ने कहा के यह बात तो हमारे यहां के लड़के भी कह सकते हैं प्रथम सरल रीतिसे तुम सुनो जब तुम कुछ योग का भेद समझने लगोगे तब विशेष से कहा जायगा ॥ प्रथम खेचरी रस सुगुन भरी महामुद मूल ॥ मुद्रा मुद मन मोहनी लखु रसनाथि अनुकूल ॥१॥ द्वितीय सुमुद्रा चाचरी नासा अग्र निहारु ॥ अगनित दुति प्रगटित करनि सतत धारना धारु ॥२॥ तीजी जानु अगोचरी मुद्रा चक्षु मझार॥ दृष्टि उर्द्ध करि ताकिये तजि माया व्यवहार ॥३॥ चौथी मुद्रा भूचरी भ्रू अंतर अभ्यास ॥ नाना विधि कल कांति तिमि प्रगटत किये अयास ॥४॥ पंचम मुद्रा उन्मुनी शीश ब्रह्म सु स्थान॥ सावधन दृग मूदि के कीजै शून्य सुध्यान ॥५॥ शून्य देश गंभीर अति तापर प्रभु पर धाम॥ ध्यान धरना कीजिये तजि माया कृत बाम ॥६॥ सत्य शिरोमनि नाम जपु सुस्थिर चित करि नित्त ॥ बैन नैन रोके रहो तब पावो परवित्त ॥७॥ ऐसे ऐसे बचन श्री-

स्वामी जी महाराज जू के मुखारबिंद से श्रवण करते हुए उस वेषधारी योगी का हृदय प्रकाश हो जाता भया और स्वामी जी के चरणों में प्रणाम करते भये के हे सच्चे गुरुदेव ऐसे सरल रीति की क्रिया कोई बताइये जिस में मेरा ताप दूर हो जावे और मेरा पाखंड छूटि जावै जब अति नम्रीभूत की प्रार्थना श्रीस्वामी जी ने सुना तब तो मंद मुसकान करके आज्ञा किया ॥कवित॥ तीन घर बरन विचित्र बीच एक रस सरस निवास लोक बासना विहाय कै। तीन तरवर न सुमाझही नहान नित्त करत हमेश चित्त मलिन वहाय कै॥ पांच प्रिय वरण हरण अपराध व्याध बाहु मूल धारण विशेष सरसाय कै। युगल अनन्य चारु चार बरनेस ध्यान परम प्रधान उर अफुर रसाय कै ॥१॥ इस कबित्त में स्वामी जी महाराज वह योग निरूपण किये हैं जिस्से शब्द ब्रह्म परंब्रह्म का यथार्थ बोध होता है परंतु जब तक सतगुरु दयाल नहीं होते जब तक जीव की कंगाली नहीं मिटती चाहै जितना पोथी पत्रा ज्ञान ध्यान अपने मन से सीख लेवै परमात्मानंद तभी लाभ होगा जब श्री गुरुदेव जू की कृपा दृष्टि होगी अतएव निस्कपट होके श्री गुरु पद भजिये प्रमाण ॥पद॥ भजो श्रीसतगुरु मन मेरे। पावो प्रेम छेम अनुपम मिटि

जात मोह तेरे ॥ नवल नख कांति हृदय धारो बार बार
उमगाय गाय भव निधि पर पारो । विरति रति अनायास
आवै । जन्म जन्म दुष दाह चाह चित दूरि सुचित छावै ॥
धन्य जन जे गुरु पद नेही । श्रीयुगल अनन्य शरण सबही
बिधि सफल जन्म देही ॥१॥ सतगुरु पद असद हरन
सुमिरन करु प्यारे । याते पर अपर बात घात पांच सात
रात ताते तज त्रिगुन नात गुरु गुन निधि धारे ॥ लोक
लाज खाज दरद दायक दव दगाबाज जानि बूझि भाज
गुरु सनेह सुचि सवारे । नाम नेह नवल अमल देह गेह
पाचहीन पीन मति बिचित्र शरण सतगुरु अवधारे ॥
युग अनन्य करुणा शत बरुणालय अधिक मोल तोल
पोल प्रीति रीति लखु सवारे ॥२॥ सतगुरु पद कंज मंजु
मंगल मुद मूल फूल फलित ललित बेलि कलित केलि
भरित भावो रहस रस रसाल लाल लोयन वल्लभ बिशाल
बचन रचन काल ब्याल जाल जग जलावो ॥ सहज स्वच्छ
सार प्यार हार उर उदार धार धवल अमल सरित
सदृश ध्यान धारि ध्यावो परम प्रेम छेम हेम झलक
पलक बीच नित्य नेम निर्बिबाद भजत सुछबि छटा
छावो ॥ योग शोगहीन पीन दीनता सुछीन झीन लीन
बासनादि भान भावना नशावै । अगुन सगुन रुप भूप
राम रसिक राज साज सहित सुष समाज ब्याज बिना

दृग देखावै ॥ श्री गुरु महिमा परत्त्व सत्त्व सोध बोध हेतु भवनिधि शुचि सेतु चेत चित्त चल करावै। युग अनन्य आस खास पल पल अभिलाष प्यास सतगुरु पद पास सतत बास भास भावै ॥ ३ ॥ ऐसे आरत हरन दीन बंधु श्री महाराज उस योगाभिलाषी कामनोर्थ कर दिया निश्चय बात यही है जब तक पूरे सतगुरु नहीं मिलते तब तक इस जीव का पाखंड नहीं छूटता गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई एक बेर श्री करुणा सागर जू महाराज बिचरते हुये मनी कूट के तरफ रात्रि हो गई और आप की प्यास लगी कमंडल तो आपके पास था परन्तु रस्सी न रही तृषा अधिक मालूम भई एक बारगी एक आवाज सीताराम एसे पीछे से आई आप उस मनोहर शब्द कों सुनि के पीछे दृष्टि किये तब तो एक ब्राह्मण शरीर श्वेत बस्त्र पहिने स्वच्छ मनोहर मूर्ति देख पड़े हँस के आप से कहा के जल पीजियेगा आपने आज्ञा किये के अवश्य पियेंगे वह ब्रह्म मूर्ति आपको निर्मल नीर कूप से भरके पिला देते भये फिर जो आपने निगाह किया तब तो नहीं देखा के कौन थे तृष्णा बुझावने वाले दूसरे कोई नही सेवाय तृप्तात्मा जगदात्मा के ऐसे श्री महाराज जी परम करुणा सागर दीन दयाल जी एक बेर श्रीलक्ष्मण जी के स्थान के

चमत्कार

निकट एक मंदिर में स्थित रहे उन दिनों में श्रीस्वामी जी की अवस्था तीसबर्ष को रही सदाचार सदुपदेश में तत्पर रहे यद्यपि श्रीस्वामी माधुकरी भिक्षा बिना और भोजन नहीं पाया बस्त्र गुदड़ी और चद्दर के भरशक न पहिना परंतु प्रारब्ध संस्कारोज्वल की प्राबल्यता से तरह तरह के भोजन और बस्त्र अनायासही प्राप्त होया करते उस समय में चतुर्भुजी स्थान के महंथ श्रीरामरत्न दासजी जो स्वभाव के और सरीर के अतिही सुन्दर थे श्रीस्वामी जी में उन श्री महंथ जी की अतिही गुरु निष्ठा थी उन स्थान में जहां श्रीमहाराज जी निवास किये थे सब सामान एकट्ठा किये थे उत्तम बिछावना और कपड़ा कुरुसी आदि सब धरे थे और उन दिनों में श्रीस्वामी जी श्रीशालग्राम तथा धनुर्बाणादि आयुध तथा शिवजी का प्रेम बिधान पूर्बक पूजन करते बल्कि पूजन का बिधान पार्षदपात्र मृतिकाही का होता परंतु ऐसे अनुराग से परिचर्य्या आप करते और अश्रुपात पुलकावली के साथ आप के मुखारबिंद से ऐसे ऐसे बचन अवस होके निकसते आप यह कहते के हे महाराज हमारे हाथ ऐसे कहाँ हैं जो हम आपके अर्चन करैं ऐसे कहकर बिव्हल हो जाते और पाद्य अर्घ आचमन आसन आप ऐसे बिधि

३० वर्ष

पूर्बक करते के किसी तरह का ब्यत्यय (बिपर्य्यय) नहीं होने पाता उस बिधी में आपका ऐसी रागानुगा भक्ति होती के देखने वाले आश्चर्य्य और दङ्ग होजाते और जो कोई जिस प्रकार का सतसङ्ग ज्ञान भक्ति बैराग्य की पूछता उसको ऐसी रीति से आप निरूपण करते के तुर्त उसके हृदय में सदुपदेश का अंकुर उदय हो आता इसी प्रकार श्रीस्वामी जी उस श्रीसरजू तट कोठे पर कई महीना निवास किया एक दिन श्रीस्वामी जी श्रावण महीना में तीसरे पहर के समय में एक रागिनी मलार की आलाप कर रहे थे सो यह है॥ पद॥ बरषा ऋतु बीर बिहारी निज सेन दशहु दिशि डारी॥ तरल दामिनी दमक कठिन तर वार उदार उघारी॥ घन गरजन मिसि मनहु बिरहि जन तरजत दया बिसारी॥ सुभग सुरेश शरासन कर गहि बूंद बान झरवारी॥ जीति जहान जुलुम ग्रीषम ऋतु भीषम सम रण कारी। सुखद मयूर चतुर चातक गण दुखद चकोर कुमारी। श्रीयुगल अनन्य शरण विरहिनिपर कठिन दशा जियजारी॥१॥ इस मलार को सुनि के एक स्त्री गंगा पुत्रानी आप पर मोहित होगई बिक्षिप्त बावली सी हो करके खाना पीना त्याग कर दिया और नारी ऐसी सुंदरी थी के उस काल में कदाचित कोई शहर भर में होय तो आश्चर्य्य नहीं है

तो भी निश्चय है कि एक दो भी नहीं ठहरैगी उस बामा ने अपना हाल कहलाय भेजा और कहा के मैं आपके बिना मरती हूं श्रीस्वामी जी उसके पति को बुलाके उपदेश किया और कहा के उसको समझादेवो ऐसा निंद्याचरण करना और उपवास करना उचित नहीं है स्त्रियौं को स्वपति में प्रेम और परमेश्वराराधन सर्वोपर है वह सरयू पुत्र उस औरत पर मोहाशक्त था श्रीस्वामी जी से प्रार्थना किया के हे करुणा सागर जू वह मेरा कहना नहीं मानती आप के चरणो में मैं उसे भेज देता हूं आपही उस को समझा दीजिये इतना कहके उस स्त्री को श्रीमहाराज जी के पास लाया श्रीस्वामी जी उस को बहुत प्रकार से उपदेश किया तब तो वह नारी कहने लगी के जो आप कहते हैं सब सत्य प्रमाण है परन्तु मैं क्या करूं जब मैं आपको नहीं देखती हूं तब मुझे खाना पीना कुछ भी नहीं सोहाता इस में मेरा अख्तयार क्या है तबतो श्रीमहाराज जी ने आज्ञा किया के जाय के सावधान समेत अपने घर में बैठ रहो और हम को अपने निकट ही जाना करो आखिर वह घर में आई और रहने लगी परन्तु महाविरहिनी अवस्था उसकी होती भई बाद थोरेही दिन के श्रीस्वामी जी महाराज चित्रकूट कों पयान किया बहुत से प्रेमी

चित्रकूट
यात्रा

लाला गोरखीमल आदिकों ने चाहा के बहुत लोग संग में जावैं और मार्ग में द्रव्यादि व्यवहार समेत चलना होवै श्रीमहाराज ऐसी बात कभी अंगीकार नहीं किया एक संत श्रीबिमलाशरण नाम साथ हुए परन्तु उस समय साथ में शतसः मनुष्य होलेते भये और श्रीस्वामी जी की उन दिनो में यह रीति थी के जो कोई सामने आता उस को श्रीसीताराम नाम उच्चारण का नेम कराते लाख नाम से लेकरके दश हजार तक नामोच्चारन का नेम अवश्य करना परता और यह कवित आप पढ़ते ॥ कवित्त ॥ सहस पचीस लौं जपत जौंन जीह नाम राम अभिराम ताहि मंगल अवेशे है। जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है सो तो देव देविन ते पूजित बिशेषे है। जौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लच्छ सो तो परतच्छ स्वच्छ रहित अदेशे हैं॥ श्रीयुगल अनन्य ताकी महिमां अपार नित्य जाके सुखसागर की रटन हमेशे हैं ॥१॥ दोहा ॥ पारस पा रस नाम भजु तजु जग बिषय बराट ॥ श्रीयुगल अनन्य अयास बिन उघरे कठिन कपाट ॥ १ ॥ प्रथम दिन सूर्य्य कुंड के निकट एक बाग में आसन भया अंदाज दोसै मूर्ति के लोग साथ में थे और हजारों माला के गट्ठर साथ में बंधे हुए सबको बाटा जाता और नेम के बिना कोई भी खाली नहीं

रहने पावता जो लोग दिहात के दर्शनार्थ आवते सब को माला मिलता और नेम कराया जाता उसी काल में चकलेदार दर्शनसिंह जो शाह लखनौ के बड़े रुतबा वाले राजा मानसिंह के बाप का बसाया हुआ दर्शन नगर में रामदीन सेठ नाम फौजदार ऐश्वर्य्य मान अभिमान युक्त श्रीमहाराज जी का दर्शन करने आया श्री स्वामी जी ने कहा सेठ तुम केतना नाम जपने का नेम करोगे उसने कहा के श्रीमहाराज मुझे फुरसत नहीं रहती आपने बहुत समझाया के जैसे सब काम करते हौ तैसेही दो चार घड़ी परमेश्वर नाम भी अवश्य लेना चाहिए ॥ उसने कहा के जो कुछ बनता है सो लेताही हूं नेम करना हम से नहीं होसकेगा जब साफ उसने कहा के न होसकेगा तब तो श्रीस्वामी करुणा सागर जू ने कहा के जरूर तुम को नेम करना परेगा कदाचित यह नहीं मानोगे तव तुम को श्रीचित्रकूट आना पड़ेगा और श्रीरामनाम जपना परेगा यह कहकर के आप और लोगों के तरफ उपदेश करने लगे और वह रामदीन फौजदार अपने डेरे पर चला गया और श्रीमहाराज साहेब सूर्यकुंड पर बिराजते भये उसी दीन अर्द्ध रात्रि के समय में रामदीन के शिर में पीड़ा उठी बढ़ते बढ़ते ऐसा दर्द भया के उसको निश्चय

हुआ के उसी अवज्ञा का फल है जो महापुरुषों का कहना नहीं माना कुछ शेष रात्रि रहते हुए सब लोग उसको पालकी पर लादिके श्रीस्वामी जी के चरणों में लाये श्रीमहाराज जी उसका दुःख देखके आप भी खेदित होगए ऐसे श्रीमहाराज जू करुणासागर किसी का दुःख न देख सकते जब उसको क्लेशित देखा एक साधु से कहा के इनके ऊपर श्रीतुलसी जी की मृतिका छिड़िकिदेवो उसी तरह किया गया क्षण भर में चैतन्य भया और जो बहुत से पदार्थ लाया था वह श्रीमहाराज को अर्पण करने लगा तब तो श्रीमहाराज जू ने आज्ञा किया के तुम को खूब मालूम है के मैं किसी से कुछ लेता नहीं हूं और तुम को तथा सबको प्रसन्न समेत श्रीसीताराम जी महाराज का चिंतन करना चाहते हैं उसने प्रार्थना किया के इस सेवककों नामोपदेश करि के और दीन जानके मेरी दीनता दूर करिये यह बात सुनते हुए श्रीस्वामी जी मंदस्मित होके कहा के संसारी कार्य्य तुम को अधिक रहता है इसलिये तुम पचीस हजार नाम का नेम करो उसने हर्षित होके स्वीकार किया और कृत कृत्य होता भया इसी तरह चौदह रोज आप सूर्य्यकुंड पर रहके हजारों मनुष्यों को श्रीनाम महाराज का नेम कराया और

आनन्द बरसाया ॥ छन्द ॥ ऐसे करुणा सागर प्रभुको जो न भजै चितलाई, सो करनी करतूत भलाई जाय रसातल भाई। परंब्रह्म की मूरति श्रीगुरु उपनिषदन में गाई, तिनकी कृपा कटाक्ष होतहीं रघुबर दरशन पाई १ श्रीसूर्य्यकुण्ड से जब श्रीमहाराज साहेब श्रीचित्रकूट चले उस समय में बहुत लोग संग में रहे और श्री स्वामी जू के चलते बेर जो बिकलता सबों को भई है वह अकथनीय है कई दिन के बाद श्रीचित्रकूट पहुंचे और यह तीव्र नेम धारण करते भए के भिक्षान्न छोड़ि के किसी का अन्न अंगीकार नहीं करना, अष्टधातु तथा अष्टभोग को त्याग करना, अष्टभोग नाम-सुगंधं बनितां बस्त्रं गीतं ताम्बूलभोजनं। मैथुनं वाहनं शय्यां भोगाष्टकमुदाहृतम् ॥१॥ यद्यपि श्रीमहाराज साहेब परम बिज्ञानावस्था में प्राप्त मुक्त स्वरूपही थे तथापि शिष्टाचार देखाने वास्ते परम मर्य्यादा सागरजू ऐसे उत्तमाचरण करते भए जैसे परम तपस्वी महर्षी का आचरण होता है महापुरुष लोकोपकारार्थ ऐसहीं बर्ताव बर्तते हैं जिस में सबका भला होवै। तदुक्तं भगवद्गीतायाम् यद्यदाचरते श्रेष्ठस्तत्तद्देवेतरोजनः सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥१॥ जिन पुरुषों को देख के बिषयों से चित्त उपराम होवै और श्रीमहाप्रभु

સૂર્યકુંડસે
ચિત્રકૂટ

श्रीसीताराम जी में अनुराग होवै वही उत्तमोतम पुरुष कहाते हैं एतदर्थ श्रीस्वामी जी महाराज और आपके साथ में एक कमलाशरण जी वैष्णव जिनको हम लिख चुके हैं ऐसे श्रीमहाराज जी श्रीचित्रकूट परम पावन रमणीय भूमि में बिगतद्वंद होके बिचरते भए और श्रीसीताराम जू के बिहार भूमि श्रीकामदगिरि जी श्री स्फटिकशिलाजी श्रीरामशय्या आदि जो भूमि स्थल है तिन में बिचरते और अनुरागावेश होके ऐसे बिरह से नामोच्चारण करते के पर्बत द्रवीभूत होजाते और जब कभी ऐश्वर्य्यावेश होता तव ऐसे २ पदगान करते ॥ पद ॥

जय श्रीचित्रकूट मन भावन। कामद कलानिधान काल कलि हरन प्रपञ्च नसावन॥ सप्तावरन रसिक भाविक प्रिय सिय प्रीतम छबि छावन। मृदुल अमल अवनी रस धाय धायन पर तर सुख प्रगटावन॥ दरशत हरत महा अघ परसत माया मूल बहावन। छोड़ि जगत जंजाल ख्याल भ्रम बसु गिरिवर पावन। दुर्ल्लभ देह सफल कीजे अब समो न पुनि इह आवन। युगल अनन्य शरणरसना से जपु परनाम सोहावन॥१॥ जब सब जगह बिचरते बिचरते श्री जानकी कुण्ड पर अपती हीं रमणीय श्रीसीताराम पदां कित भूमि देखिके श्रीस्वामी जी हर्षित होते भए और तहां पर अखण्ड निवास की रुचि होती भई आप के अभिलाष

का बचन मुखारबिन्द से निस्सरन हुआ॥ छन्दकुंडलिया॥ बसिके सुदृढ़ सनेह सजि सिय कल कुंड समीप। नाम निरन्तर एक रस जपिहौं तजि सब दीप॥ जपिहौं तजि सब दीप दीप जब लगि न प्रकाशै। महा अबिद्या मूल सूल भवमूलन नाशै॥ बारह बर्ष प्रयन्त नेम गहि अचल सुलसि के॥ युगल अनन्य प्रमोद काम गिरिवर तट बसिके ॥१॥ जौ लौ रग रग से नहीं सुधुनि नाम निज सार। निकशत परम प्रकाश मय मधुर मोहब्बत प्यार॥ मधुर मोब्बत प्यार हार यह हनुमत शङ्कर। सन्त रसिक जन जान प्रान अभयङ्कर॥ रटिहौं मन मति लीन सहित श्रीनामहि तौ लौ॥ श्रीयुगल अनन्य असङ्ग मौज मानस नहि जौ लौं॥२॥ नवधा दशधा परा रस रूपा भक्ति बिचित्र॥ बिविध भाव अनुराग सुख नामाधीन सुमित्र॥ नामाधीन सुमित्र चित्र समचित चढ़ि देषो॥ मूढ़ क्षिप्र बिक्षिप्र बृत्ति तीनो दुख लेषो॥ सन्त सरस सिरताज कही इह रस गुन बहुधा॥ श्रीयुगल अनन्य अपार रंग जो राचे नौधा॥ ३ ॥ मन मारे बिन छिन लही ललित लाल लयलाल। श्रीयुगल अनन्य बिचार करु परिहरु बालक ख्याल। परिहरि बालक ख्याल जाल युग शाल निहारी। काल कलङ्क कषाय कोट करि गर्द कतारी॥ बेपरवाह अचार दाह बिन शौक संवारै। जेहि तेहि भांति उपाय लाय मूरख मन

मारि ॥ ४ ॥ पहिचानै मन मृतक की यहि बिधि भली
प्रकार। ग्रहन त्यागते जब अफुर बिश्व विलाश बिसार॥
विश्वबिलाश अनल जल समता साजे। रहे न षटका लेश
देश अनुभव गहि गाजे॥ समता सहज सुभाव विषमता
बीज बिहाने। युगल अनन्य अनूप नाम बल कल पहिचाने
॥५॥ गद गद बानी पुलक तन नैन नीर मनपीर। नाम
रटत ऐसी दशा होत मिलत रघुबीर। होत मिलत रघु-
बीर धीर बर बीर बिहारी। सरे सकल विधि काम मिटे
बाधा भवभारी। पहुचे अकस्मात् जाय जन भवन
बिनाहद। श्रीयुगल अनन्य बिहार लहै बुधि बानी गद
गद ॥ ६ ॥ तजिहौं मान महत्व मन सम्भव नैन निहारि
भजिहौं नाम अनाम गुनि ज्ञेय ध्येय समधारि ॥ ज्ञेय ध्येय
समधारि बारि सर्बसता ऊपर ॥ अति आवेश सजाय
सदा रहिहौं निज भूपर। प्रीतम सुख अनुकूल आभरन
नख सिख सजिहौं ॥ श्रीयुगल अनन्य उपाधि व्याधि
विस्तरतम तजिहौं ॥७॥ श्रीमहाराज स्वामी जी लोकोपकारार्थ अनेक प्रकार शास्त्रीय साधन आराधन करते हुए आनन्द पूर्बक श्रीचित्रकूट में आनन्द करते कभी श्रीजनकनन्दनी जू के तथा श्रीरघुनन्दन जू के चरण चिन्ह प्रगट दर्शन करि के ऐसे आनन्द होते के तैसे किसी पदार्थ लौकिक से नहीं खुशी प्राप्त होती कुछ काल बीता था

के राजा रीवां विश्वनाथ सिंह ने सुना के श्रीचित्रकूट में एक महापुरुष आए हैं अद्वितीय महात्मा हैं उनका दर्शन अवश्य करना चाहिये इह बिचार के अपना राज सामान समेत हजारों पण्डित सत्समाज के साथ आय के प्रमोदबन जिस्में अनेक रचना समेत गुफा आदि बने हैं राजा निवास करते भए उन दिनों में श्रीमहाराज गुप्त बिचरते रहे और राजसी तामसी पुरुषों से परहेज राखते रहे यद्यपि राजा बहुत खोज कराया परन्तु श्री स्वामीजी श्री अनसूया के बनों में छिपि गए पताही नहीं लगा तब तो राजा विश्वनाथ सिंह चित्रकूट निवासियों से पूछने लगे के स्वामीजी जो अयोध्या जी से आये हैं सो किस तरह मिलैंगे सब लोगों ने कहा के कभी कभी श्रीजानकीकुण्ड से लेके स्फटिकशिला तक अपने मौज से बिराजते हैं राजा इस बात के खोज में लगे रहे एक दिन किसी से सुना के स्वामीजी स्फटिकशिला पर बैठे कुछु रागिनी आलाप कर रहे हैं तुर्त राजा विश्वनाथ सिंह मुहम्मद खां गवैये से कहा जो महम्मद नव सै ९०० रुपिया महीना के नौकर बीन बजाने वाले काबुल के तरफ के रहे उनसे राजा हुक्म किया के अभी जावो और बीन बाजा बजावो और मेरा बनाया रासमण्डल का पद सुनावो मैं भी आता हूं ॥

महम्मद वैसाही किया जब श्रीमहाराज साहेब स्वामी जी को देखा तबतो चकित से हो रहे श्रीस्वामीजी के निकट दंडवत सलाम करिके खड़े होगये और उन के साथ कई लोग साज लिये हुए थे जब श्रीमहाराज जी बीन बाजा देखा और महम्मद खां श्रीमहाराज जी के सामने हाथ बांधे खड़ा है तबतो श्रीस्वामी जान गये के यह कोई बिशेष गुणी है श्रीस्वामीजी ने महम्मद को बैठने की आज्ञा की वह बैठ गया फिर खड़ा होके अर्ज किया के हुक्म होवै तो मैं बीन बजाके कुछ गाना सुनाऊं श्रीस्वामीजी ने आज्ञा किया के अच्छा वह महम्मदखां बीन बजा के यह पद गाया ॥ पद ॥ रासमण्डल सखिन मण्डल राजै॥ बाजै बहु बिविधि बाज मिलहिँ अलि अवाजैं। नचत हंसत बदन लसत छटनि फंद मदन फंसत तकत चंद मान नसत अद्भुत छबि छाजै। अकनि बकनि तकनि छकनि झझकनि उझकनि सझकनि थकनि रुकनि लुकनि चकनि अपसर लखि लाजै॥ सुखनि लहनि छुरनि गहनि हलनि करनि कछुक कहनि हंसनि रसनि फंसनि विश्वनाथ लसनि साजै ॥१॥ थरकि थरकि थेई थेई करि आली, आली संगीत गतिन लेहिं देहिं ताली॥ भाव सो उठावैं कर हँसि अति छबि छावै, धरि सुरन तिय सिषावैं बरग

तिन बर बिसाली॥ सुनत गुनत फबित गान अबित द्रबित तरु पखान चकित रहे मृगलोभान देहभान नाहीं॥ करि बिहार सखिन साथ चले अमित सरजु पाथ विश्वनाथ नाथ दिये सिय गर गर बाहीं ॥ २ ॥ यहां तो इन पदों के आनन्द में श्रीमहाराज साहेब आनन्दित हुए और महम्मद खां के तरफ कृपा दृष्टि करि के देखा और प्रसन्न होरहे थे और वहां हलकारा अति शीघ्र जायके राजा विश्वनाथ सिंह को खबर किया के चलिये श्रीस्वामी जी महाराज गाने में बिरमें हुए हैं राजा तुर्त उठ दौड़े थोरे से लोग संग में लिये हुए श्रीमहाराज जी के पास पहुंच गए श्रीस्वामीजी महाराज को देखत मात्र राजा विश्वनाथ सिंह कृत्यकृत्य होगए॥ साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए उठते न थे श्रीस्वामीजी ने कहा उठिये आइये बैठो बैठ गए श्रीस्वामीजी कुशल पूछा राजा ऐसे हर्ष से गदगद होगए कुछु कहते नहीं बने श्रीस्वामीजी ने कहा के राजा तुम्हारे रासमण्डल के पद सुनिके हम खुश भये तदनन्तर राजा ने श्रीस्वामीजी की प्रसन्नानुकूल देखके और एकान्त पाय के कुछु प्रश्न पूछा वह प्रश्न सखी १ और आली २ और मञ्जरी ३ और सहचरी ४ तथा सखी इनका स्वरूप पूछा था श्रीस्वामीजी ने संक्षेप से सबों का उत्तर कहा परन्तु यह आज्ञा किया के यह

रहस्य है ऐसा प्रश्न एकान्त में होना चाहिये जब राजा चुप रहे तबतो श्रीमहाराजजी ने कहा के प्रिया प्रीतम ऐकान्तिक बिहार में अत्यन्त संकोचाभाव से बर्ताव करना सखी १ श्रीबिहारिणी बिहारी जू के बिलासानन्द में संकोच होना मञ्जरी २ श्रीलली लालजू के परसपर केलि में धृष्टता करना आली ३ श्रीयुगल सरकार में बेरोक टोक आना जाना सम्भाषण करना सहचरी ४ श्री जानकी रघुनन्दन जू के रास बिलास में डर डर के कैंकर्य्य करना किंकरी का स्वरूप है ५ संक्षेप से कह करके पुनः आज्ञा किया के बिस्तार समेत फिरि तुम से कहूंगा ॥ राजा विश्वनाथ सिंह श्रीस्वामी जू से बिदा होके अपने डेरे पर गए श्रीमहाराज जी अपनी मौज से बिचरने लगे दूसरे दिन राजा फिरि श्रीस्वामी जी के चरणों में हाजिर हुए और अर्ज्ज किया हे दीन दयाल आप की अनुग्रह से जो जो ग्रंथ निर्माण किया है उन सबों में हम को विशेष श्रम भी नहीं परे और संदेह भी नहीं है परंतु श्रीकबीर जू का जो बीजक है उसमें मैं बहुत श्रम भी किया हों और बहुत लोगों से विचार भी किया है तथापि उनका टीका जो मैंने निर्माण किया उन पदो का यथार्थ अभिप्राय मैं नहीं जानता हूं और बिना आप के और कोई

नहीं जान सक्ता है ऐसी कृपा करिये जिस में वह तिलक श्रेष्ठों के उपादेय होजावै तब तो श्रीस्वामीजी हंसि करिके कहा अच्छा कहते ही अर्थात् जो जो बिषय में राजा को संदेह और बिपर्य्यय रहा सो सब श्रीस्वामी जी महाराज के अनुग्रह से दूर हो जाता भया॥ ऐसे दीनदयाल प्रभू को कौन बिसारै। जिनकी कृपा कटाक्ष पाय भव भय निस्तारै॥ श्रीगुरुदेव कृपाल कृपा कीजै मोहिं पाहीं। दोजै सन्त सुभाव प्रभो दुर्मति मिटि जाहीं॥ सब प्रकार बलहीन छीन दुखिया हौं स्वामी। करो छोह निज जानि अहो प्रभु अन्तर्जामी॥ एक दिन श्री महाराज स्वामी श्रीजानकी कुण्ड पर बिराजे रहे एक कुमारी अति सुकुमारी कटोरा में दूध लिये हुए आईं श्रीमहाराज से कहा पीलीजै श्रीस्वामी जीने आंखी नहीं खोला फिरि उस बालिका ने कहा के दुग्ध पीजिये जब श्रीमहाराज जी ने देखा तो एक प्रकाश मालूम भया आपने दुग्ध पीलिया तब तो एक आनन्द का नशा चढ़ गया और बड़ी देर तक निमग्न रहे जब सावधान भए तब आपके मुखारविन्द से यह अष्टक निस्सरण भया॥ मंजु छंद॥ ईश ईश नायक पूजित पद पंकज प्रणय परेरी। सकल शिरोमणि शक्ति शान मद मान मलन छबि तेरी॥ शील स्वभाव सरस शोभित

शत सुधा स्वाद मुख फेरी। युगल अनन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी १ श्रीमिथिलेश विशेष विभव बरदेश सनेह सुतेरी। कौतूहल कल केलि कला करि दम्पति मोद दयेरी। परिकर निकर संग नाना रंग बाल उमंग कियेरी। श्रीयुगलअनन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी २ सुषमा रूप निहारि नैन भरि सासु सात शत घेरी उरझी ललित लाड़ लालित सजि बारि प्राण घनढेरी सुन्दर सुवन सनेह सनी सिय जू पर प्रीति घनेरी। युगल अनन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ३ कनक लता केतकी कंज कलिका हारी हिय हेरी। काम कामिनी कला दमक दामिनि भामिनि चय चेरी। रसरूपा प्रेमा प्रधान प्रिय प्रीति पुनीति नयेरी। श्रीयुगलअनन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ४ चितवन चारु चतुर चूड़ामणि चित बित हरत न देरी। प्रीतम प्राण सुभग संपुट बिच रतन बिचित्र बसेरी॥ पलक प्रेम पूरण प्रकाश कर कामद कौशलसेरी। श्रीयुगलअनन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ५ धवल धार सरजू सजनी सम सुजस सहस श्रुति टेरी। नवल नाम अभिराम अमल अद्भुत अनूप गुन बेरी॥ सम्बल सरस पुष्ट पावन पर धाम छोट छबि तेरी। श्रीयुगलअनन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ६ करुणा कृपा कटाक्ष भई तब काह करै छल छेरी॥

अनायास परत्यक्ष परावर नृपति प्रकाश सनेरी ॥ हृदय
ग्रंथि भेदत छेदन छल छंद बासना जेरी । श्रीयुगल अनन्य
शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनो मेरी ७ अनु दिनउर
अनुराग अलौकिक प्रीय चरण निबहेरी । योग यज्ञ व्रत
नेम ज्ञान गुन नेह न दीश बहेरी ॥ भुक्ति मुक्ति अभि-
लाष लाख करि रसिकन सुमति गहेरी । श्रीयुगल अनन्य
शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ८ अष्टक अमल
सीय स्वामिनि नित चित दै जौन पढ़ैरी । पावै अवश
सनेह प्रीय पद प्रीति प्रतीति बढ़ैरी ॥ दुरमति दाह दरिद्र
दोष दिल दुरित दाग भटभेरी । श्रीयुगल अनन्य शरण
बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ९ श्रीजानकी अष्टकं
समाप्तम् ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार श्रीस्वामिवर कामद गिरि
वर बास ॥ करत निरंतर नेम सो प्रीतम प्रीति प्रकाश १
चित्रकूट बासी सकल आवत पावत छेम ॥ सबके मन
भावत प्रभू गावत गुन गन नेम २ पंडित संत महंथ सब
आवत स्वामि समीप ॥ जो जेहि भावत लहत सोइ हृदय
प्रकाश प्रदीप ३ एक बेर श्रीस्वामीजी महाराज श्री
सीताकुंड पर बिराजे रहे एक संत महात्मा हरिदास
नाम प्रसिद्ध भक्त माली करिके ख्यात थे श्रीचित्रकूट
जी के जमीदार चौबे जगन्नाथ करिके प्रसिद्ध इन्ही
चौबे के बाग़ में श्रीभक्तमाली जी बिराजते थे एक

दिन अति गरमी का मौसम रहा श्रीभक्तमाली फूल का गजरा अति सुगंधदार श्रीमहाराज जीके कंठ में पहिराने को किया था उस समय श्रीस्वामीजी मौज में रहे आज्ञा किया के श्रीकिशोरी जी के कुंड में छोड़ दीजै यद्यपि भक्तमाली जी ने पुष्प माला को श्रीमंदाकिनी जी में छोड़ि दिया श्रीस्वामीजी के संकोच से तथापि मन में यह रहा के हम जानते के यह नहीं धारण करैंगे तब तौ मैं श्रीअहिल्यामंदिर मे श्री ठाकुर जी को पहिराय देता क्योंकि उसी मंदिर में उक्त संत कथा श्रीरामायण जी की करा करते थे जब शाम के वक्त भक्तमाली अहल्या मंदिर में कथा बांचने गये और श्रीठाकुर जी के तरफ दृष्टि पड़ी तबतौ देखा के वही हार श्रीरघुनंदन जू के कंठ में पड़ा है और सुगंध करिके सब मंदिर सुगंधित है वह आश्चर्य्य होके पुजारी से पूछा के यह माला चौबे के बाग का है कौन लाया है पुजारी ने कहा के पूजा तौ मैंहीं करता हूं परन्तु माला का हाल कुछ मालुम नहीं है श्रीभक्तमाली जी मनै मन में अचंभित होके रह गये जब दूसरे दिन श्री स्वामीजी के दर्शन को भक्तमाली जी गये और वही प्रसंग उठाया तबतो श्रीमहागज जी हंस परे और कहा के भक्तमाली जी इसी हेतु मैंने माला नहीं पहिरा

श्रीयुगल सरकार कुंड स्नान कर रहे थे मैंने कहा के आपही उनको पहिनाय दीजै श्रीभक्तमाली जी कहने लगे हे महाराज मेरा अपराध क्षमा होवै। एक बेर श्री भक्तमाली जी महाराज श्रीस्वामीजी से प्रार्थना किया हे दीन दयाल आज एक महात्मा कहते रहे के अनहद शब्द दश प्रकार का होता है मैंने उन से भेद पूछा तब तो उन्होने कुछ कहा तो सही परन्तु मेरे समझ में यथार्थ नहीं आया तब श्रीस्वामीजी ने कहा के आप श्रीजानकी श्रीरघुनंदन जू के नूपुर के शब्द श्रवण करो यही आनंद दायक अनहद है ॥ दोहा ॥ हत नहि होवे जो कबहु सोई अनाहत जान ॥ प्रीतम प्रिया सु पैजनी परम रम्य अनुमान १ तथा योगियों का भी एक और अनहद शब्द है श्रवणबंदादिक अभ्यास से सुनि परता है उसका प्रकार यह है ॥ कबित्त ॥ चिन चिन सुर प्रथम दूजी बार किल किंकिनी कलित की आवाज मुद देत है ॥ संख सहनाई स्वच्छ नवल निशान धुनि बासुरी बिचित्र चित चोर लेत है ॥ भंवर गुंजार घन सिंधु सुख सारनाद सुनत श्रवण अपरोक्ष बोध हेत है ॥ युगल अनन्य दश भांति अनहद दिव्य बिपुल बिधान मत भेद मत सेतहै १ एक बेर श्रीमहाराज जी आनंद समेत कोटि तीर्थ जो स्थान पर्वत पर है वहां बिराजते रहे श्री

योगचर्चा

काशी के रहने वाले पंडित बैष्णव धीरमदास नाम योग भाष्यादिक अध्ययन किए हुए श्रीचित्रकूट पर्वत पर जहां श्रीस्वामीजी बैठे थे जाय के दंडवत प्रणाम बार्ता होने के अनन्तर योग का चर्चा होता भया चित्त की वृत्ति जो पांच प्रकार की है क्षिप्त विक्षिप्त मूढ़ ३ एकाग्र ४ निरुद्ध ५ इनका प्रसंग होते होते चर्चा बढ़ गई और धीरमदास योगभाष्य के अनुसार निर्विकल्पक समाधि का तथा सबिकल्पक समाधि का संकथन करते २ क्रोध करने लगे श्रीस्वामीजी मंद स्मित होके कहने लगे के हठ करने का कुछ प्रयोजन नहीं है जैसा कहता हूं इसी तरह जान लीजै तबतौ वह बैष्णव कहने लगे के आपकी बातों से कैसे मान लेवैं श्रीमहाराज जी ने कहा के श्रीपतंजलि महर्षि का बचन मानोगे उन्होने कहा के जो वह ऋषि कह देवैं तबतो क्यों नहीं मानैंगे तबतो श्रीमहाराज जू ने आज्ञा किया के देखिये शिर उठाकर जो शिर उठाया उस बैष्णव ने और देखा के एक प्रकाश मय पुरुष यह कहते हैं के "वृत्ति सारूप्यमितरत्र" इस सूत्र का अर्थ यही है ऐसा शब्द सुनतेहीं धीरमदास जी घबराय गये और उन पुरुष का आकार देखतही मात्र कम्प होने लगे श्रीमहाराज के साष्टांग करके कहने लगे के हे कृपानिधान मेरी

मूर्खता बचन पर दृष्टि नहीं करिये मैं आपके स्वरुप से वाक़िफ नहीं क्योंकि सतपुरुषों का बचन है । संत की महिमा बेद न जानै । जेता सुनहिं तेता बखानहि ॥ दो० ॥ संत शरण जोजन परै सोजन उर्धन हार ॥ संत की निंदा नानकहिं बहुरि बहुरि अवतार १ एक बेर श्रीमहाराज जी श्रीकामद गिरि परिक्रमा में बैठे थे चौबे जो वहां का मालिक उसका पुत्र अति दुखी था चौबे ने अनेक यत्न किया बैद्य हकीम डाक्टर सब हार गये जब अति असाध्य मृतक तुल्य हो गया अंत में यह निश्चै हुआ के मर गया तबतो वह चौबे श्रीमहाराज स्वामीजी के निकट आया और रुदन करने लगा श्री स्वामीजी परम दयाल किसी का दुःख नहीं देख सक्ते थे आपने आज्ञा किया के श्रीकामतानाथ जी का रज ले जावो लड़के के ऊपर छिड़क देवो उसी तरह चौबे ने किया वह लड़का तुर्त आराम होगया ॥ दो० ॥ ऐसे दीन दयाल के वंदौ चरण रसाल । जिनके पद बंदन किये होते माला माल १ श्रीगोस्वामी जू जो गुरु पद बंदन कियो है इस सोरठा में । जासु बचन रबि कर निकर रबि सूर्य्य की किरणौ का समूह सर्बान्धकार किरण से नष्ट होता है और जो अनंत किरण जिन स्वामी के बचन में प्रकाशित है वहां किसी प्रकार का अँधेरा

नहीं रह सक्ता किन्तु उलूक चमगूदर अलबत्ता दिन करके प्रकाश में भी अंधे रहते हैं उन्ही मूर्खों के लिये श्रीगोस्वामी जी का बचन है मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलै बिरंचि सम इस कुरोग कर औषध नाहीं अर्थात् इसी सृष्टि में तो चमगुदरी और उलूक होते हैं जिन को दिन बिषे कुछ नहीं सूझ परता सूर्य्य का दोष किस तरह हो सक्ता है अर्थात् नहीं हो सक्ता इसी तरह श्री गुरुदेव स्वामीजी श्रीमहाराज को पाय के अनन्योपासना करिके जो दृढ़ बिश्वास के साथ धारन करता है वह निश्चै श्रीसीताराम जी के स्वरूप को प्राप्त होता है एक संत श्रीमानदास जी मंदाकिनी तट पर रहते भिक्षा मांग के अपना निर्बाह करते रहे और श्रीस्वामीजी का नेम कुछु दिन रहा के आप भी भिक्षाही का अन्न भोजन करा करते थे वह श्रीमानदास जी महाराज जी को अपनी कुटी में निवास कराया और बड़े श्रद्धा प्रेम से प्रसाद पवाया करते थे इसी प्रभाव से जब श्री मान दास जी महाराज का अंत समय आया तब उन के पास बहुत संत एकट्ठा रहे उस समय श्रीमान दास जीने उच्च स्वर से पुकारा के तुम लोग ऊपर दृष्टि करो तब तो लोगों ने ऊपर नजर किया सब लोगों को ज्योति नजर पड़ी और उस ज्योति के अन्दर

जैसा तामजान होता है ऐसा चमत्कार देख पडा और जी उस बाहन को लिये रहे उनके बस्त्र भूषण स्वर्ण से देखने में आये और ऐसा प्रकाशभूत हुआ के सब देखने वालों की आखैं झप गईं और एकाएक जय शब्द होने बाद श्री मानदास जी का शरीर लोगों ने निर्जीव देखिके आश्चर्जित होके अत्यंत मकरणीय कृत्य होता भया इस वृत्तांत को शतसः चित्रकूटबासी जानते हैं॥ महत्पुरुषों के सेवा का प्रभाव कौन नहीं जानते सीतापति सेवक सेवकाई॥ काम धेनु शत सरिस सोहाई। यहि बिधि करत सबन को पावन चित्रकूट प्रभु बसिके। आप सोहावन सदाचार नित करत रहत कटि कसिकै॥ शुभाचरण स्वामी को नित प्रति है सब को हितकारी। ऐसे स्वामी प्रभु दयाल पर हौं नितहीं वलिहारी॥ १॥ श्री जानकी कुंड मन भावन परम सोहावन तीरे। करत रहत अनुराग पाग नित पावन परम गंभीरे। मीम पीन पाठीन पुराने करत केलि शुभ नीरे। तिन्है देखि स्वामी नित हर्षत लावा देतसु ढेरे॥ एक दिन श्रीमहाराज जी श्रीजानकी कुंड पर प्रातःकाल अकेले बिराजे रहे उस समय में एक पंडित अनसूया प्रसाद श्रीकामद गिरि पर रहने वाले आय के कुछ स्तुति कुंड की करने लगे और श्री स्वामी

जी से कहा के आपने सुना है जो कुछ स्तुति किये हैं तब तो आपने आज्ञा किया के मैंने भाषा रचना किया है और जो तुम कहो तो संस्कृत ही में कुछ बन जावै षंडित ने कहा के इस समय में आप श्री कुंड की महिमा रचिये तौ मैं भी लिखि लेता श्री स्वामी जी ने कहा के सुनिये ॥ श्लोक ॥ नमो रम्यरूपाय कुण्डाय तुभ्यं बिहाराय श्रीस्वामिनीकेलिकुंजे ॥ सदा संस्थितायाथ सौख्यैककर्णौं प्रफुल्लायते कुंजमालाय पुष्पम् ॥ १ ॥ मनोहारि सौन्दर्य्यसीमं शरण्यं सदा सज्जनानामभीष्टार्थदात्तृ ॥ विहंगैर्मनोज्ञैः सदा सेव्यमानं समीडे सदा श्रद्धया केलिकुण्डम् २ नमामीषणाधर्षणाशक्ति शूरं जगत्संपुनन्तं नदीशं पुनन्तम् ॥ लसज्जानकी जीवन स्यापिरूपं भजेऽहं प्रियाकुण्डकन्दं सुनीरम् । क्षणेनाशुभावासनाया बिनाशं विभुं वैभवानन्तरूपं वरेण्यम् प्रपन्नार्तिदुःखापहं वोधहेतुं भजे संततं जानकी केलिकुण्डम् ॥ ४ ॥ सकृन्मज्जनाद्यस्य पापातिशक्ता पवित्रा भवन्तीह प्रेम प्रकर्षाः ॥ प्रपन्ना परे धाम्नि दिव्ये निवासं लभन्ते जना शुद्धकामानि कामम् ॥ ५ ॥ वशेत्काशिकावन्तिका-द्वारकासु तथा सर्बतीर्थेषु कोप्येककल्पम् ॥ लभेत्तादृशं नैव प्रीतिप्रचारं यथा जानकी कुण्डकूले निवासात् ॥ ६ ॥ सुयोगैस्तथा धर्मदाना

दियतैः कदाचिल्लभेन्नैव सीताभिरामम् ॥ तदा वासतः शीघ्रमेवातिदूरं जनैः प्राप्यते युग्मरूपामृतत्त्वम ॥७॥ प्रियाचारुपादांकितं भ्राजमानं महद्भाग्यसौलभ्यभूतं नितान्तम् ॥ कृपाकौशलं कामदं कल्पवृक्षं भजे प्रेमतः स्वामिनीकेलिकुण्डम् ॥ ८ ॥ श्रीमत्या जानकीदेव्या कुण्डस्याष्टकमुत्तमम् ॥ युगलानन्यशरणरचितं मोददं परम् ॥९॥ प्रातः काले पठेद्यस्तुस्नात्वा कुण्डे मनोहरे । अवश्यं लभते सीतारामयोः प्रीतिमुत्तमम् ॥ १० इति श्रीयुगलानन्यशरणेन विरचितं श्रीजानकीकुण्डाष्टकं सम्पूर्णम् ॥ इसी प्रकार श्रीस्वामी जी महाराज श्री जानकी कुण्ड पर बिराजमान रहते और श्री सीताराम प्रेमानंद में निमग्न रहते एक समय में श्री महाराज जी बैठे थे के एक परमहंस स्वयं प्रकाश जी निर्मले संत परम सात्विक सज्जन पंजाब देश के रहनेवाले आये उनकी रहस्य देखि के श्रीस्वामी जी महाराज अति प्रसन्न होते भये क्योंकि महात्मावों का बचन है। संत मिलन सम सुख जगनाहीं। श्रीस्वयं प्रकाश जी महाराज की धारणा और वैराग्य ऐसा था जैसे प्राचीन महापुरुषों का होता है शान्त शील सुशीलता तितिक्षा और गांभीर्य्यता और प्रसन्नता जैसा उनमें पाया जाता तैसा लोगों में कम देख पड़ता है

योगाभ्यास में प्रबलता चार पहर तक उनका कपाल आसन में सहज बीत जाता और काल व्यर्थ क्षण भर भी नहीं होने पाता नामोच्चारण में गुण गण चिंतन में ध्यान में रूप स्मरण में इन्ही बातों में काल क्षेप होता यह श्री परमहंस जी महाराज कई वर्ष प्रयंत श्रीस्वामी जी महाराज के साथही विराजमान रहे इन श्रीपरमहंस जी महाराज के ग्रन्थ बनाये हुये बहुत चमत्कार हैं उन्में से कुछ आगे लिखा जायगा यहि बिधि करत बहार बिहारा। चित्रकूट वसि परम उदारा॥ पावन परम सोहावन भावन चित्रकूट सुख राशी। श्रीमहराज विराजत गाजत श्रीमत्कामद बासी॥ देवादास अनन्य सियाबर नित प्रति आय सुनावैं। परम अनन्य जानकी बल्लभ गुन गण नित हि जनावैं॥

स्नेही

एक संत सियाराम शरण बड़े भावुक भावना में तत्पर प्रहर रात्रि रहे से स्नान करिके जंगल में चले जाते और मानसी भावना करा करते जब एक पहर दिन वाकी रहता तब श्री विहारीदास जी की कथा श्रवण करते फिरि एकांत में चले जाते जब प्रहर रात्रि जाती तब एक प्रतिष्ठित स्थान में एक कोठरी थी उसमें कुछ अन्न रक्खा रहता था वहां आय के अपने हाथ से मूंग की दाल और रोटी पाव भर या तीन छटांक

करते जब रोटी दाल तैयार हो जाती तब आप मानसी अर्पण ऐसा करते के रोटी अतिहीं ठंढ़ी हो जाती भोग लगने के बाद उसमें भी जो उस प्रसाद का अधिकारी होता उसको अवश्य कुछ देते पश्चात् आप प्रसाद सेवन करते इतने में अर्द्ध रात्रि हो जाती तब वह सिया रामदास लेट जाते कुछ निद्रा भी आय जाती तब आप ग्लानि के साथ उठ बैठते और प्रभू का चिंतन करते हुए फिरि उठने का समय आय जाता पुनः उसी पूर्व्वोक्त कृत्य में लग जाते इन श्री सियाराम शरण जी का स्नेह श्रीस्वामी जी के चरणों में अत्यन्त रहा एक दिन श्रीमहाराज जी से श्री सियाराम शरण पूछने लगे के हे स्वामिन् भाग्यबान का क्या लक्षण है तो तब तो श्रीस्वामी जी ने इस कवित्त को पढ़ा॥ है बडभागी सोई सुचि संत सियाबर के अनुरागी अदागी। चाह नहीं जिन के मन में कुछ दाह की रीति लखै लख आगी। मांग के खात मधूकरी धाममें नाम में चित्त लगाय विरागी॥ युग्म अनन्य के पूज्य सदा प्रिय प्राण हूं ते जो पगे रसरागी॥ १॥ इस कवित्त को बड़े आदर से श्रवण करते भए अवध यात्रा को मन भावता भया तीव्र बैराग्य धारण करिके श्रीअयोध्या जी आए इन संत का प्रथम नाम सर्ब सुख

रहा और राजापुर के निकट इनका घर रहा बैराग्य करिके श्रीचित्रकूट में कई वर्ष रहि के श्रीस्वामी जी के उपदेश से श्री अयोध्या जी में निवास किये कुआर के महीने में इनका शरीर दुखी भया सब अवध बासियों को निश्चय भया के अब इनका शरीर छूट जायगा पर श्री सियाराम शरण जी ने हंस के कहा के मेरा शरीर वसंतोत्सव देख के जब सूर्य्य उत्तरायण होंगे तब छूटैगा और ऐसही हुआ उनके बनाये हुये बहुत ग्रन्थ हैं कुछ पीछे से उनमें से इस सतगुरु प्रताप प्रकाश सागर किरिण में पीछे लिखूंगा इसी प्रकार श्रीस्वामी जी महाराज श्रीचित्रकूट में बसि के अनन्त जीवन की उद्धार करते भए और कभी कभी श्री कामदगिरि परिक्रमा में रात्रि के समय में श्रीजनकनंदनी श्री रघुनंदन के विहार का जो बाजा मृदंग बीन सारंगी मुरचंग आदि बाद्य श्री कामदगिरि से सुनाई देती सो श्रीकामतानाथ जी की केलि कौतुक का जो बाजा सो केवल अपनहीं श्रवण न करते किंतु वहुत लोगों को आपने सुनवाया यह बाजा श्रीजानकी जू तथा श्रीरघुनंदन जू के परिकरके रास विलास का बाजा है जिन सत्पुरुषों का अत्यन्त भाग्योदय होता है उनको श्रवण होता है और कभी कभी

जब श्री महाराज जी अकेले अर्द्धरात्रि के समय में परिक्रमा करते तब अनुरागावेश में ऐसे पद गाते ॥ पद राग सोरठ ॥ सरदसोहनी रैन अलीरी ॥ ऊज्वल अमल व्योम राजत थल उद्दीपन रसराज भलीरी ॥ चंद चांदनी चमकत चहुँ दिशि फूली कुसुम कलीरी । जनु श्री युगल ललन प्रमोद हित बिहित हास्य रस रास थलीरी ॥ फरस फनूस स्वच्छ मनिगन छवि कवि उपमा हेरी न मिलीरी । तदपि सकुच वस बरनि बरन बर मनु अद्भुत मनि भूमि फलीरी । बीना वेनु मृदंग रंग धुनि कंज करन कमनीयरलीरी । नटन नेह दम्पति सुख सम्पति तेहि अनुरूप अनूप गलीरी । हेमलता प्रीतमत माल लसि लपटि झूमि झुकि जनु अमलीरी ॥ १ ॥ दोहा ॥ युगल बिहार बिनोद रस करिये निज उर हार ॥ याते अपर न स्वाद कछु देख्यो ग्रन्थ अपार १ इसी तरह अनुराग में जब गाते गाते भोर हो गया और लोग चौतरफ से देख परने लगे तब तो श्री महाराज जू परिक्रमा से भिन्न होके यह भैरवी अलाप किया ॥ खुले सखि आज हमारे भाग । आये मन भाये छाये सुख सरसाये अनुराग ॥ नेवछावर करिहौं प्रीतम पर लोक लाज जग वाग । विरह व्यथा बीती बहु दिन की सरस्यो सरस सोहाग । श्रीयुगल अनन्य शरण सफलित

सब तप तीरथ जपजाग ॥१॥ इसी तरह श्री स्वामी जी महाराज श्रीचित्रकूट में आनंद समेत निवास करते थे जब राजा विश्वनाथ सिंह रीवां निज राजधानी को जाने लगे तब यह प्रार्थना किये के हे महाराज ऐसा भी किसी तरह हो सक्ता है के आप के चरण कमलों से मेरा घर पवित्र होवे श्रीस्वामी जी ने आज्ञा किया के आश्चर्य्य न था जो श्रीअयोध्या जी के मार्ग में होता पुनः राजा ने प्रार्थना किया हे स्वामिन् जो आज्ञा होवे तो मैं ग्रन्थ भेज देउं मेरा भी श्रम सफल होवे श्रीमहाराज जू ने आज्ञा किया के बहुत अच्छा बाद रीवां पहुंचने के कई एक पुस्तक भेजा श्री टीका कबीर जी के बीजक का १ वाल्मीकीय संदर्भ २ रघुनंदन नाम नाटक ३ सिद्धान्त सार आदि बहुत पुस्तकैं चित्रकूट में राजा बिश्वनाथ सिंह की भेजी आईं और श्रीस्वामीजी ने अंगीकार कीं एक दिन एक कबीरपंथी आय के बडे जोर शोर से प्रष्ण करने लगे और इस पद का अर्थ पूछा ॥ पद ॥ आतम में परमात दरशै परमातम में झांईं ॥ झांईं में परझाईं दरशै तहां कबीरा साईं ॥ इस पद के व्याख्या में श्रीमहाराज जी ने ऐसा उपासना का चमत्कार देखाया कि वह साधु कहने लगा कि हे प्रभो!

समरथ! हमको भी श्रीसीतारामजी परात्पर का ध्यान लखा दीजे और अपना लघु किंकर समझिये अंत में शिष्य होता भया और वह कबीर पंथी ऐसे अनुरागी होते भये जिस प्रकार श्रीकबीर जी महाराज ने आज्ञा किया है के, आखँडिआ परदे परे रूप निहारि निहारि॥ जीभँडियाँ छाले परे नाम पुकारि पुकारि॥१॥ जब सौदा पट जाता है तब इसी तरह उपदेष्टा और उपदेश्य दोऊ मालामाल हो जाते हैं॥दो०॥ राम पदारथ पाय के कबीर गांठ मत खोल॥ नहिं पत्तन नहिं पारखी नहिं गाहक नहिं मोल॥१॥ इसी तरह जब कार्य्य होता है तब उपदेष्टा और उपदेश्य दोऊ आनंदित हो जाते हैं श्रीमहाराज स्वामी जी के संबंध से चित्रकूट निवासी अनेक कृतार्थ हुये परन्तु सीतापुर के महंत मनोहर दास जी और चढ़ती परिक्रमा के महंत श्री रामलला जी इन दोनो महात्मा महंतों की ऐसी निष्ठा और सज्जनता भई कि आश्चर्य्य है इसी प्रकार श्रीमहाराज जी साहिब को चार वर्ष हो गए जो श्री परमहंस जी का वृतान्त प्रथम लिखा है स्वयंप्रकाश जी उनकी उत्कंठा भई कि श्री अयोध्या जी को आप के साथ चलना अवश्य है श्रीस्वामीजी महाराज को भी श्री अवध दर्शनाभिलाष होता भया और ऐसी उत्कंठा

जैसे रावणबधानन्तर श्रीजनकनंदिनी जी को भई थी यद्यपि श्री स्वामी जू महाराज का वचन है श्रीअयोध्या जी तथा श्रीचित्रकूट जी में अभेद है तदुक्तं मधुरमंजुमालायाम् । "यहां वहां में भेद न रंचक बंचक भेद बतावै ॥ तथापि यहां एक अभिप्राय है सो यह है जैसे श्रीरामचन्द्र श्रीमहाराज मर्य्यादासागर जू रावण कुंभकरण को मार के श्रीराजधानी श्री अयोध्या जू में अखंड राज्य निर्द्वंद्व होके करते भए तिसी प्रकार श्रीस्वामी जू महाराज जी श्रीरामचन्द्र द्वितीय विग्रह रूप मर्य्यादासिंधु हैं सो मोह रूप जो रावण और अहंकार रूप कुम्भकर्ण को विजय करिके स्वकीय राजधानी श्रीमती कोशला जू को श्रीसीताराम जी महाराज के सदृश श्रीअयोध्या जी को चलते भए श्रीमहाराज परमहंस स्वयंप्रकाश जी साथ में तथा और सेवक संग में सुख पूर्वक विचरते हुए चलते भए जब श्रीस्वामी जी महाराज श्री कामदमणि जी तथा श्रीरामसज्जा कोटि तीर्थादिकों से बिदा हो के बिदा भये उस समय में बन और पर्वत और वहां के खग मृग पक्षी जब मलीन और उदास हो गए तब मनुष्यों के शोक और श्रीस्वामी जी महाराज के वियोग का दुःख अकथनीय होता भया श्रीस्वामी करुणा

मधुरमंजुमाला

अयोध्यामाहात्म्य

सागर जू सब चित्रकूट निवासियों को समझा बुझा के चले। शहर बांदा होके ब्रह्मावर्त होते हुये बाराह क्षेत्र पहुंचे जहां घर्घर और श्री सरजू जी का संगम भया है उहां से आनन्द समेत श्रीमती अयोध्या जी पहुंचे॥ सब श्री अयोध्याबासी सुनि के ऐसे आनन्दित भये जैसे अनवधिक सुख ब्रह्मानंद लाभ होने से होता है सब अनुरागियों से मिलि जुलि के तब अखंड स्थिति का विचार होता भया। यद्यपि श्रीपण्डित जी उमापति तथा श्री परमहंस शीलमणि आदिकों को यही अभीष्ट रहा कि हम सबलोग श्रीस्वामी जी के नित्यहीं सन्निकट रहैं परन्तु श्रीकरुणासागर जी महाराज का अभिप्राय एकांत स्थल में रहने का होता भया आप गोप्रतार श्रीनिर्मली कुण्ड पर निवास बिचार करते भये तब सब श्रीअयोध्याबासी लोगों ने कहा कि जैसी आपकी मरजी होवे तब तो श्री स्वामी जी महाराज श्रीनिर्मली कुण्ड पर पर्णकुटी सदृश स्थान बना के निवास करने लगे यद्यपि श्री मर्य्यादासागर जी महाराज परम बिज्ञानावस्था में प्राप्त थे तौभी सदाचार प्रमाणानुसार श्रीगोप्रतार पर निर्मली कुण्ड के सन्निर्ष छोटासा मन्दिर बनवा के श्रीसीताराम जू युगल मनोहर विग्रह का जब पधारने का समा आया

બાંદા-
બ્રહ્માવર્ત-
બારાહ ક્ષેત્ર-

નિર્મલીકુંડ
વાસ

तब सब जगह निमंत्रण गया परमोत्साह होता भया उसी महोत्सव में श्रीचिराननिवासी महाराज श्री महंत जी आते भये और सब परिकर रसिक मंडली एकट्ठा होती भई और श्रीअयोध्या मंडल के संत महंत जुरते भए महीना भर तक नाच गान परस्पर आनंद मंगल परमाल्हाद होता भया यह भेद किसी को मालूम नहीं कि इतना द्रब्य कहां से और कैसे आता है ऐसी रसोई उज्वल होती भई कि लोग आश्चर्य्य होते भये उस उत्साह में जिसने जो चाहा सो पाया और पदारथ खाने पीने का इतना बच गया कि लोग खाते खाते अकुलाय गए सब लोग तृप्त हो गए यज्ञान्त में सब लोग अपने अपने घर जाते भए श्रीमहाराज महंत चिरान के बिदा होते भये और बिदाई से पूर्ण होते भए श्रीस्वामी जी महाराज अपने निज मंदिर में स्थित होके आनंद को प्राप्त हुये और सदाचार के साथ निर्वाह करने लगे इस आनंद में कई वर्ष व्यतीत हो गया तदनन्तर अनायास परमेश्वरीच्छा से हिन्दू मुसलमानों का वैमनस्य प्रारंभ होता भया इस बीच में बड़ा उपद्रव भया बहुत म्लेच्छ मारे गए और अंगरेजी अमलदारी होती भई कुछ दिन के बाद फिर अंगरेज चले गए श्रीस्वामी जी महाराज के स्थान में

हिन्दु मुस्लिम दंगा

बहुत से तिलंगे और सिपाही और बड़े बड़े रईश आय के सेवा करने लगे यहां तक भया कि फिरंगियों के बंगले उजाड़ के श्रीमहाराज साहेब का स्थान बनता भया ॥ और एक बाग श्रीसरजू तट में ऐसा बनाया गया कि दूसरी जगह वैसी रचना नहीं पाई जाती थी श्रीजानकी बाग उस स्थान का नाम होता भया दिन दिन परमोत्सव होने लगा नाच तमासा आनंद धूम धाम होने लगी कुछ दिन के बाद फिरंगी फिरि आय पहुंचे हजारों गोरे और पलटनैं और अंगरेज ॥ जितने प्रथम के बागी लोग रहे सबों की सजाय होने लगी और श्रीमहाराज साहेब के स्थान में कई सिपाही बागी हो के शरणागत हुए और वहां ही छिपे थे और बहुत से विलायती चीजैं श्रीमहाराज जू के मकान में हर एक जगह पर रक्खी हुईं थी और उन्ही अंगरेजी पदार्थों से अर्थात् लकड़ी ईंट आदि करिके श्रीजानकी बाग बना था और लोगों ने छोलदारियों तम्बू का शामियाना बनाया था उसी के नीचे नाच रंग हुवा करता यहां का तो यह हाल था और अंगरेजी हाकिमों का वह रंग रहा कि जिसके पास कोई फ़ौज की चीज अथवा बागीलोगों का निवास जहां कहीं होवे उसको बड़ा भारी दंड होवे महा उपद्रव प्रारंभ

१८९२

भया और श्रीमहाराज साहेब के कुटी के चौतरफ गोरा और बड़े बड़े सरदार और सिपाही पलटन पड़ी हुई थीं उस समय में अनेक लोग आयके श्रीस्वामी जी से प्रार्थना करने लगे कि हे स्वामी जी महाराज! अब कुछ दिन के वास्ते अन्यत्र चले जाइये नहीं तो बड़ा अनर्थ होगा उन प्रेमिन का बचन सुनि के श्रीमहाराज जी मंद मुसकान करिके बोलते भए उस समय में आपके मुखारबिंद से कुण्डलिया निस्सरण हुई॥

॥कु०॥ दृढ विश्वासी जीव को कौन करैया खेद। ध्रुव प्रल्हाद सुकंठ सुचि अंगद कथा अखेद॥ अंगद कथा अखेद बेद संहिता बखानी। अज्ञतज्ञ मधिख्याति बात नाहिंन यह छानी॥ श्रीसीताबर शक्ति सबल ध्याइय सुखरासी। श्रीयुगल अनन्य हमेश हूजिये दृढ़ विश्वासी॥ १॥ कीजै प्रबल प्रतीति प्रभु परम प्रतिज्ञा पेखि। मिथ्या मम जन खेद दिल हौं मुदप्रद दिल देखि॥ हौं मुदप्रद दिल देखि आप श्री बदन बखानै। याहू पर संदेह सजत मन मूढ़ अजाने॥ श्रीअवधेश किशोर नाम गुन रसना पीजै। युगल अनन्य निशंक सकल सक बाहेर कीजै॥ २॥ सिय बर रक्षक शीश पर पल प्रति पोखन हार। कहा करे जग लोग मम अविहित विबस बिहार॥ अबिहित विबस बिहार खार भवभार भाल

लहि। ग्रसित मोह मद मार मोर मैं वृति अचल गहि ॥ प्रभु करुणा बल पाय होत सत सुधा गहर गर। युगल अनन्य हमेश भरोशा धरु हिय सियबर ॥ ३ ॥ सकल सुखनि की खानि श्री सीता पति पद प्रीति। विकल होत नाहक अधम करि प्रभु रुचि बिपरीति ॥ करि प्रभु रुचि बिपरीति दोष दुख दारुन पावत। क्षण विश्वासो होय सुमन परमानंद छावत ॥ श्रुति सत शीख बिचारि मौज उपराम दुखन की। श्रीयुगल अनन्य प्रतीति सदन सद सकल सुखन की ॥ ४ ॥ संत संग से साजिये साज सरस विश्वास। परम परेश रिझाइये हर हमेश अनयास ॥ हर हमेश अनयास आस दुख रास बिना से। विमल बोध रतिरंग रहस अंतर उर भासे ॥ शेर सांप गज ग्राह सदृश बचिये कुसंग से। श्रीयुगल अनन्य अजूब मोद रस संत संग से ॥५॥ हिन्दुस्तानी भोटिया रूसी अरबी लोग। चीनी रूमी काबुली पंजाबी सहसोग ॥ पंजाबी सहसोग फिरंगी कौन बिचारा। पड़े काल के फांस सहे संकट संसारा ॥ इन से डरे बलाय समुझ के वहता पानी ॥ श्रीयुगल अनन्य हमेश खुसी रहे हिन्दुस्तानी ॥ ६ ॥ इसी प्रकार से अनेक राग रंग आनंद मंगल समेत बहुत दिन व्यतीत होने लगे श्री सीताराम जी सर्वेश्वर महाराज की इच्छा से अंगरेज चले भी

हिन्दुस्तानियों
[illegible]

गए और बीच में अनेक उपद्रव हुए पश्चात् पुनः द्वितीय बार अंगरेज लोग बड़े धूम धाम से आय गए और फिरंगियों का सेनाधिपति अपनी फौज लिये हुये श्रीमहाराज जी के कुटी के सन्निकर्ष आ गया और श्री स्वामी जी महाराज कुर्त्ता दुपट्टा पहिरे हुये श्रीमच्चरण में चरण पादुका अति ही रमणीय विशाल मूर्ति शिर खुले आनंद समेत टहल रहे थे कि हाकिम सामने से आय निकला और श्रीस्वामी जी महाराज को देख के कुछ सकुच गया फिर कुछ देर के बाद बोलता भया कि श्री महाराज युगलानन्य शरण जी आपही का नाम है श्रीस्वामी जी ने कहा कि है तो यही, तब तो उसने कहा कि आप के यहां अंगरेजी बहुतबस्तु है और साहेब लोगों का बंगला उजाड़ के यहां यह बाग बना है श्रीस्वामी जी महाराज मंद मुसकान करिके, बोले जो तुम कहते हो सो निस्संदेह है तब तो उसने कहा फिर यह चीजें आप के यहां किस तरह पर आ गईं श्रीमहाराज जी ने आज्ञा किया कि जब तुम लोग यहां से चले गये थे तब यहां लोगों को कुछ तुम्हारे आने की उम्मेद न थी उस समय में जो रजोगुणी लोग यहां आया जाया करते उन सभी ने अपनी मेहनत से उसको खोद के और इस

स्थान को निर्माण कराया वृत्तान्त इस का यही है अब इस समय में परमेश्वर तुमको हाकिम इस समय का किया है जो वह चाहैगा तुम से जोरावरी करालेगा वह अपसर अंगरेज वहां से जाय के अपनी सेना स्थित करता भया और लोगों से श्री स्वामी जी महाराज का वृत्तांत पूछता भया कि यह महापुरुष कैसे हैं लोगों ने कहा के यह स्वामी जी दश वर्ष से यहां रहते हैं और जब से यह महाराज इस जगह पर बिराजे हैं तब से यहां नित्य नव मंगल आनंद होता रहता है हजारों आदमियों का भंडारा होता रहता है रोज रोज नाच तमाशा उत्साह होवा करता है और बहुत से लोग यहां कुसंग से अन्यथाचरण करते रहे हैं जब से ये स्वामी इस जगह विराजे हैं सब लोगों की वृति स्वधर्मनिष्ठा में प्रवृत्ति होगई है यह महाराज स्वामी जी बड़े प्रसंशनीय उदार सर्वो पकारी कारुणिकस्वभाव दाता दयालू हैं इस प्रकार श्रीस्वामी सुयश प्रताप विकसा हुवा नजर आया तब वह फिरंगी जानता भया कि यह परमेश्वर कोटि में हैं इन से प्रेम करना हीं सर्वथा योग्य है यह वार्ता उस अंगरेज के भीतर फुरती भई और श्रीस्वामी जी महाराज के चित्त में आ गया कि यह सुस्थान अब रहने योग्य नहीं

क्योंं बिजातीय सम्पर्क से अत्यन्त अपक्क कषाय जो हमारे अनुग हैं उन लोगों के चित्त का क्षोभक होगा अतएव इस थल से श्रीसरजू महल जो गुप्त श्रीअयोध्या जी में बिराजमान है जिस स्थान को सौमित्रि दुर्ग अर्थात् लक्ष्मणकोट श्रीलक्ष्मण किला करिके प्रसिद्ध है वहां निवास करना चाहिये इस स्थल की प्रसंशा कुछ आगे लिखी जायगी यह बात बिचारि के फेर शोचते भये कि यह जो श्रीजानकीबाग बना है इस में यवन निवास होगा यह बात अच्छी नहीं है अतएव यह मकान यहां रहना ही उचित नहीं इसलिये इस फिरंगी को यही प्रेरणा होना चाहिये कि इस स्थल को ढहा देवे और हम सबों को कुछ परिश्रम और प्रयत्न न होवे यहां यह बिचार होई रहा था कि बड़े भोर साहेब जरनैल का हुक्म आया कि यह मकान गिराया जायगा कुछ उजुर करना होवे सो किया जावै इस हुकुम के सुनतेही श्रीमहाराज स्वामी जी किंचित मंद मुसकान करिके श्रीस्वामी जी ने आज्ञा किया कि इस स्थान के गिरि जाने ही मे हमारी खुसी है श्रीमहाराज स्वामी जी की आज्ञा से अंगरेजों ने उस मकान को खुदवाया और जो उस में लकडी निकसी उसको श्रीस्वामी जी के स्थान में

भेज दिया और सब तरह से उत्साह नाच तमाशा होने लगा कुछ दिन इसी बिलास में बितीत होता भया परंतु श्रीमहाराज जी का चित्त उस स्थल से कइक हेतु से उदासही था और श्रीअयोध्या जी के सब प्रेमी लोग कहने लगे कि आप को इन म्लेच्छों के बीच में रहना हम सबों को असह्य होता है चलिये अपने परिकर में सुशोभित होइये सब को आनंद प्राप्त होवे श्रीपंडित उमापति जी का बहुत ही प्रेमाग्रह उहां से आने का था यह निश्चय हुवा कि श्रीस्वामी जी महाराज आप गोप्रतार श्रीनिर्मली कुंड से चलि के श्री अयोध्या जी में विराजमान होवैंगे इस बात को अंगरेजों ने सुना और बहुत खेद किया और श्रीस्वामी जी से कहा कि श्री अवध में जिस जगह पसंद आप करैं तहा पर आप का निवास कराया जावै यद्यपि बीच में कई प्रकार का व्यवहार व्यत्यय संबंध से प्रथम स्वर्गद्वार पर निवास भया पश्चात् श्रीलक्ष्मण कोट पर निवास होता भया और देशदेशांतर के लोग आने लगे और सदुपदेश करिके अनेक मनुष्य श्रीस्वामी जी महाराज से संशय विपर्य्यय दूरि करिके श्रीसीताराम जी महाराज के अनुराग में निमग्न होते भये एक महात्मा पंडित शहर

प्रविष्ट।

मुम्बई में श्रीस्वामी जी की कीर्ति सुनिके समागमार्थ आवते भये और सतसंग से कृतार्थ होके श्री स्वामी जी महाराज के संबंध में एक अष्टक निर्माण किया है सो यह है ॥ हरिगीतिका छंद ॥ अति सुखद रूप अनूप मुनिवर भूपवत राजत सदा। रतिनाथ जित नित मद रहित सुसकल हितकारक सदा। भव भरम नाशन अडिग आसन भक्ति शासन दिनमणी। पद जुगल जुगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमणी ॥ १ ॥ पर्वत शिलावत द्रव्य जाको नागिनी सी नारि हैं। शत मुख चतुर्मुख लोक संपति डाकिनी सी विचारि है ॥ सब सिद्धि ठगिनी सी गिनत विष सम जगत माया बनी। पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ २ ॥ अक्षोभ लोभ बिहीन हरि पद लीन नित्य अदीन हैं। पर दीन जन के दुःख हारक अरि बिदारक पीन हैं ॥ सतसंग माहिं प्रवीन युक्ति नवीन कहहिं अतिही घनी। पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी ॥३॥ मन शान्त इंद्री जीत आप अभीत नीति नहीं तजैं। सब संत माहिं सुबिदित जन पर प्रीति रीति सदा भजैं। अविपक्ष दक्ष सुलक्ष जो प्रत्यक्ष दिन अरुयामिनी। पद युगल युगलनन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ ४ ॥ भव पूर जल

निधि भूरि ते काढ़त निकट निज दूर है। तम पुंज नाशन सूरवत सब बिश्व में भर पूर हैं॥ यह हैं वशिष्ठ मुनी कि धौ अवतार और लियो पुनी। पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी॥ ५॥ यह काल अति बिकराल लखियम जालते जो छोड़ावने। प्रतिपालने यह तन धस्यो कि धौं धस्यो सुभक्त उधारने॥ जो तेजवान पुमान सो भी अंश हरि को कहि गुनी। पद युगलयुगलानन्य शरण नमामि शिरोमनी॥ ६॥ अभिमान मान न जानहीं जेहि कीर्ति लोगबखानहीं। रघुनाथ साथ अनन्य भाव अखंड मन में आ नहीं। उपमेय ऋषि गण पूर्व से उपमान मानत अब जनी। पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी॥ ७॥ केते कहौ मुख एकते गुन बहुत अवगुन नाहिं हैं। दर्शन करत अघहरत दुरित निज धर्म मय तन जाहि हैं। नित ध्यान तिन को धरो हित सो करो सुस्तव मुख भनी। पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी॥ ८॥ इति अष्टकंसमाप्तम्॥

यह श्रीस्वामी जी महाराज के प्रभाव से वह पदार्थ अधिकारी लोगों को प्राप्त हुआ है जो बिना सतगुरु के अनंत उपाय से नहीं प्राप्त होता और बिना सद्गुरु पद पंकजानुराग से वह सुख अलभ्य है उस

आनंद का लक्ष्य श्रीस्वामी जी महाराज के मुखारबिंद से यह निस्सरण है, ॥ मंजु ॥ परम परेश सुदेश सरस उपदेश विशेष बतायो । शेष महेश दिनेश ध्येय गुण अनुपम रहस सजायो ॥ लेश विदेश भदेश रह्यो नहिं नेह नगर दरशायो । श्रीयुगल अनन्य शरण सद्गुण श्रीचरण सरोज समायो ॥ १ ॥ कोटिन कलप विकलप संकलप करत कलेश कमायो। काम कामिनी कलित कोह कलि कारन करन विकायो ॥ कीमत कहर लहर लाह्यो। भल लालच लोल ललायो। श्रीयुगल अनन्य शरण सतगुरु पद परसि पुनीत कहायो ॥ २ ॥ निज स्वरूप पर रूप भूप रस छाँह धूपते न्यारो। बीज बिकल बैराग्य बोध रति रसनिधि नाम पिआरो ॥ भाव चाव दिल दाव दमक दुति विपिनि बिनोद बिहारी। श्रीयुगल अनन्य शरण श्रीगुरु पद पाय सकल सुख सारो ॥३॥ श्रीगुरु चरण चारु चिंतन सजि अपर भरोसन मेरे । सांची कहौं अभेद खेद बिन स्वेद निचोरि निवेरे ॥ सियबल्लभ से सरस सुसत गुरु सकल भांति हिये हेरे । श्रीयुगल अनन्य शरण तिन की करुणा से सहित उजेरे ॥४॥ श्रीस्वामी जी महाराज का निवास जब अखंड श्रीअयोध्या जी के श्रीलक्ष्मण कोट पर होता भया तब श्री अवधबासी कीट पतंग में भी परत्व बुद्धि

होती भई और श्रीसीताराम जी महाराज की बिभूति जानि के उनकी महिमा श्रीमुखारविंद से उच्चारण स्वाभाविक से होती भई॥ धनि धनि अवध चकोर बिलक्षण। श्रीरघुनंदन चंद लखि रहत हमेश बिचक्षण॥ श्रीयुगल अनन्य ताप त्रैनाशक ह्वैहै सीस पीय दरशन ॥१॥ धनि धनि अवध कोकिला प्यारी। युगल नाम मधुरे स्वर भाखत चाखत रस रसकारी॥ श्रीयुगल अनन्य करत उद्दीपन लली ललन बोलन अनुहारी ॥२॥ धनि धनि चातक अवध बिहारी। स्वाति बुंद सम नेह पगे नित श्रीरघुबर छबि छटा निहारी॥ श्रीयुगल अनन्य अनन्य सर्ब पर ब्रत सिखवत नर नारी ॥३॥ धनि धनि अवध नगर पारावत। उड़त सुहावन लगत मनोहर छटा अटासु केलिकल भावत॥ श्रीयुगल अनन्य लाल अवलोकत पालत प्रेम समेत लडावत ॥४॥ धनि धनि अवध नगर की चिरिया। दम्पति सहित डार डारन पर बिहरत मोद महा सुख भरिया॥ श्रीयुगल अनन्य त्यागि बैठी सब जेती तीरथ पुरिया॥५॥ धनि धनि अवध शहर के खंजन। मनरंजन बिलसत प्रमोदबन उपमित नैनन से जन सज्जन॥ श्रीयुगल अनन्य रसिक रघुनंदन दरशत दोष बिभंजन ॥६॥ धनि धनि अवध नीलकंठादिक। पयान समय शुभ सगुन

अनूपम सुख दायक आस्वादिक॥ श्रीयुगल अनन्य सु
प्यारे दरसत बिगत विषाद करत नरमादिक ॥ ७ ॥
धनि धनि अवध छबीले सूवा । हरित नील कोउ अरुण
स्वेत तर बोलि जिवावत मूवा॥ श्रीयुगल अनन्य
मधुर बोलन पर आप निछावरि हूआ ॥ ८ ॥ धनि
धनि अवध अनूठी मैना। ललित लता कोमल पर राजत
मनहु मदन के सेना ॥ श्रीचुगल अनन्य रसीले
बोलत मोहत मन पथिकन गुन ऐना ॥ ९ ॥ धनि धनि
अवध कुरंग रंगीले। नाम कुरंग सुरंग सलोने बन बन
निरभय अटत छबोले ॥ श्रीयुगल अनन्य सिया रघुनंदन
सुयस श्रवन सुनि गान ठगीले ॥ १० ॥ धनि
धनि केहरि अवध सुहावें। हेम मणिमय जडित पिंजरन
देखि सु रघुबर अति सुख पावें। श्रीयुगल अनन्य
अहार आपनो पावें रघुबंसी मन भावें ॥११॥ धनि
धनि अवध नगर के बाजा। उडत स्वतंत्र सहज मद
माते रघुबर जिन्है निवाजा ॥ श्रीयुगल अनन्य कोऊ
कर सोहत बनि ठनि के सब साजा ॥१२॥ धनि श्री
अवध रसीले लाल। लालन को अतिहीं वह भावते हरित
पीत कोउ रंग गुलाल॥ श्रीयुगल अनन्य उडावत
परिकर संग लाल छवि निरखि निहाल ॥१३॥ धनि
धनि अवध सहर के कागा। चिरंजीवनहि मीत सबन

की बोलत मधुरेस्वर से रागा । श्रीयुगल अनन्य आमिखादि तजि मिष्ठ फलन पावत रस पागा ॥ १४ ॥ धनि धनि अवध विहग समुदाई । सबै मनोहर गुन गन पूरन लाल प्रिया गुन गाई । श्रीयुगलअनन्य बंदि पद पंकज सबते बर मागौं सुखदाई ॥ १५ ॥ धनि धनि अवध कूप रस पूरन। मिष्टइष्ट लागे सबही को नीरक्षीर परसत मिस्री उन ॥ श्रीयुगल अनन्य रुजाली विधिवत हरन हेतु संजीव चूरन ॥ १६ ॥ आप श्रीस्वामी जी महाराज श्रीअयोध्या के जो पशु पक्षी आदि अर्थात् जीव मात्र से निर्विरोध राखते और सब में प्रभुमय देखते श्रीपंडित उमापति आदि जो महात्मा श्रीअयोध्या जी में प्रसिद्ध विद्या और उदारता अद्यापि प्रपंच प्रकट है उक्त श्रीपंडित जी ने बहुत चाहा कि श्रीस्वामी जी महाराज की प्रशंसा संस्कृत में निर्माण करैं परंतु श्रीमहाराज जी को यह बात पसन्द न थी जब श्रीपंडित जी ने बहुत चाहा तब तो श्रीमहाराज जू ने आज्ञा किया कि जो आप की ऐसीही रुचि है तब श्रीजानकी रघुनंदन जू का कोई चमत्कार स्तोत्र की रचना करिये श्री महाराज जू के आज्ञानुसार यह स्तव निर्माण किया ।

श्रीजानकीजीवनो विजयतेतराम् ॥

श्लोकाः ॥ कुशलकौशलिकोशलकोशला कुशलपाल-
कबालकालालिका ॥ कमलकैरवपालिकुलालिका न सि-
थिला मिथिलाधिपबालिका ॥१॥ परिमलैरमलैःस्वतनो-
स्तनोः कुवलये मलयेर्प्पितकुत्सिका ॥ किशलये निलये
म्रदिमावधेर्मृदुकरेण करेण बिधौ विधेः ॥२॥ परमपा-
रमपाःस्वतनूरुहे निरवधिः सुखधिर्व्यवधिम्बिना ॥
सुजगतीषु सती मसृणा घृणा विरचिता रचिता सुचिर-
ञ्जिता ॥३॥ जनककर्म्मसुधर्मसुरूपिका जनककर्मसुधर्मसु
रूपिका ॥ बिधिहरीश्वर शर्मसमर्पिका विधिहरीश्वर-
शर्मसु तर्पिका ॥४॥ बिजयते जयतेशबशंबदा सुनयना-
नयनालिरशम्बदा ॥ श्रितसदासुखबर्षजिताम्बुदा श्रित-
सदासुखतर्षपदाम्बुदा ॥५॥ गुरुजने सुजनेस्वजनेऽजने
मधुरता धुरता समता मता ॥ हृदयहारि बिहारिविहा-
रिका सुपथिला मिथिला वरदारिका ॥ ६ ॥ त्रपजनरीति-
नरीबरकिन्नरी शुभशरीसृपरीर सुरी सुरी ॥ पद बनी-
भवनीतितिरस्कृता जयति सा।सिमसाधुपुरस्कृता ॥ ७ ॥
कलिमलालिदला विमलोज्वला जयजलासुकलाकम-
लाकुला ॥ सुकमला कमलारसपेशला जयति शेश-
सुतेशजलेशला ॥ ८ ॥ सुखयते नयते मुखकौमुदी पर-
दशां विदिशां च हृशांहृशः ॥ पतिरमातिरमा परमा-
श्रमा जयति मा न समानमनोरमा ॥ ९ ॥ सितखराम-

णिशेखरशेखरा स्थितपरासुपरासु पराध्वरा ॥ शुभपणा सुगुणागतदूषणा बिजयते जितकौस्तुभभूषणा ॥ १० ॥ सदयितोदयितो जगतामसौ सुदयितोदयितोपिशनैस्सदा ॥ विजयते जयतेश्वरबन्दनः समुदितोमुदितो रघुनन्दनः ॥११॥ स्वजनसज्जनरञ्जनचातकः स्वसुदयादिततद्गुरुपातकः ॥ ससुरभिः सुरभीतिविघातकः परमधार्म्मिकधार्म्मिकतातकः ॥ १२ ॥ समसुरासुरकिन्नरसन्नराड् गुरुतमोऽप्यतमोनिजभाग् जने ॥ लघुतमोऽप्ययते दयते लघुस्वयमहो श्रयते नयते यशः ॥ १३ ॥ बिमलया मलयाचलसंजिता विकलया कलया सुरभिश्रिता। सृतिरसौ सुरसौघसिता सिता शुभवता भवता परिवासिता ॥ १४ ॥ सुमधुरा मधुराघवमाधवं व्यरचयद्रचयद्रससंततिः ॥ तव सदाविदिताविदिता कथा न बितथासुपथा हृतसद्व्यथा ॥ १५ ॥ तव नखांशुकलाविकलोविधुः क्षयति याति विलक्षणलक्षणाम् ॥ परमतावकतावकविश्रुतिश्रुतिजनो न तनोति मनोव्यथाम् ॥१६॥ सुरसितारसितातिसितासितासुरसितातिसितागम मंजुकृत् ॥ सदमितादमितामितगीर्षुगी जयति यस्य सदस्यवयस्यभृत् ॥ १७ ॥ महिमहीन्वदहिन्वदनादरी माहिमहीमहिभूमदनादरी ॥ महिमहामहियात्क दनादरी महिमहीनमहत्सदनादरी ॥ १८ ॥ तनुतमालरसाल-

रसालजित्करप्रबालप्रबालजिद भंकः ॥ पृथु मृणालमृणालजपद्मपच्छिद विशालविशालभसद्भुजः ॥१९॥ दुरितदार उदारसुदारको वृहदुदार उदारसुदारकः ॥ धृतकुमारकुमारकुमारको धृतकुमारकुमारकुमारकः ॥२०॥ प्रहरतां हरतां हरितां हरे प्रहरतां हरतां हरतां हरेः ॥ विहरतां हरतां जगतांमनो विहरतां हरतां सततं मनः ॥ २१ ॥ बिपरीतमदः सभासदः सततं श्रीरघुनन्दन चन्द्रदृक् ॥ गुरुजाति उमापतिः सतीं युगलानन्य कृते कृतस्तुतिम् ॥ २२ ॥ श्रीमद्दम्पतिमाधुर्य्यैश्वर्य्यसौन्दर्य्यसत्सुधा। सुधामन्दाकिनी सेयम्पुनातु स्ववगाहकान् ॥ २३ ॥ इति श्रीमच्चक्रवर्तिचक्रचूड़ामणि महाराजकुमारसज्जितमारश्रीमद्रामसभासदत्रिपाठ्युपनामोमापतिशर्मबिरचितश्रीसुधामन्दाकिनी नाम श्रीदम्पतिस्तुतिशर्मप्रसितास्तात् । श्रीरस्तु ।

इसस्तोत्र को देखिकै श्रीस्वामी जी महाराज अति हर्षित होते भये और श्रीपंडित उमापति जी की प्रशंसा करते भये और श्रीमहाराज स्वामी जी स्वाभाविक ही महोत्सव मूर्ति आनन्द विज्ञानमूर्ति एक दिन अपने स्वकीय आसन पर विराजे हुये थे और दो तीन मनुष्य रुदन करते आये और एक लड़का सत्रह बर्ष का बहुत लाचार उठाये हुए और त्राहि त्राहि करते

हुए श्रीमहाराज जी के निकट पुकार करने लगे श्री स्वामी जी करुणासागर जू ने पूछा कि ऐसा क्यों पुकारते हो उस बीमार के संबंधी ने कहा कि श्रीस्वामी जी इस लड़के को बर्सों से मृगी आती है बहुत सी इलाज कीगई नहीं अच्छी होती यह बात लोग कही रहे थे कि दैवयोग ऐसे धूम धाम से मृगी आगई कि मुख से नाक से कफ जारी हो गया और ब्याकुल होने के बाद जब सावधान हुवा तब श्रीस्वामी जू ने आज्ञा किया कि इस बीमार लड़के को श्रीसरजू जी में लेजाय के खूब स्नान कराय के और श्रीसरजू जी का रज सब शरीर में अच्छी तरह से मली इसी प्रकार से किया उस दिन से फिरि मृगी नहीं आई ॥ दोहा ॥ ऐसे दीन दयाल को क्यों नहिं सुमिरै मीत । श्रीस्वामी पद पंकरुह सेवत नसत कुभीत ॥ १ ॥ एक बेर श्रीस्वामी जी महाराज बिराजते थे एक पंडित द्रविड़ देशीय पंचनदीश्वर नामक आयके यह श्लोक पढ़ा । साकेताह्वयपुर्य्यां सरयू तीरे बिभान्ति विद्वान्सः ॥ तथापि युगलानन्यस्तेषामग्रेसरस्तु दाता च ॥ १ ॥ साधूनां प्रथमो बिभाति युगलानन्योवरोनेतरः दातृणां प्रथमो विभाति युगलानन्योवरोनेतरः ॥ वक्तृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो-

बरोनेतरः श्रोतृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो बरोनेतरः ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जी ने कहा कि पंडित जी ऐसी स्तुति क्यों करते हो उक्त पंडित जी ने कहा कि स्वामी जी एक घोड़ा विना श्री काशी की यात्रा रही जाती है ॥ श्रीमहाराज जी एक घोड़ा दिलवा दिया पंडित पंचनदीश्वरजी घोड़ा पर सवार हो के चले रस्ते में एक मनुष्य ने कहा कि बड़ा शुद्ध घोड़ा है उक्त पंडित ने पढ़ा कि। दातापि साधुस्तुरगोपि साधुः पुनः एक ने कहा कि बड़ा घोड़ा है उक्त पंडित ने पढ़ा। दाता वरो भाति हयोबरश्च ॥ पुनः किसी ने कहा कि इस घोड़े की बड़ी बड़ी आखैं हैं पंडित जी ने कहा। दाता सुदृक् चापि सुदृक् च बाजी, उक्त पंडित अपने आसन पर पहुंच गए और श्लोक का चतुर्थ चरण पढ़ा। प्रतिग्रहीता तु विदृग्विभाति ॥ १ ॥ तात्पर्य्य इस का यह है कि पंडित पंचनदीश्वरजी प्रज्ञाचक्षु थे अर्थात् जन्मान्ध रहे परंतु पाण्डित्य और कबीश्वरता प्रबल थी उन्ही का यह श्लोक निर्माण किया हुवा है। दातापि साधुस्तुरगोपि साधुर्दाता बरो भाति हयो बरश्च ॥ दातासुदृक् चापि सुदृक् च वाजी प्रतिगृहीता चविदृग्विभाति ॥ १ ॥ श्रीस्वामी जी महाराज जी का माधुर्य्य चरित्र और ऐश्वर्य्य चरित्र दोनों अद्भुत सुख

प्रद भक्ताऽऽनंददायक हैं जब लड़के लोगो से आप की वार्ता होने लगती तब तो साफ़ मालूम होता कि आप बालक्रीड़ा करि रहे हैं आप का मंगल विग्रह देख के सब बालक लोग परम मोद को पावते और हर्षित हो के फिरि खेलने लागते आप का अद्वितीय प्रताप देख के सब लोग हर्षित होते और जब कोई पुरुष किसी दुःख करिके सखेद हो के आप के पास आता तब आप इस प्रकार उसके दुःख निबृति के अर्थ उपदेश करते ॥कुंडलिया॥ जपिये जीवन जान जन जससागर सियराम ॥ कंपिंये काहू से नहीं निदरि कामना काम ॥ निदरि कामना काम वाम वद बोय विसारी । रहिये हिय हुसियार प्यार पगि प्रीतम प्यारी ॥ नाना मत विषवाद सुमन सपने नहि थपिये । श्री युगल अनन्य सचेत चित्त सिय पिय जपिये ॥१॥ नित्य नेह बिन विफल कुल करनी जरनी जीय । श्रुति पुराण संवत सुधी बचन चारु रमणीय ॥ वचन चारु रमणीय तीय पति बिरहित विधवा । बदन बिलोकन योग नहीं दोउ दिशि अपरधवा ॥ अमल अचल दृष्टान्त बूझिये तजि तामस किन । श्रीयुगल अनन्य अशोभनीय मति नित्य नेह विन ॥२॥ एक बेर एक प्रेमी महारोगी मृगी वाले पुरुष को अपने साथ लाय और श्री स्वामी जी महा-

राज से प्रार्थना किया कि हे महाराज यह रोगी सब प्रकार से अनाथ है अब आप इस पर करुणा करिये श्री स्वामी जी महाराज उसके तरफ़ देखा ऐसा दैव योग उसको तुर्त मृगी आइ गई कंपमान हो के मूर्छित हो गया तब तो श्री महाराज जू ने कहा इस को उठा के लेजावो और श्री सरजू जी में खूब स्नान करा के और सरजू रज इसके बदन में मलो तब तो लोगों ने उजुर किया कि हे दीनदयाल जल निकट यह रोग बढ़ता है श्रीस्वामीजी ने आज्ञा किया कि नहीं बढ़ैगा अच्छा होय जायगा। ऐसे श्रीगुरुदेव कृपा सागर सुख दाई। बडे भाग से मिले मोहि मूरति रघुराई॥ ज्ञान बिराग योग जप तप संयम कोउ साधैं। हम तो श्री गुरुदेव चरण पंकज अवराधैं॥ साधन सकल बिहाय पाय श्री श्रीगुरुपद पंकज सकल भरोसा। त्यागि जागि सेवों तिन पदरज तिनही की मैं आसा॥ करों नित्त स्वास स्वास प्रति मागों नितहीं सकल देव गुरुदेव चरण रति जो चाहै सो। होय करै कोउ काहु भरोसो मोरे हिय महराज राज राजत नित तोसो १॥आरती॥ श्रीगुरु जी की आरती बारों। कनक थार शुभ सुरभि सुमन मय मङ्गल द्रव्य सवारों॥ सोनेके दियमा पँच मुखबाती अगर धूप आगियारो॥ मलि मलि अतर प्रेमयुत अंगन

कलिल हार हिय डारों। सिय रघुनन्दन शरण युगल पद करि प्रणाम तन वारों ॥२॥ हे रघुनन्दन परम गुरु दीनानाथ कृपाल। मोहिं बचावो जगत से भीरु भयंकर काल॥ हौं दुखिया मैं जन्म को जाँचत रह्यो हमेश। हौ दाता प्रभु दीन के रघुकुल कमल दिनेश ॥३॥ एक दिन श्रीस्वामीजी महाराज बिराजते थे और एक सेवक संत आपका हस्त पाद कमंडलु से धुला रहे थे, उसी समय एक पण्डित कबीश्वर ने अपने मनोरथ को सिद्ध पाय के यह कवित्त पढा ॥कवित्त॥ सन्मुख होत जाके आनँद उदोत होत मिटत कुअंक भाल रंकन कों न कशै। पावन पदुम पद परम पराग परे फैलति प्रभाव भूरि संत कवि सकशै॥ दूर होत जन्म अनेकन की बाधा दीह मिटत अदोष भानु मंदन की अकशैं। श्री युगल अनन्यशरण सेवक सुमंडल पै अखंडल की साहिबी कमंडल से बकशैं॥ इस कवित्त को सुनिके श्रीस्वामी जी महाराज उस कबीश्वर पण्डित को एक कृपा मई दृष्टि से ऐसा देखा कि वह निहाल हो गया। एक दिन श्रीस्वामीजी महाराज स्वकीय आसन पर विराजमान हैं कि एक कबीश्वर आयके यह कबित्त कहा॥ करन से दानी सनमानी रघुबीर जन सुभट कृपानी सम पारथ बखानिये। भानु सो प्रताप तेज यश रजनीश सम कोटिन

फनीश छंद गति अनुमानिये भारधर धरा सम पालक सुजल रीति घालक दुअन भृगुपति सम जानिये। चिरंजीव लोमश समान रंगनाथ भनै श्री युगल अनन्य प्रभु शील गुन खानिये ॥१॥ जय श्री करुणासिंधु सकल पावन के पावन ॥ जय महराज दयाल सरस सज्जन मन भावन। जयति जयति गुरुदेव प्रभु जय जय जय असरण शरन ॥ देहु दया करि दीन को पद पंकज तारन तरन ॥२॥ जय स्वामी सर्वज्ञ तज्ञ शुभ यज्ञ प्रकाशक। जै शुभ मंगल मूल भूल अज्ञान बिनाशक ॥ जय जय जय आरत हरन अभर भरन दुखदमन जय। जय स्वामी गुरुदेव परम दैवत मंगलमय ॥३॥ जय सुज्ञान प्रकाश आश एक मोहि तुम्हारा। जय सुंदर महराज करो नित दीन सम्हारा ॥ जय जय जय महराज नाथ नाथन के नाथा ॥ मैं मतिमंद अजान तिहूं पुर भयो सनाथा। मोरे प्रभु एक तव चरण है पावन आधार। सुनी पढ़ी पोथी कथा यह कीन्ही निरधार ॥४॥ जय श्रीरघुबर रूप देव गुरु देव बिचक्षण। जय प्रीतम परमेश बेश गुण गण हु बिचक्षण॥ भजिये भाव समेत शुचि श्रीसतगुरु पद कंज ॥ सजिये सोहवत स्वच्छ सुठि हठि विहाय मुद मंजु॥ हठि बिहाय मुद मंजु कुंज काया मधि रहिये ॥ निज दुख सुख बर बैन कहूं कबहूं ना कहिये ॥ श्रीयुगलअनन्य सोहाग अचल जो

तम तन तजिये॥ होय सचेत निकेत नेह श्रीगुरुपद भजिये ॥५॥ एक समय में शहर बांशबरेली के पंडित घासी राम तथा शास्त्री अंगदराम आदि कई एक विद्वान् तथा सरकारी पाठशाला के पंडितों ने धर्मसभा प्रारम्भ किया और उपनिषद् तथा मनुस्मृति तथा और वेदों के ऋचा आदि भाषा अर्थ बहुत सरलता के साथ सभा पत्र की श्रीस्वामी जी महाराज के पास भेजा करते और नाना प्रकार के चमत्कार छपवाय के श्रीस्वामी जी महाराज के पास पहुंचाया करते एक बेर श्रीमहाराज साहेब खुस हुये आप भी एक पत्र भेजा धर्मसभा के प्रसंसा में सो यह है ॥ छंद प्रेमाभरण ॥ तत्वबोधनी सभा प्रभा अनवद्य अदूषन छाई। महा मोह तम तोम सपदि प्रति रोम रोम सुखदाई ॥ प्रबल प्रणय परमीति प्यार परमेश बिचित्र बड़ाई । विसद बोध बर बिरति बिदित वैभव अद्भुत दरसाई ॥ बिमल बिशारद सरस सभासद बिज्ञ बिलक्षणताई । अगम अकथ गुन सुगम करन हित प्रिय उज्वल बपु पाई ॥१॥ तत्वबोधनी सभा शुभा कर सुजन सरा हैं साँचे। सकृत श्रवण शत शब्द सोहावन परत मीच भय बांचे ॥ धन्य २ अतिमान मन्य मुद मंगल मग गुनराशी। श्रीपंडित शत संग सकल बल बिद्या बुद्धि बिलाशी ॥ प्रभु प्रताप अनुताप

दाप दव शीतल करण जहानी। श्रीसंप्रदा शिरोमणि सत मत सदृश रहस्य सुबानी ॥ अचल अमल प्रति क्षण नूतन सुख सौ गुण सभा सजीली। बढ़े चढ़े निज नूर अनूपम कटे कषाय कसीली ॥ श्रीमनु महाराज सु स्मृति उपनिषद तर्ज्जुमा प्यारी । बांचत राचत नाचत मन मुदित सुथल अधिकारी ॥ श्रीसरजू सुरसरी सदृश सब भांति अघौघहारी ॥ बांसबरेली सभा सार शुचि तत्वबोधनी प्यारी ॥ निखिल भांति कल कांति करनि अनुराग बिराग बितरनी ॥ तत्वबोधनी सभा भवांबुधितरन हेतु पटु तरनी ॥ छापाखाना सुकृत सदन जहं छपत शब्द सुखदाई ॥ बड भागी जागी जिनकी मति नति समीप प्रिय पाती। पहुंचत दिन अठवें पंद्रहे पर प्रभु सुजश विभांती । श्रीयुगलअनन्य शरण हरषित हिय सभा प्रसंसा साची। लिखी ललित सत सभा सदन शुचि निकट प्रीति रंगराँची ॥ अमित बिभाकर सदृश तत्वबोधनी सभा दिन दूनी। रहे हमेसे उदित प्रलय लगि होय न कबहूं ऊनी ॥१॥ यह पत्र प्रबल प्रताप उपदेश मय जब सभासद लोगों को प्राप्त भया उस तत्वबोधनी सभा के जो बिद्वान लोग रहे उन सब का अबिद्या रूप अंधकार दूर हो गया और उन सभावाले लोगों के हृदय में प्रकाश हो गया उन में से कई एक लोग

विरक्त हो गए और कई एक पंडित अपने घर ही में बैठ के परमेश्वर आराधन करते हुये जीवन मुक्त अवस्था को प्राप्त होते भए। सत्य है जब तक सच्चे सत्पुरुषों का समागम नहीं होता तब तक जीव दुःख समुद्र से नहीं निकरि सक्ता ॥अरिल॥ बार बार उपदेश चित्त चख कीजिये। अचल अमल निज ठौर सुधा रस पीजिये॥ विषय विषम विष बूझि न छन भरि छीजिये। हरि हां आठ पहर सुख शहर सैर लखि लीजिये॥ मन मूजी मजबूत भूत धूत धूत है। पल पल करे उपाधि न समझै सूत है॥ श्रीसीताबर कृपा कलित की आस है। हरिहां श्रीयुगलअनन्य शरण पुरुषारथ खास है॥ मन बिरोध हित यत्न विपुल शक हीन है। पै प्रभु कृपा कटाक्ष रहित नित छीन है॥ पाहिपाहि प्रभु प्रगट पुकारत छेम है। हरिहां आचारज सिद्धांत बिवर्द्धन प्रेम हैं। ऊँची बड़ी दुकान मिठाई फीक है॥ कथनी किये न हर्ष हृदय निज नीक है॥ सावधान भजु नाम जान जो वेद का। हरिहां शरण सियाबर गहे कहो फिरि खेद क्या॥ श्रीस्वामीजी महाराज यद्यपि ज्ञान की भूमिका जो पांचवीं तथा छठी है जिसका नाम असंशक्तनामिका और पदार्थाभावनी है इन भूमिका अर्थात् आप पूर्णानंद जो परब्रह्म साक्षात्कार है तिस अवस्था में नित्य प्रति स्थित

रहते रहे तथापि उपासना की प्रबलता और सदाचार की प्रबलता आपकी ऐसी रही कि नित्य प्रति तिलक तथा पंचायुध युगलकंठी श्रीसीताराम नाम तथा चंद्रिका मुद्रिका धनुष बाण नित्य नेम से अपने मनोहर परम मंगल मय शरीर में अति हीं प्रेम से धारण करते। एक बेर श्रीमहाराज स्वामी अपने स्वभुज में धनुर्बाण अंकित करि रहे थे कि दक्षिण देश के पंडित बड़े बिज्ञ श्रीमहाराज जी से जिज्ञासा किया कि हे स्वामिन्! इन मुद्राओं के धारण से क्या होता है तब तो श्रीस्वामी जी ने कहा कि अनंत फल तो होता हीं है परंतु धनुष बाण का धारण करनेवाला कभी किसी से हारता नहीं तब तो उस पंडित ने कहा कि हे महाराज मैं तो सब देश में फिरा केवल अपनी हार मिटाने वास्ते सो ऐसी कृपा कीजै जिसमें मैं जीत जाऊं श्रीमहाराज श्रीस्वामी जी ने आज्ञा किया के बेशक जीत जावोगे जब सबिध धारण करोगे श्रीमहाराज जी ने बिधान कहि दिया और आज्ञा किया कि अपने गुरुदेव से पंच मुद्रा धारण करो शीतल बा तप्त पश्चात् पुनः हमारे निकट आवो वह पंडित दक्षिण के शास्त्रार्थ में हारा हुवा ग्लानि के साथ धनुर्बाण आदि पंच मुद्रा बाजार से मोल लेके श्रीस्वामी जी महाराज के आगे रख के प्रार्थना

मुद्राधारण

किया कि हे दीनार्तहर! अब मैं कहां गुरुदेव अन्वेषण करूं आप ही कृपा करिके जैसा उचित होय तैसा करि दीजै श्रीस्वामी जी ने जब देखा कि यह ब्राह्मण अति ही सुशील दीन है तब तो बिधान पूर्बक श्रीमहाराज जी धनुर्बाण आदि संस्कार कराते भये और शीतल मुद्रा धारण की आज्ञा किया और यह पाचँ श्लोक अपने मुखारबिंद से निर्माण किये हुए उस पंडित को दिये गये वे श्लोक यह हैं। सुबर्ण रत्नाञ्चितमुज्वलन्तं महा प्रभावैः परतः परं शरम्॥ सदैव श्री राघवदक्षिणे करे प्रकाशमानं तमहं भजामि॥१॥ निरन्तरं राघवबामबाहौ बिराजितं दिव्यतमं विचित्रम्। यदंशसंभूतमशेषसर्गं भजामि भक्त्या च धनुर्धरीणम् ॥२॥ विचित्र माणिक्यविभावितं बरं भजामि तूणीरमहं निरन्तरम्॥ रघूत्तमस्यैककटिप्रदेशे समुल्लसन्तं शरसंघसंयुतम्॥ ३॥ निराकृताशेषसुदामसंभवं स्वकाशतश्चन्द्रमरीचिनिर्जितम्॥ विपक्षपक्षक्षयिणं क्षितीश्वरं भजामि रामायुधखड्गमुत्तमम् ॥४॥ प्रपन्नतापार्तिहरं प्रसन्नं प्रभासमानं वपुषा परेश्वरम्॥ सदैव श्रीराघवसन्निधानं भजामि श्रीपावनमायुधालयम्॥५॥ समस्तदुःखौघबिनाशहेतुं सुपंचकं चायुधसंस्तवं परम्॥ पठेद्यइच्छेदभयं सुखास्पदं तथैव रामस्य सुखप्रसाद-

जम् ॥ ६ ॥ इति श्रीयुगलानन्यकृतं श्रीरामायुधपंचकं समाप्तम् ॥

इन स्तोत्र को पाठ करते और धनुर्बाण आदि मुद्रा धारण करिके वह श्रद्धावान बिद्वान जाय के प्रथम तो एक सभा ऐसी जीता जिस में कई एक मतवादी मायाबादी सगुणोपासनाद्रोही प्रज्ञाभिमानी लोकायतिक चार्वाकमतानुयायी इत्यादिक बहुतों का शास्त्रार्थ में पराजय करिके तथा सब को श्रीरामायुध धारण कराय के शुद्ध करि देते भये पश्चात् आप वह पंडित मौन ब्रत धारण करिके परम बैराग्यावस्था में स्थित हो के बिचरने लगे और मनोरम जो श्री जानकी रघुनंदन का परमानंद सुख है उसी में तत्पर हो बिचरते कभी श्रीचित्रकूट में कभी श्रीमिथिला जी में कभी श्रीअयोध्या जी में आनंद करते भए ॥ छंद ॥ क्यों नहीं करै आनंद संत सतगुरु रस भीने। पावै वही अथाह थाह जो परम प्रवीने। रहैं हमेश निशंक शंक काहू सो नाहीं। चहै न सपनेहु बस्तु लोक दोनो के माहीं ॥ बहै न धारा जगत धार उद्धार करैं निज पर को। सहै चोट अजगैबी धक्का तकै रहैं निज घर को ॥ ऐसे मन मारे निःकिंचन संतगुरु के प्यारे।

लोक बासना धूरि मेलि परलकों से भय न्यारे ॥ उनकी अजब कथा इस जग में रहै सबन के अंतर । जानै कोई महरमी धरमी जो करि बास स्वतंतर ॥ निन्दा सुनै न मुख से भाषै जड चेतन की कबहूँ । चाहै उनको अधिक दुखावै क्रोध करै नहि तबहूं ॥ और सत संग तथा गुरूपदेश से जो आनंद नहीं प्राप्त होता उस का यही हेतु है कि उपदेष्टा में यथार्थ श्रद्धा प्रीति प्रतीति की हीनता से ॥तदुक्तमभियुक्तैः ॥ विद्यां
श्रुत्वा ये गुरुं नाद्रियन्ते प्रत्यासन्ना मनसा कर्मणा वा॥
तेषां पापं भ्रूणहत्याविशिष्टं नान्यस्तेभ्यः पापकृद-
स्ति लोके ॥१॥ यथैव ते गुरुभिर्भावनीयास्तथा तेषां
गुरवोप्यर्चनीयाः॥” तस्मात्पूजयितव्याश्च संविभज्याश्च-
यत्नतः॥ गुरुवोप्यर्चयितव्याश्च पुराणं धर्ममिच्छता ॥१॥
येन प्रीणाति पितरं तेन प्रीतः प्रजापतिः ॥ प्रीणाति
मातरं येन पृथिवी तेन पूजिता ॥२॥ येन प्रीणात्युपो-
ध्यायं तेन स्याद् ब्रह्म पूजितम्॥मातृतःपितृतश्चैव तस्मात्
पूज्यतमो गुरुः॥३॥ऋषयश्च हि देवाश्च प्रीयन्ते पितृभिः
सह ॥ पूज्यमानेषु गुरुषु तस्मात्पूज्यतमो गुरुः ॥ ४ ॥
केनचिन्नच वृत्तेन ह्यवज्ञेयो गुरु र्भवेत् ॥ नच माता
नच पिता मन्यते यादृशो गुरुः ॥ ५ ॥ न ते ह्यवमान-
मर्हन्ति न तेषां दूषयेत्कृतम् ॥ गुरूणामेव सत्कारं

बिदुर्देवा महर्षिभिः ॥६॥ उपाध्यायं पितरं मातरं च ह्यतिद्रुह्यन्ते मनसा कर्मणा वा ॥ तेषां पापं भ्रूणहत्या-विशिष्टं तस्मान्नान्यः पापकृदस्ति लोके ॥७॥ इत्यादि।

एक समय में श्रीस्वामी जी महाराज अपने स्वस्थान में प्रीतम पसन्द प्रियतमानुरागावेश पूर्बक पीतबस्त्र धारण किये कई एक सत्पुरुष समेत आनंद सहित बिराजे रहे उसी समय में एक पंडित बिष्णुदत्त नामक सुंदर स्वभाववाले बेदांत शास्त्र में और ब्याकरण में अत्यन्त निपुण और कुछ कुछ विषय सर्व शास्त्र के जानने वाले महाराष्ट्र देश के रहने वाले, जिन पंडित को यजुर्वेद की समग्र संहिता कंठ वह पंडित शास्त्री यजुर्बेदी ब्राह्मण रहे सो आय के श्रीस्वामी जी महाराज को प्रणाम करिके आज्ञा पाय बैठ जाते भये और श्रीमहाराज जी से प्रार्थना पूर्बक प्रश्न करते भए। शास्त्री विष्णुदत्त जी ने यह कहा कि हे स्वामिन् मैंने उपनिषदतथा ब्रह्मसूत्र शारीरक भाष्य श्रीगीताभाष्य अर्थात् प्रस्थानत्रय मैंने सम्यक् तथा प्रकरणादि अनेक ग्रन्थ अध्ययन किया और श्रवण किया यथाशक्ति मनन निदिध्यासनादि नित्य कुछ किया करता हूं तथापि मेरे मन को परितोष नहीं होता इसलिये आप ऐसा कुछ अनुग्रह करैं जिस्से

मेरा चित्त शान्त होवे।हे भगवन् "साधवो दीनवत्सलाः" इस आप्तवाक्य को भी मैं बहुत काल से सुनता आताहूं जब इस प्रकार से उस पंडित ने श्रीस्वामी जी से प्रणय पूर्बक प्रार्थना करी तब श्रीमहाराज जी ने कहा कि तुम्हारी निष्ठा किस पदार्थ में विशेष है यह कहि के मंद मुसकान होकर श्रीमहाराज जी ने कहा कि सत्य कहो पुनः पूर्बोक्त पंडित ने कहा कि विशेष बेदान्त ही में रुचि है। श्रीस्वामी जी ने आज्ञा किया कि अति उत्तम है देखिये वेदांत में प्रथम तात्पर्य्य निर्णय में षटलिंग प्रमाण है सो यह है श्लो० उपक्रमोप संहारावभ्यासो पूर्वता फलम्॥ अर्थवादोपपत्तोच लिंगं तात्पर्य्य निर्णये ॥१॥ सदेव सौम्येदमग्र आसी दित्युपक्रमः, एतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मेति उपसंहारः, असकृत्तत्त्वमसीत्यभ्यासमान्तरागम्यत्वमपूर्वत्वम्, एक विज्ञानेन सर्वविज्ञानं फलम्, सृष्टिस्थिति प्रलय प्रवेश नियमनानि चार्य्यवादा मृदादिदृष्टान्तानामुपपत्तयः एतैर्लिंगैर्ब्रह्मपरत्वं निश्चयम्॥ इतिषट्लिंगानि ।

जब उद्दालक ऋषि के आज्ञा से श्वेतकेतु जी उद्दालक जीके पुत्र चौबीस बर्ष में सर्वांगवेद वेदान्त पढ़ि के पिता उद्दालक जी के पास साभिमान पूर्वक आये तब पिता

उद्दालक जीने कहा कि यह तो महापंडिताभिमानीमूर्ख प्रतीत होता है उद्दालक जीने कहा कि बेटा तू महा अनम्र अभिमान्नी हो गया इसका क्या हेतु है यह बात कहके पुनः इस बचन को पढा। उत्तमादेशमप्राक्ष्यो येना श्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं ज्ञातमिति॥ उद्दालक जी ने कहा कि वह बात तुमने जाना जिसके जाने से सब जाना जाता है। श्वेतकेतु जी ने कहा यह हो नही सक्ता कि एक बात जानने से सब कुछ जाना जावै॥ उद्दालकजी ने कहा कि अवश्य एक बस्तु जानने से सब कुछ जाना जाता है परन्तु बुद्धि शुद्ध होना चाहिये जैसे एक मट्टी के जानने से जितने मट्टी के बर्तन हैं सब में प्रतीति होती है कि निःसंदेह यह सब मृत्पात्र मट्टी हैं जैसे एक लोहा के जानने से जितने शस्त्र छोटे बडे हैं छूरी से लेकर बंदूक तोप तक लोह प्रतीति होते हैं इसी प्रकार यह जो श्रुति है 'सदेव सौम्येदमग्र आसीत्' सत जो परमात्मा देव सर्वशक्तिमत् बिशेषणों करिके जो बिशिष्ट एक मेवाद्वितीयम् अर्थात् प्रथम एकही सत पुरुष नियंता अर्थात् सर्बशक्तिमान अनन्त नाम रूप का बिभाग नही कर्ता हुवा महाराज सर्वेश्वर सब कुछ करनेवाला अकेलाही सा प्रतीति होता भया अर्थात् सेवाय उसके

और कोई अधिष्ठान अर्थात् आश्रय नही दूसरा जी कहा जाय। वही महाराज जब लोकरमण अर्थात् खेल खेलने की इच्छा भई तब अनंत नाम रूप गुण सत्व प्रवृत्ति निर्मित करिके अनन्त रूप रचना चमत्कार करिके वही सत शब्द परमात्मा श्री रामचंद्र महाराज सृष्टि करिके रमण करते भये अनन्त स्थावर जंगम जड चेतन ईशानीश के मालिक होके आप तो महाराजाधिराज रमण करने करावने हारे हो करिके सर्वाधिपति अयोध्याधिपति बनते भये और अनंत जडाजड को खेल खेलौना रूप रचिके अपनी प्रजा स्थापन करते भए। तात्पर्य्य यह है कि जब अनंत लीला करते हैं तब प्रगट नाम रूपाभाव होके खेलते हैं जब प्रगट होते हैं तब अनंत नाम रूप प्रादुर्भाव होके सृष्टि रूप होके रमण करते करावते आनन्द करते हैं। यही आशय समझ के श्री शंकराचार्य्य जी महाराज ब्यासदेव जी के सूत्र पर जो शारीरक भाष्य निर्माण किये हैं उसी शारीरक भाष्य में प्रथमाध्याय मे द्वितीय पाद के बिंसतिवाँ सूत्र जो है उसके व्याख्यान मे कुछ लिखा है सो सूत्र यह है। अर्भकौकस्त्वात् व्यपदेशाच्च नेति चेन्न निजाप्यत्वादेवं व्योमवच्च ॥१॥ भाष्य यह है—यथा समस्तबसुधाधिपतिर

पिहि सत्वयोधिपति रिति व्यपदिश्यते । बहुत व्याख्या किये हैं इसी पर एक आख्यायिका है जब शंकराचार्य्य जी महाराज सूत्र पर भाष्य बनाया पश्चात बद्रिकाश्रम गए श्री शंकरस्वामी को शिवांश जानि के श्री व्यासजी ने दर्शन दिये श्री शंकरजी ने कहा के अगर आप मुझ पर प्रसन्न भये होवैं तब इस भाष्य को आप प्रमाण कीजिये तब श्री व्यासदेव जी ने कहा कि श्री हनुमान जी से शोधन करा लीजै तब प्रमाण भूत है देवप्रयाग में श्री शंकरस्वामीजी के छ महीना अनुष्ठान करने से श्री अंजनीनंदन जू प्रगट भये श्री शंकर जी ने प्रार्थना किये कि हे श्री रामचंद्रप्रिय इस भाष्यरचना परिश्रम को आप स्वीकार करिये तब श्री हनुमान जी ने कहा कि श्री सीतारामाभिराम गुणगण श्रवण संकीर्तन से हम को सावकाश नही है तब तो श्री शंकरजी ने उदास होके कहा मेरा यह परिश्रम व्यर्थही हुवा, तब परम कृपाल श्री पवनात्मज जी हँस के कहा कि भला इस ग्रन्थ मे माधुर्य्य लीला श्री दशरथराज कुमार का भी कुछ निरूपण है श्री शंकरजी ने कहा कि यह तो निर्विशेष ब्रह्म अद्वैत वाद है परन्तु एक सूत्र की व्याख्या मे जो सूत्र भाष्य पूर्व कहा है कि जैसे परं ब्रह्म परमात्मा सर्वगत सर्वाधार

पूर्ण और न्यूनन में वह महाराज व्यापक और नियंता हैं जैसे श्री रामचन्द्र जी महाराज सर्ब देश के मालिक और हाकिम हैं तथा श्री अयोध्याजी के भी अयोध्याधिपति बसुधाधिपति सर्वाधिपति हैं । जब श्री शंकर स्वामी जी महाराज गद्गद कंठ होके श्री रघुनंदन जू को परात्पर परं ब्रह्म परमेश निरूपण करते भए तब तो श्री हनुमान जू ने कहा इस शारीरक सूत्र भाष्य ग्रन्थ के प्रगट होने मे कुछ संशय नही है परन्तु इस ग्रन्थ के ज्ञाता दो प्रकार के होंगे एक तो सबिशेषोपासक तथा दूसरे निर्विशेषोपासक । तात्पर्य्य यह है कि उपासना देश ऐसा दुरूह है कि इसमें न तो पाण्डित्य चलती है और न बुद्धि वैभव चलता है केवल उपास्य की अनुग्रह मुख्य हेतु है जैसे यह श्रुति भगवती कहती है-नायमात्मा प्रबचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन । यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा वृणुते तनुं स्वामिति ॥ अस्यार्थः-यह आत्मा जो परमात्मा सर्वोपास्य श्री रामचंद्र जी महाराज हैं सो प्रबचनेन नाम सूत्र भाष्य आदिक जो बहुत पढना बिचारना है इस्से नही मिलते क्योंकि बहुत पोथी पढने वालों को ऐसा अभिमान होता है कि वह लोग पूर्वापर बिचार भूल के केवल न पढने वालों के दोषही को

देखा करते हैं इसी अहंकार करके अपने इष्ट से दूर होजाते हैं और न मेधया बहुत बुद्धि के चमत्कार से भी नहीं प्राप्त होते हैं इसमें भी अभिमानही कारण है और न बहुना श्रुतेन तथा बहुत से लौकिक वैदिक पदार्थ जानने से भी नहीं प्राप्त होते जब कि विद्या पढ़ने से तथा बुद्धि वैभव से इष्ट प्राप्ति नहीं होती तब फिर वह स्वामी कैसे मिलैंगे श्रुति भगवती कहती है 'यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः' जिस उत्तमाचरण वाले भक्त को वह चाहते हैं उसी को प्राप्त होते हैं तिसमें दृष्टान्त कहते हैं पतिंवरा की नाईं, जैसे राजकुमारी स्वंयम्बर में जैमाल लिये हुए फिरती है जिस पुरुष को अपने अनुरूप पति होने के योग्य देखती है उसी पुरुष को जयमाल पहिराय देती है तिसी तरह सर्वोपास्य जी श्रीरामचन्द्र जी महाराज हैं जिस भक्त को अङ्गीकार करते हैं उसी को "स्वां तनु विवृणोति" देखा चाहिये श्रुति भगवती तनुं कहती है तनु शब्द प्रसिद्ध शरीर वाचक शब्द है अर्थात देही देह विभाग रहित जो परममङ्गलमय विग्रह है उस प्रेमी भक्त के आधीन कर देते हैं। 'अहंभक्तपराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विभुज' इत्यादिक बहुत प्रमाण हैं इसी अर्थ को श्री बाबा नानकशाह जी इस दोहा में कहा है॥साखी॥ रूप न रेष न रङ्ग कुछ तिर-

गुण ते प्रभु भिन्न ॥ तिसै बुझाये नानका जिसु होवैं सु प्रसन्न १ यद्यपि सर्वोपास्य श्रीरामचन्द्र जी महाराज त्रिगुणातीत हैं तौ भी अपने प्यारे भक्तों को ऐसे सुलभ होजाते हैं कि उस भक्त को प्रेमानन्द में ऐसे हर्षित करते हैं कि उस प्रेमी भक्त को प्रेमाधिक्य से कुछु परिश्रमही नहीं मालूम होता जैसे स्वकीय कुटुम्ब तैसही होते हैं इस प्रकार श्रीस्वामी जी महाराज जब उपदेश द्वारा कृतार्थ करते भये तब वह पण्डित महात्मा श्रीमहाराज जी की बड़ी बड़ाई व स्तुति किये हैं परन्तु वह स्तोत्र कहीं खोगया सो एक गुर्वष्टक मेरी तरफ़ से श्रीस्वामी जी निर्माण कराये हैं सो यह है ॥श्लोकाः॥

बन्दे गुरुं जगद्वन्द्यं वेद वेदाङ्ग पारगम् ।
मायातीतं महात्मानं परमानन्द कारणम् ॥१॥

वन्दे संसारसारं सुखनिधिममलं शान्तिदं सौख्यसारं
संवन्धेनामनन्ति प्रमुदितहृदयाः शास्वताः शान्तचित्ताः॥
अज्ञानां ज्ञानरूपं गतिमगतिगतां भावनं भावुकानां नी
तिज्ञानां सुनीतिं रसमरसविदां श्रीगुरोः पादपद्मम् ॥२॥
भवतु भव्यमथो तव सांप्रतं यदि गुरोरवलम्बनमानसे ॥
हृदि विकाशतया सुखमद्भुतं विगतमानमपारमवाप्यते
॥३॥ हे कल्याणनिधे महाशयविभो श्री जानकीशप्रद
हे तापत्रयपापनाशन कृपापीयूषपूर्णाम्बुधे हे ॥ दीनार्ति

महान्धकार सवितर्मायामनुष्याकृते मह्यं दीनहृदे मलीन मतये प्रीतिं स्वकीयां दद ॥४॥ नमःसुन्दरेशं परेशं महेशं प्रकृत्यन्धकारघ्नप्रोद्यद्दिनेशम् ॥ सदा ये भजन्तीह भक्त्या भवन्तं मनोभीष्टमापूर्णतातूर्णमेति॥५॥नमःशुद्धाय बुद्धाय गुरवे परमात्मने ॥ शिष्यानां सुखरूपाय शान्ताय शिव रूपिणे ॥६॥ यदा दृष्ट्वा रामभद्रो जीवान् दुःखार्णवे गतान् ॥ तदा वै गुरुरूपेण प्रादुर्भूतोऽभवत्प्रभुः ॥७॥ तस्मात्सर्वात्मभावेन गुरुमेवाश्रयेत्सुधीः॥ अनायासेन तस्याशु महान्मोदः प्रजायते ॥८॥ गुरोरष्टकं ये पठन्तीह भक्त्या न तेषां कदाचित् भवेद्भावहानिः॥ प्रतुष्टो महाराजराजोपि तेषां हरीरामभद्रोऽखिलेष्टंददाति ॥९॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्वमूर्ध्नि श्रीगुरुं स्मरेत् ॥शांतं सदानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञान स्वरूपं निजभावयुक्तं योगीन्द्रबन्द्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरं नित्यमहं भजामि ॥१०॥ बत्सरे द्विगुणाङ्केन्दौ १९३२ चान्ते शुक्लेऽद्रिशुक्रयोः॥ जानकीशप्रयत्नेन गुरोरष्टकमीरितम् ॥११॥ श्री जानकीवरशरणप्रणीतम् श्रीमद्गुरोरष्टकम् ॥

कवि [illegible]

एक समय एक पंडित कवि जी आये स्वामी पासा। छंद प्रबंध अलंकृत रचना वैभव बुद्धि प्रकासा॥ वह कबि पंडित स्वामी जीको जबही दरसन पायो । कृत्य कृत्य व्है नाचन लाग्यो पुनि यह कबित बनायो॥ क-

बित्त कबिकृत ॥ सन्मुख होत जाके आनंद उदोत होत मिटत कुअंक भाल रंकन की नकशैं । पावन पदुम पद परम पराग परे फैलति प्रभाव भूरि संत कबि शकशैं ॥ दूर होत जनम अनेकन की बाधा दीह मिटति अशेष भानु नंदन की अकशैं ॥ श्री युगल अनन्य शरण सेवकन मंडलन अखंडल की साहिबी कमंड से वक़शैं ॥१॥ दोहा ॥ गुरु गरिष्ठ गरिमागलिर गिरा ज्ञान गोतीत ॥ रम्यगम्य पावै सोई जग से होय अतीत ॥१॥ जगत खेल खेलै नहीं मेलै मन मन पार ॥ झेलै दुख सुख व्यथा की गुरु लायक दरबार ॥२॥ गुरु दरबार बिशालता रहै दुरवार वे अन्त ॥ पहुंचै तिनकी कृपा से लहै मोद मुद मन्त ॥३॥ बहुत ज्ञान ज्ञानी कथै ध्यानी लावै ध्यान ॥ छोडि सकल अभिमान जग गुरु पद पावै मान ॥४॥ देववत्यो गुरून् पश्येत् अप्रमत्तो ऽधिकारवान् ॥ सएव ब्रह्म विज्ञानं फलवत्प्राप्नुयान्नरः ॥१॥ जो शिष्य सावधान हुवा परं ब्रह्म के सदृश श्री देव देवता गुरू देव जू को देखता है सो भाग्यवान है और यथार्थ परं ब्रह्म परमात्मा श्री रामचंद्र जू महाराज को सोई प्राप्त होता है ॥ गुरुं यो मानवैरन्यैः समं पश्यति मोहतः॥ न तस्यास्मिन् भवे लोके सुखं नैव परत्र च ॥२॥ जो सामान्य रीति से मनुष्य की नाई श्री गुरुदेव को

जानता है उस मूढ को न इस लोक मे सुख होता है न मरे पीछे ठेकाना लगता है ॥२॥ कर्मणा मनसा वाचा गुरुं योवाऽवमन्यते ॥ सयाति नरकान् घोरान् महा रौरवसंज्ञकान् ॥३॥ अस्यार्थः। जो कोई मनसे या बचन से अथवा शरीर से श्री गुरु परमात्मा का निरादर करता है सो घोर नर्क जो रौरव जिसमे कीडे रात दिन काटते रहते हैं उसमे जाता है ॥३॥ एकाक्षर प्रदातारं यो गुरं नैव मन्यते ॥ स मूढो नरकं याति यावदाभूतसंप्लवम् ॥४॥ एकाक्षर मंत्र से लेके असंख्याक्षर मंत्र तक जिस गुरु परमात्मा से श्रवण करता है तो भी उपदेष्टा में गुरुत्व बुद्धि नही होती सो महा प्रलय पर्यन्त नर्क बास करता है ॥४॥ कृतघ्नानां हि ये लोका ये लोका ब्रह्मघातिनाम्॥मृत्वा तान् अभिसंयाति गुरुद्रोह परो नरः ॥५॥ जिस लोक को कृतघ्नी जाता है अर्थात् ब्रह्म हत्या गोहत्या आदि जो पाप है सो प्रायश्चित करने से शुद्ध हो सक्ता है परन्तु कृतघ्नी जो हैं उपकार न मानने वाले को कहते हैं उसकी गति नही होती जो उसकी गति है सोई गति गुरुद्रोही की होती है ॥५॥ अत्र सर्वासु विद्यासु कारणं गुरुरीरितः॥ यथा शिवस्तथैवायं पूजनीयः प्रयत्नतः ॥६॥ शिवेरुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे शिवो नहि ॥ शिवादप्यधिकं

तस्मात् गुरुं यत्नेन पूजयेत् ॥७॥ अहं मानादिदोषेण स्वगुरुं योऽवमन्यते ॥ प्रायश्चितं न तस्यास्ति लोकेऽस्मिन् पापकारिणः ॥८॥ ब्रह्महत्यादिपापानां दृष्टा शास्त्रेण निष्कृतिः ॥ गुरुद्रोहस्य नैव स्या त्क्वापि शास्त्रे प्रदृश्यते ॥९॥ भगवत्का अपराध श्री गुरु देव सेवन से निवारण हो सक्ता है परन्तु गुरु अपराध भगवत भी नही दूर कर सकते हैं ॥७-८॥ ब्रह्म हत्यादि पाप का प्रायश्चित्त शास्त्र द्वारा हो सक्ता है गुरु द्रोही का उद्धार होना कठिन है॥९॥ब्रह्मघ्नादधिकोज्ञेयः कृतघ्नोमनुजोभुवि॥ गुरुद्रोही ततोपि स्यात् अधिकोयं नराधमः ॥१०॥ अर्थ-ब्रह्म हत्या ऐसे अधिक पापी कृतघ्नी ते अधिक गुरु द्रोही होता है ॥१०॥ गुरु र्माता पिता वापि गुरुर्दैवमुदाहृतम्॥गुरु र्वंधुः सखा तद्वत् न गुरोरपरः सुहृत् ॥११॥माता पिता बंधु सखा देवता ए सब कोई भी गुरु के समान हितकारक नही ॥श्लो०॥ गन्तव्यो गुरुरेवात्र स्वात्म ज्ञानेन देहिना ॥ ततो गुरुरवज्ञानात् आत्मनः कुरुतेत्विमम् ॥१२॥ अर्थ॥ देहधारी को श्री गुरु देवही जाने के योग्य हैं और गुरु देव अवज्ञा होने से आत्मा की अवज्ञा हुई तबतो देह धरने का कुछ लाभही न भया॥१२॥ ॥श्लो०॥ आत्मन्यस्मिन्नवज्ञाते विश्वावज्ञा कृता भवेत् ॥ अवज्ञा वध उद्दिष्टः शस्त्रशून्योतिदारुणः ॥१३॥ जब

आत्मा का तिरस्कार हुवा तब तो सर्ब बिश्व का तिरस्कार हो चुका तब शास्त्र उच्छेद हुवा तब तो दारुण प्रत्यवाय का भागी भया अर्थात् नास्तिकता जो परमेश्वर बिरोधी सर्वोच्छेद भाव को प्राप्त भया ॥१३॥ हतः शस्त्रात् क्षणं दुःखं प्राप्नुयाद्वा न वा पुमान् ॥ अवज्ञया हतो दुःखं यावज्जीवं स गच्छति ॥१४॥ बिश्व दुःख कृतः कस्य शुभं पुंसो भविष्यति ॥१५॥ किंबहूक्तेन संक्षेपात् गुरुभक्तिं वदाम्यहम् ॥ करणीयमिदं स्वात्म सुखकामेन सर्वदा ॥१६॥ अभीष्टदेववन्नित्यं गुरु भक्तिरहर्निशं ॥ कुर्वतो जायते चायं पुरुषार्थोधिकारिणः ॥१७॥ यस्य देवे परा भक्ति र्यथा देवे तथा गुरौ ॥ तस्येमे कथिता ह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः ॥१८॥ एते वेदोदिताः सर्वे पुरुषार्थाश्चतुर्विधाः ॥ गुरुभक्तस्य हस्तस्थाः भवन्त्यत्र न संशयः ॥१९॥ ब्रह्मचर्य्यादिके यद्वदप्रमत्तोत्र साधने ॥ वर्तते गुरुभक्तौ च वर्तितव्यः तथैव हि ॥२०॥ तद्भ्रेषेपि च संतुष्टे गुरौ नास्ति भयं ततः। प्रायश्चित्तादिह्युपाये नयत् देव विशोषयेत् ॥२१॥ गुरुभक्तेस्तु विद्वेषे गुरो विमुखतांगते ॥ प्रायश्चितादिकं नैव तत्र किंचन विद्यते ॥२२॥ प्रायश्चित्तादिकं नैव तत्र किंचन विद्यते ॥ गुरौ विखमुतां याते विमुखाः सर्ब देवताः ॥२३॥ भवंति क्रियमाणं च पुण्यं पापं हि जायते॥

तस्मात्सर्वात्मना सर्वैश्चतुर्विधफलार्थिभिः ॥२४॥ देववन्नित्यमेवायमर्चनीयो ऽप्रमादिभिः ॥ शान्तादिगुणसंपन्नैः किमन्याश्रमवासिभिः ॥२५॥ तत एव भवन्तोपि गुरुं यान्तु मुनीश्वराः ॥ इत्यभिप्रायवान्मौनी स श्वेताश्वतरोऽभवत् ॥२६॥ ज्ञात्वा ते यत्तपस्तस्य चित्तमुक्तं च धीमतः॥ अभिनंद्य यथान्यायं सर्वे स्वान् २गुरून्ययुः॥२७॥ सर्वे स्वान् स्वान् गुरून् ययुः इत्युक्तम्। इससे यह अभिप्राय हुवा कि काल कर्म गुण स्वभाव के विपर्य्यय से अपने गुरु स्वामी विषे यथार्थ भाव प्रीति मे कुछ बीच पर गया हो तब उचित यही है के श्री गुरुदेव महाराज मे परातपर बुद्धि करिके उनको सेवन करै ॥ जय जय श्री गुरु पद महराज। सेवत जाहि सारदा गणपति देव देव सुरराज ॥ जाहि मनावत गावत निसि दिन ऋषि मुनि सहित समाज । जानकीबर से यही मनावत शरण गहे की लाज ॥१॥ हम धारैं गुरुपद रज टीका। जो धारे विरंचि पद पावत गावत सज्जन टीका॥ वेद पुराण बिचारि सराहत मत यह सब से नीका। जानकिबर नित शरण मनावत गुन गावत प्रभु जी का॥२॥ आख्यायिका ॥दोहा॥ निश्चै अवध निवास जब भयो महा प्रभु चित्त ॥ श्री लक्ष्मण बर कोट पर राजत हर्षित चित्त ॥१॥ रीवां देश सुदेस को दीन बंधु दीवान॥ राज्य

पूज्य पदवी जिन्है दीन्ही श्री भगवान ॥२॥ तासु तनय
बिद्या निपुण लक्ष्मीनाथ प्रधान ॥ सो स्वामी को शिष्य
भो प्रीति नीति अनुमान ॥३॥ मंदिर हेत सु प्रार्थना
बहुत कियो हरषाय ॥ मानत नहि काहू यतन प्रभुहि न
लोक सोहाय ॥४॥ बोले प्रभु दीनार्तहर सुनो बचन दे
कान। प्राकृत रचना कबहुं नहि कतहु न मोहि सोहान॥५॥
यह श्री अवध सुदिव्य तर भव्य नव्य नित सोह ॥
राजत साजत अमल भल बिगत काम मद कोह ॥६॥
इनकी महिमा जान जब द्रवे जानकीनाह ॥ नत उपाय
अनेक करि नहि पावत कोउ थाह ॥७॥ यद्यपि कर्मक
षाय बहु जनमत मरत अनेक ॥ अवध बसत बाधा
मिटत उपजत अचल बिबेक ॥८॥ इहां बसत पुनि
तजत तन सो जग मरत न आय ॥ निरबासिक बासिक
सकल निश्चै हरि पुर जाय ॥९॥ नेम सहित जो रहत
इह ठांव गांव हर्षाय ॥ देखत रचना अवध की जगत न
ताहि सोहाय ॥१०॥ पशु पक्षी अरु लता तरु नर नारी
हरि रूप ॥ रघुबर खेलत सबहि सन मानि आपको
भूप ॥११॥ यद्यपि देखत सुनत जग जस मायिक व्यवहार ॥ तदपि अवध निरबधि अवध बिगत प्रपंच
बिहार ॥१२॥ सोहत सुभग सोहावनी रचना दिव्य दुरंत॥
अवध सरिस है अवध इह दूसर नहि निरखंत॥१३॥

इनहि देखि नहि लखि परत अपर महत्व परत्व ॥ श्री मुख आप बखानहीं महाराज परतत्व ॥१४॥ मंगल मरन सोहावनो पावन प्रीतम धाम ॥ मिटत कल्पना जल्पना भावत सीताराम ॥१५॥ धन्य बसत जे जन इहां धन्य लहत बिस्राम ॥ तिनके चरन मनाइये पाइय अबिचल धाम ॥१६॥ चौ० बन्दौं अवध धाम के बासी। रहत सदा जे खास निवासी ॥१७॥ बन्दौं स्थावर जंगम जेते। प्रभु मानत आपन करि तेते ॥१८॥ गनत नाहिं तिनके हरि दोषा।जानि अपनपौ त्यागत रोषा ॥१९॥ बेद बिरुद्ध आचरन फीका। अवध बसत मानत प्रभु नीका ॥२०॥ गनत दोष नहि तिनके स्वामी। रहत निरंतर प्रभु अनुगामी २१ जयति जयति जय ज्ञान बिकासिनि। जयति जयति आनंद निवासिनि २२ जयति जयति सब पुरियन रानी। जयति जयति सत्या महरानी ॥२३॥ जयति जयति सब तीरथ वंद्या। जय जय जय सब लोक अनिंद्या २४ जय जय जम कल्याणी सुभागा ॥ जयति जयति जेहि ध्यावत दुरगा २५ जैति जैति सब तीरथ जननी ॥ मंगल करनि अमंगल हरनी २६ नमो नमो आनंद निबासिनि ॥ नमो नमो आनंद बिकासिनि २७ नमो नमो रघुबंश बिलासिनि ॥ नमो नमो गंगादिक गुरबी ॥ नमो नमो श्री भूषन उरबी २८ नमो नमो सब

दोष बिदारनि ॥ नमो नमो सब गुनकी कारनि २१ ॥ दो० ॥
सत्या बिमला जे कहत निशिदिन पावत छेम ॥ जपत
अयोध्या नाम जे हारत कबू न नेम १ ब्रह्मा बिष्णु
महेश जेहि ध्यावत गावत नाम ॥ भयो नाम यहि हेतु
ते जयति अजोध्या धाम २ हे सत्ये हे नंदिनी हे
बिमले हे देबि ॥ मोहि उबारो जगत से निशदिन सेवन
सेबि ३ प्रभु जो कह्यौ यह जान कोउ कोउ कोउ जानन हार
सो जनाय जब देहु प्रभु तबहि होय निरधार ४ जब तक
धाम निवास नहि भटकत देश बिदेश ॥ कृपा करहिँ
जगदीश जब पावत धाम नरेश ॥ ५ ॥ वार्त्तिक ॥

जब श्री स्वामी जी महाराज इस प्रकार श्री अयोध्या जी का परत्त्व कहते कहते आनंद मे आय प्रार्थना रकते भये

पद ॥ कबहुँ हिराहौ जग जहर । सुनिये श्री सुख सुधा सौपन देखिये दृग मेहर ॥ जन्म जूथन से बढ्यो चित लोभ लालच लहर । एक पल कल देत नाही कठिन कारन कहर ॥ बिपुल बासर करि थक्यो बहु बिधि उपायन नहर । तदपितिल सीतल न तन मन पस्यौ संकट सहर ॥ जानकी वर शरण असरण हरण दुख दव दहर । जानि युगल अनन्य निज अपनाइये बसु पहर १ जब श्री महाराज भक्त बत्सल जू मंदिर बनना नहीं पसंद किये तब श्री पांड़े दीनबंधु दीवान रीवाँ बहुत खेद युक्त हो बचन

बिनती करने लगे और कहा के हे आरत हरण मंदिर ठाकुर जी का बनजान दीजै जिसको आप चाहै देदीजै इसी प्रकार और नेमी प्रेमी शिष्य लोग सबों ने श्री महाराज साहेब के निकट आयके प्रार्थना मिन्नत अर्ज करते भये कि हे दीनदयाल हम सब को अवलंब हो जायगा जब इस प्रकार से सब लोग अत्यन्त दीनहो के बारंबार मिन्नत किए और खेद युक्त होके बचन सुनाने लगे तव परम दयाल करुणासागर मंद मुसक्यान कर के कहा कि बहुंत अच्छा जैसा मन होय तैसा करो हम प्रसन्न हैं ऐसे मनोहर बचन सुनि के सब लोग हर्षित होगए सम्बत उन्नीस सौ बाइस १९२२ में श्री लक्ष्मण कोटपर श्री सीताराम जी महाराज के मंदिर की नीँव प्रारम्भ भई जब श्री सीताराम मंदिर तैयार भया बड़े धूम धाम से मंदिर की प्रतिष्ठा भई समूह बेषका भण्डारा भया कई हजार मनुष्य भोजन पावते भये बड़ा आनंद प्राप्त भया उसी समय में एक बैष्णव यह कवित्त आयके सामने पढ़ा ॥कबित्त॥

तीनों ताप तपनि निरासन विकाशन सुजान जनकुमुद बिमोह तम हारी है। सीताराम अभिराम चरण सरोज द्वंद निपट सनेह क्षीरसिंधु अवतारी हैं ॥ रामरस सानी बरबानी चांदनी बिलाश चराचर सकल जहान

उजियारी है । श्री युगल अनन्य तेरी पुण्य यश पूर चंद अंकित चकोर दिन रैन सुख कारी है १ इस प्रकार से अनेक सुयश सरस प्रकाश करते अनेक सत्पुरुष सत्संगानंद मे आनंद करते भये ॥ दोहा ॥ श्री गुरु देव दयाल प्रभु दीनानाथ कृपाल ॥ दीन जानि मोहि द्रबहु प्रिय मेटहु जग जंजाल १ स्वामी युगल अनन्य प्रभु प्रभुता समता रूप ॥ आनद घन दानी दयासागर नागर रूप २ चिदानंद मंगल भवन मन भावन सर्बज्ञ ॥ कर्म उपासन ज्ञान प्रद अज्ञ सम्हारन यज्ञ ३ सीताराम उपासना बिगत बासना धेय ॥ ज्ञेय मेय अनुमेय दृढ ज्ञेय प्रमेय सुदेय ४ तुम से जाची तुमहि को का मागौ प्रभु और ॥ दीजै कीजै अमन मन लीजै अपनी दौर ५ प्रीतम प्राणाधार से नेह नगारा बाज ॥ गाज परै यहि लाज पर सजै और जो साज ६ नहि साधन नहि सुमन प्रभु नहि सुकर्म नहि धर्म ॥ शर्म धोय कुल पियो मैं जहां जावं तह धर्म ७ बनत न एक बनाव कछु नहि आवत कछु दांव ॥ केबल मोहि भरोस तव एक बचन को ठांव ८ प्रभु मुख से बानी कढ़ी है नेह रसाल ॥ सीता पद पंकज सरस यही भरोस बिशाल ९ आयुष बीती जात है देर न कीजै नाथ ॥ होय नेह तव पद कमल कीजै प्रभू सनाथ १० ॥ सो० ॥ कछु नहीं बनत बनाव

नाव पुरानी गुण बिना ॥ हार्यो चहत सुदाँव काढ़ि जितावो हौं दुखी ११ ॥ दो० ॥ सीताराम कृपाल प्रभु दीनानाथ दयाल ॥ दीन जानि मोहि द्रबहु हरि मेटहु जग जंजाल १२ स्वामी जुगल अनन्य प्रभु प्रभुता समता रूप ॥ आनद घन दानी दया सागर नागर भूप १६ चिदानंद मंगल भवन मन भावन सर्बज्ञ ॥ कर्म उपासन ज्ञान प्रद अज्ञ सम्हारन यज्ञ १४ सीताराम उपासना बिगत बासना धेय ॥ जेय मेय अनमेय दृढ ज्ञेय प्रमेय सुदेय १५ ॥ सो० ॥ बन्दौं आनद कंद रघुनंदन गुरपद्मपर॥ नित्य सच्चिदानंद बिलसत बिज्ञ बिलास बर१ सुंदर परम कृपाल मन भावन पावन सुघर ॥ दीनानाथ दयाल हरत दुसह दुख सुख सुकर २ कोशल खंड पुनीत रीति सुरीति कुरीति हर ॥ प्रीति प्रतीति बिनीत साम बेद उद्गीथ यश ३ ॥ दोहा ॥ कोशल राज किशोर घर श्री मिथिलेश किशोरि ॥ कोशल खंड सुग्रंथ मे राश बिलाश अथोरि ४ सीताराम उपासना उज्वल बर बिज्ञान ॥ सुखद बिसद सिद्धान्त तर समुझहि सुमति प्रधान सीताराम उपासना बन्दौं बारंबार ॥ जाकी कृपाकटाक्ष ते लहि उपास्य निरधार ६ श्री सरजू सरिताम्बरा गंगा यमुना इष्ट ॥ जानत रसिक रसज्ञबर इह रहस्य अति मिष्ट ७ धन्य अयोध्या धाम है धन्य अयोध्या

नाम ॥ धन्य अयोध्या रसिकबर धन्य श्री सीताराम ८
श्री बिलाबर बास करि शाक पात जे खात ॥ तिन के
भाग्य समूह लखि ब्रह्मादिक ललचात ९ हम न भए
श्री अवध मे यही रही मन आस ॥ नित प्रति निरखत युगल
छबि करि श्री सत्याबास १० ॥ सो० ॥ जयति संत
सिरताज तजि पर औगुन नीर को ॥ क्षीर गहत मह
राज हंस संतकी रीति अस ११ सब सो राखत प्यार
मान बिगत नित रहत हैं ॥ संतन पर बलिहार बार बार
बन्दौं सुपद १२ युगल चरण मे प्रीति अति कृपाल
संतोषरत ॥ कोमल बचन विनीत उदासीन सब सो रहत
१३ ॥ दोहा ॥ ऐसे संत महान जे निपुन भावना ध्यान ॥
मगन रहत नित भजन में बिगत मान अपमान १४
सब सो सरल स्वभाव कपट गांठि मन में नही ॥ लगी
किनारे नाव ऐसे संत पुनीतकी १५ निश दिन भ्रमर
समान सीताराम सुपद कमल ॥ कभू न होवै हान तिनसो
मिले उमंग नित १६ बन्दौं मिथिला धाम सोहाबन पावन
परम प्रकाशी ॥ श्री जनक नंदनी पुरी मनोहर बेद
थली रसराशी १७ सेवन करत रहत निसि बासर मथुरा
माया काशी ॥ प्रीति लताकी स्वामिनि सीता केलि
करत सुखमासी ॥१८॥ श्री जनकलली की जन्म भूमि
यह मिथाला पुरी बिराजै ॥ तीरथराज क्षेत्र ऊखर नवधा

आदि मंगल मय साजै १९ ब्रम्ह लोक शिव लोक आदि के मंगल बाजा बाजैं ॥ प्रीति लताकी स्वामिनि सिय जू भूषण बसन सखी लखि गाजैं २० ॥पद॥ जनक पुरी जय जय श्री मिथिला । दरस परस जेहि नामहु सुमिरत पाप होत सब सिथिला ॥ सुख कारन निशि बासर ध्यावत करत जतन बहु कितला । श्री मिथिला बसि सिया राम मंजु प्रीतिलता नित चितवत चितला १९ ॥ दो० ॥ प्रीतम छबि अद्भुत बनी ठनी सलोनी चाल ॥ पेंचदार कँलगी लशत प्रीति लता उरमाल १९ मंद मंद मुसक्यात दोउ प्रीतम प्रिया अनूप ॥ बिहरत कुंज निकुंज प्रति श्यामल गौर स्वरूप २० दखि युगल छबि परस्पर सखियन चित अति चाव ॥ अलक सुधारत कोउ सखी हृदय लगावत पाव २१ ॥ चौ० ॥ कोउ सखि उबटि लगावत प्यारी । प्रीतम अंग पें छिनिज सारी ॥ कोउसखि लाय बसन अति झीना ॥ पहिरावति प्रीतमहि नबीना कोउ सखि अंग अंग अति भूषन ॥ पहिरावति लालन गत दूषन । कोउ सखि अंजन नयन लगावति । छुअत कपोल परम सुख पावति ॥ कोउ सखि बीन मृदंग सितारा गाय बजाय रिझावत प्यारा ॥ नाचति ठुमुकि ठुमुकि प्रभु आगे । भाव देखावति प्रभु अनुरागे ॥ कोउ सखी फूल शृँगार बनावै । मालगाँथि पिय गर पहिरावै ॥ कोउ

लिये सौज अलंकृत नाना। तरह तहर के बाद्य बिधाना॥ गाय रिझाय पियहि सन मानति। जय जय करि करि प्रेम सम्हारति॥ दो०॥ यहि बिधि प्रेम प्रकाशिका करत रहत दिन रैन॥ पियबिन दूजो को सुनत बिनती करि सुख चैन॥ चौ०॥ एक उपाय प्रगट जग माहीँ। गुरु पद पंकज प्रीति सदाहीं॥ अथ अखयायका॥ श्री स्वामी जी महाराज जब मंदिर बनगया प्रतिष्ठा हो गई तब आपने कहा कि इसस्थान श्री ठाकुर जी के हमारा निवास बर्ताव भिन्नही रहेगा सब लोगोंने कहा जैसी आपकी मरजी होवै सो करिये आपका भोजन तीनों का चावल और अलोना शाक और फोदीना और काली मिर्चकी चटनी होती कभीं कभीँ फुलका और मूग की दाल तीन छटाक अंदाज आपका प्रसाद होता। रहने का मकान आपका लोगों के भिक्षा से बनाया था प्रगट व्यवहार आपका रंगीन उत्तम बस्त्रा पर्य्यंक का बैठना था परन्तु अष्टधातु आप कभीं स्पर्श नहीं किये थे द्रब्य अमित पूजोपहार चढ़ता छूते कभी नहीं कदाचित् कोई वात सिद्धाई करामात की जाहिर होती तब उसको आप अत्यन्त छिपाते और बैराग्य आपका प्रगट नहीं होने पाता। प्रत्यक्ष मे ऐसी रीति धारण सहज बर्ताव का सर्ब प्रिय सर्वोपकारक सब

के ऊपर दयालता ॥ ऐसे श्री स्वामी जी महाराज के शरण में जो आया वह मनमानता फल पाया ॥ जब पचाश बर्ष की अवस्था आप की हुई तब आप कहा कि अब लिखना पढ़ना लोगों का आना जाना बहुत बोल चाल समागम त्याग किया चाहते हैं॥ सब प्रेमियों ने प्रार्थना करी कि हे दीनदयाल ऐसा होने से हम सब निराधार हो जायँगे आप सर्व प्रकार से जीवन्मुक्तावस्था को प्राप्त हैं सो ऐसे दुरूह साधन आप को करने की आवश्यकताही क्या है, आप के दर्शन समागम से लोग कृतार्थ होते हैं तब आपने आज्ञा किया कि तुम लोगों का कहना यथार्थ है तथापि सदाचार सर्व श्रेयस्कर है ॥दो०॥ लोग कहै हरि दूर है हरि है हृदये माहँ॥ टाटी लागी कपट की ताते सूझत नाहिं १ श्री गोस्वामी जी का बचन ॥ सो हितू हेरु हिये ही हैं॥ छलहिं छोड़ि सुमिरु छोह कियेही है॥ अब छल छोड़ ने से प्रभु प्रगट है॥ छल के भेद अनेक हैं प्रथम सहज रीत धारन चाहिए॥ नाम रूप लीला धाम में प्रेमाधिक्य होना चाहिये ॥ प्रथम धाम की महिमा चिंतन कर के देखिये ॥ त्रोटक छंद ॥ मन भावन पावन ओघ महा ॥ यश तेज प्रताप न जात कहा ॥ बिमला सम श्री बिमलायक हैं ॥ सब लायक शीलनिधायक हैं ॥

५० वर्ष

अज आदिक देवन भे वलहैं ॥ मति की अनुरूप कहैं सो कहैं ॥ शशि सूर्य्य ग्रहादिक देखि नितै ॥ करि सुस्तुति होत प्रसन्न चितै ॥ सुरधाम अराम अनेक लसै ॥ दृढ़ जीव बसैं नहि नेकु खसैं ॥ सरजू सरि नेरहिं घेरि बही ॥ धनुसाकृत सुंदर सोहि रही ॥ अति चारु तरंग उदार चलैं ॥ दरसैं परसैं सब पाप गलैं ॥ करि मज्जन पूरण मंत्र जपैं ॥ सुरवृंद मुनीन्द्र नरेन्द्र तपैं ॥ सब ध्यावत तोहि मनावत हैं ॥ गुन गावत बांछित पावत हैं ॥ बैकुंठ शिरोमणि दिव्यपुरी ॥ सब लोक प्रकाशक धर्म धुरी ॥ सन्मान विधान सुदान भरी ॥ सप्तेश्वर सेवहिँ सप्तहरी ॥ सब के दुख दोष दरिद्र दरै ॥ सपने न कबहुँ अभिमान करै ॥ परमेश्वर पूरण ब्रह्म अजम् ॥ रघुबंश विभूषन सिय सनुजम् ॥ अवतार उदार चरित्र करैं ॥ हरि जन्म सुभूमि कहैं सगरै ॥ नभद्वार प्रसिद्ध महातम है ॥ यश गावत तौ निगमागम है ॥ फल चारि लहैं अधिकार घनै ॥ बरबेद सु कीरति नित्य भनै ॥दो०॥ अज अनादि अद्वैत अति अलख अकथ अव्यक्त ॥ श्रीसनाथ जन दुख हरण अखिल अनूपम शक्त ॥१॥ अति संक्षेप नाम ॥ राम सुनाम रंगीन महा ॥ विधि बेद निषेध कहूँ न जहां ॥ सब जीव जहां अधिकारी है ॥ प्रभु आप जहां अविकारी है ॥ नहि साधन दीक्षा शिक्षा है ॥ है भूप

अनूप सु भिक्षा है ॥ विन नेमहि प्रेम सो क्षेम लहै ॥ रसना कस ना वह नाम कहै ॥ सब पंडित मंडित ज्ञान चहै ॥ सब बेद सुभेद अभेद महै ॥ काम सुधर्म जो अर्थ चहै ॥ मोक्षहु लागि उपाय इहै ॥चौपाई॥ चारि सुफल लगि साधन चारी ॥ बिनहि सुसाधन पावहिँ भारी ॥ विन साधन सम्पत्ति विचारो ॥ शरन नाम के होय सुचारो ॥ पावहिँ चारो फल सुख सर्बस ॥ लहहिँ नाम ते अरस विरस रस ॥दो०॥ महिमा नाम अथाह है जानत शेश महेश ॥ स्वामी कृत माहात्म्य बर नाम प्रताप परेश ॥ सो०॥ देख हु ग्रंथ मझार नामी नाम अभेद गहि॥ पावहि परम उदार भेद रहस्य बिचार बर २ ॥दो०॥ सब साधन विर्हित विगत खेद रहित हर्षाय ॥ राम राम जयराम कहि लहहि मोद बर्षाहिँ ॥६॥ संक्षेप लीला॥सो०॥ लीला नाम ललाम ललित लोनाई लाल की ॥ लहहि परम विश्राम लोक अलोक विशोक प्रद ॥६॥ व्यास देव महाराज सूत्रमाहि अर्चन कियो ॥ लोकबस्तुलीलाकैवल्यम् ॥ भावभावनाभावसुगम्क्षम् ॥ रहसरहस्यविलास सुरम्यम्॥ जस मनुष्य तस चाल अगम्यम् ॥ यद्यपि अमल अखंड अनादी ॥ गावत यश परमारथ बादी ॥ तदपि विवाह स्वयम्बर चारी ॥ चारिहु भाय जनकपुर चारी ॥ जस विवाह राजन घर होई ॥ तेहि प्रकार मंगल सुख सोई ॥

रचना अद्‌भुत लौकिक रीती ॥ सबहि सोहात परस्पर प्रीती ॥ मातु पिता गुरु मान बड़ाई ॥ भावत सबहि सु लाड लड़ाई ॥दो०॥ लोक बेद विधि रीति सब दूलह दुलहि सोहात ॥ सासु ससुर माता पिता देखि देखि हर्षात ॥२॥ मिथिला से आये अवध रानी राज समेत ॥ सुख सोहाग अनुराग युत राजत स्वपुर जनेत ॥३॥ द्वादश वर्ष असंख्यवत बीते विहरत भोग ॥ शोग रोग विरहित सकल योग सु योग सु लोग ॥४॥ बन लीला लावण्य लहि लीला युद्ध विशाल ॥ विजई राजाराम प्रभु जयति जयति सुखपाल ॥६॥ अन्य छन्द ॥ राजत नित्य किशोरराम घनश्याम छबीले ॥ विहरत भ्रातन सहित अवध भूषन सु रसीले ॥अन्यछन्द॥ लीला ललम ललाम लावनी लाल की ॥ गावत सुर मुनि गगन गली रघुलाल की ॥ यह लीला रस भरी हरी आनंद सुखदाई ॥ गावत प्रेम रहस्य मगन सब लोग लुगाई ॥ सीताराम ललाम काम पूरन लय लाई ॥ लीला सुख संबाद सु गुरु चरनन ते पाई ॥ लीला नाम सुखेल सोहावन पावन है ॥ गाय गाय सुख सिंधु मगन मन भावन है ॥ लीला अमित अनंत अनादि सुछंद छबीली ॥ नाना विधि बहु रंग गनै को रंग रंगीली ॥ यथा रागिनी गान तान अनुमान सजीली ॥ लीला प्रभु की ललकि लहै आनंद गसीली ॥८॥

॥दो०॥ लीला अगम अपार पर परहु न पावत पार ॥ गावत गावन हार सब लहत सदा निस्तार ॥१॥ संक्षेपरूप ॥चौ०॥ रूप अनूप छबीले श्यामा ॥ सिय प्यारी के प्यारे रामा ॥ चालमंद मधुराई मानी ॥ हंस लजात चाल लखि शानी ॥ अरुणारे तरवा सुचि सुंदर ॥ रेखा चमकत मनहु काम घर ॥ उर्द्ध रेख आदिक दहिने पद ॥ सरयू लसत सुबाम बेद बद ॥ श्रीमन्महा आदि रामायण ॥ गावत विधि शंभू नारायण ॥ की कहि सकत महान महातम ॥ चिन्हन ते अवतार रमत रम ॥ एकहु पल अंकुश जो सुमिरत ॥ महामत्त मन होत सुथिरवत ॥ जेहि थिरता लगि कोटि यतनयुत ॥ योगी साधन साधत मनहुत ॥ कृष्णचंद्र अभ्यास बतायो ॥ पुनि बैराग्य देश बहु गायो ॥ सोइ अभ्यास विराग बिनाहीं ॥ अंकुश ध्यान धरत मन माहीं ॥ होत स्वबस मन तुरत गुसाईं ॥ लहत महा मंगल बरि आँईं ॥ जो प्रियतम पद अंकुश चिंतत ॥ तेहि समान कहु कहहु सो किंतत ॥ जो परत्यक्ष देवगुरुस्वामी ॥ तिन पद चिंतत जो अनुगामी ॥ सो पावत सिय रघुबर ध्याना ॥ अपर लहत नहिं कोटि बिधाना ॥ कछु मन करत रूप सिय रघुबर ॥ गावौं मुद मंगल हिय छबि घर ॥ नहीं बनत कछु कहत लोनाई ॥ विजुलीसी चमकत रहि जाई ॥ काह कहौं कछु

आवत नाहीं ॥ प्रेम लेश कछु नहि मन माहीं ॥ महामलीन दीन मति मंदू ॥ मम हिय बसत न सिय रघुनंदू ॥ ताते नहिं कछु रूप बखानो ॥ रूप अनूप कहूँ का जानो ॥ पश्चिम देशी एक सुसंता ॥ बानी कही यही शुभमंता ॥ आं अक्ल कुजा के दर कमाले तो रसद ॥ आंरूह कुजा के दर जलाले तो रसद ॥ गीरम के तो परदा वर गिरफ़ी ज़े दर जमाल ॥ आं दीदः कुजा के दर जमाले तो रसद ॥१॥ बुद्धि लेश न हि पहुचै प्रभु तक ॥ अति अनूप लावन्य सुसम्यक ॥ जीव महा दुखिया माया बस ॥ प्रभु प्रताप नहिं लहत एक रस ॥

॥दोहा॥ जब प्रकाश ही आवरण तब सूझै क्यों लाल ॥
जानि परत ऐसहि कछू जाल माल सु रसाल ॥१॥

कहां आंख पैयै वह प्यारे ॥ जेहि ढूढ़त ब्रह्मादिक हारे । जब वह आंखि देय कहुं रसिया ॥ बडि वडि आंख देखात सु बसिया ॥ गीता में अरजुन से गायो ॥ बुद्धि दई हम तिन मोहि पायो ॥ जब वह दैहै बुद्धि रसाला ॥ तब हम समझब रूप विशाला ॥ जब वह दैहैं अम्बक अंबुज ॥ तब हम देखव रूप सु कम्बुज ॥ भरि नयन विलोकि अवधेशा ॥ यही सुबाणी कही पक्षीशा ॥ देखत संत अनंत छबीला ॥ जेहि चाहत वह परम रसीला ॥ जब तक नहिं देखों वह स्वामी ॥ कैसे गावों रूप सु नामी ॥ जेहि देखत फिरि और न देखत ॥ रूप माधुरी छवि अवरेखत ॥ जो

कोइ लख्यो लखन के भैया ॥ सब के प्यारे प्रिय रघुरैया ॥ जी देख्यो जो सब को देखत ॥ संत सोई आनन्द सु पेखत ॥ सपनेहु देख्यो देखनहारे ॥ पुनि नहिं कबहूं और निहारे ॥ अति दुरूह दुर्लभ वह रूपा ॥ सब कोई कहत अनूप स्वरूपा ॥ तेहि देखन को एक उपाई ॥ कहौं यथा मति सुनहु सुभाई ॥ निज गुरु पद पंकज नित ध्यावो ॥ तुरत हि राम रूप तब पावो ॥ गुरु पद पंकज दृढ़ विश्वासा ॥ सीताराम सुदर्शन आसा ॥ नराकार गुरु देव गुसाईं ॥ तिनहिं जु देखत मन चितलाई ॥ सो निश्चै निश्चिंत उदारा ॥ निराकार साकार अधारा ॥ लखत लखत वह मूरति-सरगुन ॥ वही होत सरगुन से निर्गुन ॥ कीट भृंग संदेह विहाई ॥ अपर न दूसर कछु कहि जाई ॥ यथा सुमायिक तन सब केरा ॥ सत चित आनद मध्य सुघेरा ॥ तथा अयोध्या भू पर राजैं ॥ परमायिक ते भिन्न विराजैं ॥ तथा मनुष्य देव गुरु स्वामी ॥ ध्यान धरत जो प्रभु अनुगामी ॥ वही मनुष्याकार बिधाता ॥ ध्यावत पावत गावत राता ॥ है अनन्य जो गुरु पद ध्यावै ॥ वही रूप सियराम स्वहावै ॥ भेद रहित पर ब्रह्म अखंडा ॥ अलख अनादि ईश ब्रह्मंडा ॥ कथैं वेद बेदांत वितंडा ॥ बाग विलास स्वच्छ पाखंडा ॥ बेद भेद मत अमत विहाई ॥ गुरु पद पंकज जो मन लाई ॥ सेवत कपट रहित आनंदा ॥ पावत रसिक सच्चिदानंदा ॥

मूरति मधुर अभेद भेद गत॥ सिय रघुनंदन युगल प्रेम रत॥ द्विभुज श्याम सिय गौर लुनाई॥ नख शिख सुंदर काम लजाई॥ लाल शीस सुंदर बर पागा॥ ललित ओढ़नी सिय सिरलागा॥ गुलूबंद रघुबर गलबाहीं॥ सिय सुकंठ चुँदरी झलकाहीं॥ रघुबर जड़ित जड़ाऊ जामा॥ सियकंचुकी सोह अभिरामा॥ कमरबंद रघुबर मन मोहै॥ सिय कटि लँहगा अति छबि सोहै॥ घेरदार पैजामा सुंदर॥ रघुनंदन तन कटि छवि मुंदर॥ जूती जगमग दोउ पद राजै॥ भेद पौरुषी नारि विराजै॥दो०॥ जावक मेहदी दोउ पगन दोउ पग रतन सुजोति॥ पायजेव नूपुर युगल मधुर मधुर धुनि होति॥चौ०॥ सिय गल दुलरी झीन चौलडी॥ रघुबर कंठ सुकंठा झडी॥ माला दोउ गल मोहन माला॥ चौकी पदिक धुकूधुकी जाला॥ सिय सिरगुथीं माग बर मोती॥ रघुबर पेचदार सिर होती। चूडामनि जूडा बिच सोहै॥ तुर्रापाग सु झब्बा मोहै॥ सियकर कंज सुमंजु सोहावन॥ रघुबर कर शर धनुष मोहावन॥दो०॥ कबहु सुरथ रंगीन पर राजत युगल किशोर॥ आस पास ललना लगी निरखत छबि चहु ओर॥चौ०॥ रथ पर चढ़ी सखी जो हांकति॥ तेहि लखि सखी दूर से झांकति॥ वेष सिपाही सहचरि कीन्हे॥ वेतपाणि कोउ खड्ग सुलीन्हे॥ कोउ खंजर कोउ तीर विशाला॥ कोउ

कटार कोउ विछुवा जाला ॥ कारबैन कोउ लिये तपंचा ॥
कोउ संगीन गुर्जपर बंचा ॥ कोउ बंदूक चलावति
आवति॥ शब्द जाँगडे गाय सुनावति ॥ कोउ सखि
शानदार कर सांगी ॥ भाला बरछी शस्त्र शुभांगी॥
आगे पीछे अगल बगल पुनि ॥ सखी सिपाही सजी
सैन गुनि ॥दो०॥ यहि विधि सिय तन हेरि पिय
बोलत सखी मझार ॥ लक्ष्य बेध अब करहु सब तब
पूरो व्यहवार २ ॥चौ०॥ यह सुनि विहँसि उठीं सब
सखियां॥ लक्ष्य बनाय रूप नर रखियाँ ॥ प्रौढा मध्या
तथा प्रगल्भा ॥ मुग्धा हंसति सुकोमल सुलभा॥ लाल
कही सुनु प्रौढा प्रेमा ॥ प्रथम लक्ष्य तुम वेधो नेमा॥ बहुरि
प्रगल्भा मध्या बामा॥ सब के पीछे मुग्धा रामा॥ सुनत
उठी लै तीर कमाना ॥ लगी चलावन पावन बाना ॥ शर्त्त
यही जो लक्ष्य हृदय में॥ लाग अस्त्र सो जीतै रन में॥
जोर शोर बहु करि अभिमाना ॥ लगी चलावन बान
सुनाना ॥ प्रौढ़ा प्रौढ़ खींच कर मारै ॥ अति प्रगल्भ
तन्नाम संघारैं ॥दो०॥ लक्ष्य चरन कोउ जंघ पर इधर
उधर हो ज्ञात॥ हारी सब बहु यतन करि लक्ष्य अलक्ष
लखात॥ प्रौढ़ा मध्या भेद बहु तथा प्रगल्भा नारि ॥ निशा
निशाना नहि लग्यो जग्यो जगत की हारि ॥चौ०॥ सिय
जू सहित पीय हरषाने॥ मुग्धा दिशि देखन बरषाने ॥

सिय जू हंसि कहि सुनहु री वाला॥ देखहु प्राणनाथ रघुलाला॥ इनके मन यहि तुमहि जितावन॥ इन दिशि हेरो प्रेम बढ़ावन॥ बचन सीय की सुनि प्रिय बल्लभ॥ मंद मंद मुसुक्यात सुदुर्ल्लभ॥ कह्यो लाल तुम सुनहु सुमुग्धा॥ खेलहु प्रेम निशाना बहुधा॥दो०॥ सुनत बचन प्रियप्राण के हरषीँ मुग्धा बाल॥ मधुर कमान सुबान गहि प्रिय अनुकूल निहाल॥चौ०॥ लगी चलावन तीर तनुंगी॥ जात अकाश पताल सुरंगी॥ हंसी देखि मुग्धा मधुराई॥ लाल लली प्रिय प्रेम बढ़ाई॥ मध्या कह्यो खेल बिनु जाने॥ नहि खेलै बरु चतुर सयाने॥ प्रौढ़ा कह यह खेल न होई॥ जानै बीर धीर धिय धोई॥ कही प्रगल्भा जब हम चूकी॥ कैसे कोऊ जीति रण कूकी॥दो०॥ कहत सुनत हरषत सकल पिय प्यारी सखि जूह॥ रँग रँग भूमि रँगीन मिलि सोहत खेल समूह॥३चौ०॥ अतिहि मधुर एक छोटी मुग्धा॥ तीर उठाय धनुष पर लुब्धा॥ लरबर लरबर हंसत सु हरबर॥ ताकि निशाना पुनि लखि सियबर॥ चोटी खुली सुखींचवान की॥ देख लला अरु प्रिया जानकी की॥ अति शोभा सब सखियन देखी॥ मन महुं कहत स्वरूप अलेखी॥ कटि की लचक तीर की मटकनि॥ मधुर भाव की मधुर हिल-

टकनि ॥ देखि शूरता मुग्धा केरी ॥ पुष्प बरषि सुर कीन्हीं ढेरी ॥ सानुकूल प्रभु प्रीतम प्यारा ॥ कहहु को दुरलभ पर व्यवहारा ॥ प्रगट प्रभाव सुलोक बेद मत ॥ जेहि पिय मानै सोइ सोहाग शत ॥ दृष्टि परी पिय की मुग्धा पर ॥ जीति गई अभिमानवती पर ॥दो०॥ तानि वान मुग्धा सखी लक्ष्य सुमाख्यो बीच ॥ बेधि निशाना सिय चरन्न गहि पिय अंसुवन सींच ॥चौ०॥ देखि मुग्धता मुग्धा केरी ॥ ह्वै प्रसन्न सियपिय मुख हेरी ॥ बोले मधुर बचन हंसि स्वामी ॥ सुनहु बचन मम प्रेम मुदामी ॥ जंह तक कछु करतूति अहं लगि ॥ तहं लग दूर लक्ष्य बेधन जगि ॥ तन मन बचन न कछु व्यवहारा ॥ केवल प्रीतम नाथ अधारा ॥ सब प्रकार से जो निज भूला ॥ तापर होत ईश अनुकूला ॥ सांत बचन परमान सोहावा ॥ अवस लेखनी पर पद आवा ॥ जब लगि जानै मैं कछु करता ॥ तब लगि गर्भ जोनिमहिं फिरता ॥ जब धारै कोउ बैरी मीत ॥ तब लगि निरमल नाही चित्त ॥ अहं विहाय सु आतम धारी ॥ ज्ञान उपासक कर्म सुकारी ॥ आय छोड़ अज्ञान विहाई ॥ कर्म करै सो सुद्ध कमाई ॥ तथा सुचिंतन करत उपासन ॥ ज्ञानी ज्ञान ज्ञेय ढिग आसन ॥ शिष्टाचार सुकरत सकल विधि ॥ रहत दूरि पुनि होत

सकल सिधि ॥ निज से दूर होत जो साधक ॥ सो पूरो सिधि साध्य अराधक ॥दो०॥ बचन सुनत रघुबर अलिन जो कुछु रहा सो भाग ॥ प्रीतम बचन अमोल गहि लहि सोहाग अनुराग ॥चौ०॥ आज्ञा दई प्रिया तब तिनहीं ॥ खेलो जाय तीर अरु धनुहीं ॥ हर्षि उठी गहि तीर कमाना ॥ लागी खेलन बेध निशाना ॥ अति प्रसन्न सों सिय पिय देखी ॥ खेल खेलारी विगत सुशेखी ॥ यहि मिसि खेल मेल पिय प्यारी ॥ ज्ञान विराग भक्ति अनुहारी ॥ प्रार्थना कवित्त ॥ श्रीमहाराज कृपाल कृपा करि दीजिये नेह सुनाह निनारो ॥ और कहूँ प्रभु मोहि न भावत पावत बस्तु अबस्तु अपारो ॥ है सब वाही में अंत नहीं कछू सूझत नेक न और निहारो ॥ देहु दया करिकै मन भावन श्री जानकी बर आप सम्हारो ॥१॥ जोरि नहि आवत है एकहू कवित्त मोपै छंद की प्रबंध हू न जानत कदापि मैं ॥ नायका अलंकार भेद है प्रकार बहुत सूझत न वारापार कविता अलापि मैं ॥ नाथ हौ अनाथन को याचतहौं याहि लागि जागि उठै भावना सुभावती अद्यापि मैं ॥ पाहि पाहि नाथ रघुनाथ सीतानाथ देव जानकी सुघर बर शरण तथापि मैं ॥२॥ भावना उपासना सुधारणा सुधारि देत लेत अपनाय बहवाय कुल

कानि को ॥ गुरु देव चरन कमल रज भज मन तज जग ठग अकबक बानि को ॥ युगल किशोर चित चोर छवि जोर ओर होत अनायासही विलाश सनमानि को ॥ ऐसे महाराज सुखसाज की समाज देषि जानकी सुघरवर मिलत प्रमानि को ॥ ॥३॥ साधक को सिद्धि जैसे याचक को महा विधि वैदक कों विधिसी सोहायो मनमान ते ॥ योगी कों निरोध मन रोगी कों अरोग तन शोगी को विशोक लाभ भल सब जान ते ॥ जाको इष्ट जोई जोई चाहत है सोई सोई मिष्ट शिष्ट स्वाद अल्हाद पिये पान ते ॥ देखि विचारि गुरुदेवही ते पायो सब याहीते जनायौ जानकीश निरवान ते ॥५॥ जानकीश जानत जगत जगदीश गति मानत महान मुद महिमा अपार है ॥ जाहि पर ममता अधिक गरूआई गति वाहि की हवाल सुनि प्रेमनिधि धार है ॥ मासरस प्रथम सखेद होत खेद मानिहानि कछु नाहि प्रिय लोक दोउ सार है ॥ ऐसे प्राणपति की सुरुचि अनुकूल लहि दुख सुख वीच संत करत सु प्यार है ॥६॥ श्रीगुरु देव जू ते ज्ञान सु विराग होत भक्ति बर भेद सब ग्रंथ बीच गाये हैं ॥ इह लोक परलोक लोकालोक जेते ज्ञेय ध्येय अनमेय तेते स्वामीही जनाये हैं ॥ बेद बहु खेद बिनु गुरु को परत्त्व करैं गुरु बिन

भेद कोउ कहूँ नहीं पाये हैं ॥ कोऊ करो साधन अराधन अनादि देव जानकी सु बर महाराज गुरु पाये हैं ॥७॥ श्रीगुरु स्वामी जूते भये न कोऊ होने जिनके अखिल लोक विदत प्रताप है ॥ काम क्रोध लोभ मोह माया मद करि कर नाशवे को पंचानन राजै करिद्राप है ॥ दंभरत पापगत बिमुख कुजन तमतोम के समान दिनकर सम आप हैं ॥ रसिक नर सशालि पोषिबे को बारिद से मेरे से अधम को तो एई माईबाप हैं ॥८॥ भोजन मनोहर सुयुवती जवानी पेषि बसन बिचित्र लखि चित्त चलिजात है ॥ धनिक बनिक धनधान्य सहबास पाय गान तान सुनि सदाचारि बलि जात है ॥ याही ते मुमुक्षू जन त्यागि देत दूरही ते काहू भाँति करत निबाह शाक पात है ॥ जाको मन रंग्यो गुरुदेव रंग संग मध्य ताको लखि व्यसन रसन घबरात हैं ॥९॥

बधाई श्रीजनकनंदनी जू की ॥ बरष महोत्सव श्रीस्वामिनि की ॥ श्रीमिथिलेश नरेश द्वार पर सुरतिय चमकत घन दामिनि की ॥ गावत गीत मनोहर भावत सुख पावत नवमी जामिनि की ॥ जानकी बरकी जीवनि सीता गावत मंगल अभिरामिनि की ॥१॥ जय जय जय श्री स्वामिनि सीता ॥ बरष गाँठि दिन जेहिसिय आयो भायो सब जग भयो अभीता ॥ जहँ तक लोक

शोक बिलोकत कोउ न रह्यो सुख आनंद रीता ॥
श्री मिथिलेश सुनैना रानी आप वजावत गावत
गीता ॥ ज्ञानी ध्यानी अभिमानी सव कहत अवस है
रघुवर सीता ॥ जानकी वर की प्रान पियारी जपत
रहत नित सीता सीता ॥२॥ शरद ऋतु सरसी शीत
भरी ॥ जनु पावस प्रिय पाहुन पायो वरसन को श्रम
सफल करी ॥ कबहूं कतहुं सु नान्हीं नान्ही बुंदिया
बरसत तरातरी ॥ साज समाज नखत संग लीन्हें श्री
द्विजराज प्रकाश धरी ॥ रास विलास करत प्रिय प्रीतम देखि चांदनी चंदलरी ॥ ताथेई ताथेई ताताथेई
धिग धिग धासु मृदंग झरी ॥ तान लेत प्रिय राग
सोहनी सिय गावत मुसकात खरी ॥ चहूं ओर सखि
मंडल छाये जानकि वर पिय मानहरी ॥२॥ सीता राम
करत रास सरजू तट माई ॥ गावत संगीत राग भाग
वड़े सखियन के पावत रिझवार प्यार हार गललगाई ॥
नूपुर धुनि छम छमात परसत पग धम धमात गावत
सुर सरद राग समय सुख सोहाई ॥ मुग्धा सुख सिय
निहारि पिय मुख वलिहारि लेत देत ताल लय निहारि
जयति जय बड़ाई ॥ जानकी वर सुख सोहाग निरखत
अनुराग बाज फूलत हिय जाग उठ्यो गुरु पद मन
लाई ॥१॥दो०॥ अगम कथा गुरु देव की समझ कह्यो

नहि जाय ॥ अगम सुगम आगम निगम बेगम लख्यो लखाय ॥२चौ०॥ एक बार बैठे प्रभु आसन ॥ संत समाज राज सुख जासन ॥ प्रभु छबि देखि संत सुख पाये ॥ पुष्प माल प्रभु को पहिराये ॥ सहज सोहावन मूरति स्वामी ॥ पीत बसत धारन निष्कामी ॥ सुदर केश सचिक्कन पावन ॥ मधुर बचन बोलत मन के भावन ॥ मंद मंद प्रभु हँसत सोहाए ॥ निरखि सु छबि सब के मन भाये ॥ तामधि एक संत परबीना ॥ प्रश्न किये अति सरस नवीना ॥ हे कृपाल सुनिये मम बिनती ॥ कृपा करो मोपर दुखहन्ती ॥ भेदा भेद ज्ञान अरु भक्ती ॥ जाते होय समझ की शक्ती ॥ कोउ निरगुन कोउ सगुन बखाने ॥ निराकार साकर प्रमाने ॥ शिर हजार अरु बाहु हजारा ॥ चतुर बाहु षोडश निरधारा ॥ द्विभुज रूप निरबद्य अखंडित ॥ कहत परात्पर पावन पंडित ॥दो०॥ ब्रह्मा विष्णु महेश ते निराकार निरलेप ॥ अव्यय अकथ अनंत प्रभु विस्तर पुनि संक्षेप ॥चौ०॥ कौन भांति जानौ मै स्वामी ॥ केहि बिधि करौ उपासन धामी ॥ मन भटकत धटकत चहुँ ओरा ॥ बिकल होत यहि बिधि मन मोरा ॥दो०॥ कहो नाथ संक्षेप से जेहि बिधि सूझत नाथ॥ कृपा दृष्टि हेरो प्रभू तब मैं होब सनाथ ॥ बोले मधुर बचन प्रभु पावन ॥ आनँद रूप

सोहावन भावन ॥दो०॥ दुराराध्य दुःसाध्य प्रभु दुर्गम दूर दुरंत॥ तर्क रहित निरगुन सहित अंत अनंत कहंत ॥चौ०॥ सतगुरु संत कहत करुणा कर ॥द०॥ कहत कहत जी रहत सत गहत गहत गहि जात॥ लहत लहत लहरात लहि जहता जहत सोहात ॥१॥ शब्द अनु प्रमान पुनि ऐति कह्यो कहि जात॥ लहत प्रत्यक्ष अलक्ष्य इव उपमा नहि ठहरात ॥२॥ अनुमिति अर्थापत्ति गहि प्रमा प्रमाणी साथ॥ उपमा केहि विधि याहि ये बिनि देखे रघुनाथ ॥३चौ०॥ एक उपाय दरश प्रभु येई॥ श्रीगुरु चरण कमल रति भेई॥ गुरुमुख होत प्रथम बिन जाने। ज्ञान पाय पीछे पछिताने॥ यह अज्ञता दूरि पुनि कीजै। यद्यपि तिन में मन नहि भीजै॥ जाय एकाँत बैठि चिंतन करि। बचन मंत्र दृढ़ हृदय प्रेम धरि। गाथा एक सुनो गुरुकेरी। वाजीगर जो नृप मति फेरी॥ बाजीगर जो नट कहवावा। जाल जवालं बहुत फैलावा॥ अंत एक राजा है चेरा। धन बहु लिए राज मन घेरा।॥ संपति लै गुरु गए निज देशा। बहुत काल बीते नटवेशा॥ वह नट एक देश मे जाई। वांस चढ़े लीला प्रगटाई ॥दो०॥ बांस बराबर से गड़े तापर रस्सी बांध॥ ता रस्सी मधि चढ़ि गए घडा राखि सिर कांध ॥१॥ बाजीगर के साथ बहु

ढोल बजाय बजाय ॥ नाचैं गावैं हर्ष युत नट की करत सहाय ॥२चौ०॥ यहि विधि होत तमाशा जहवां । दैव योग राजा गे तहवां ॥ भूपति नहिं पहिचाने स्वामी । रूपांतर ह्वै रह्यो सकामी ॥ राजस मंत्री संग बिराजा । । गुरु नट की पहिचान समाजा ॥ राजा से बोला मंत्रीवर । देखिये महाराज यह ऊपर ॥ अमुक बर्ष जो मास व्यतीता ॥ दीक्षा लीन्ही आप सुनीता ॥ छल बल करि जिन आप ठगाये । गुरू निकरि आपन मन भाये ॥दो०॥ यही चढ़े निज बांस पर देखिये प्रभु प्राखंड ॥ दंभ कीन्ह यह आप सन अहै योग प्रभु दंड ॥१॥चौ०॥ सुनि मंत्रीवर बानी राजा । रहे बिराजे निज गजराजा ॥ धरि धीरज देखेउ निज स्वामी । लिय पछानि प्रभु अंतरजामी ॥ गज से उतरि परे प्रिय भूपा । साष्टांग परि गए अनूपा ॥ जय गुरुदेव बिश्वंभर देवा । सेवक जानि दया बिन सेवा ॥ नट मर्कट इव सबै नचावत । जस भावत तस रूप देखावत ॥ मैं कृत कृत्य भयों प्रभु स्वामी । जय जय जय गुरु अंतर्जामी ॥ नट गुरु लज्जा भरि नहिं बोलत । भय अडोल नहिं कतहू डोलत ॥ गुरु निष्टा देखी रघुनाथा । तुरत प्रगट भये शिष्य सनाथा ॥ जाय निकट प्रभु करुणा कंदा ॥ राजा ढिग बोले रघु-

नंदा ॥ उठो उठो प्रिय भूपति बच्चा। तुमह भगती हमारे सच्चा ॥ निष्ठा निरखि गुरु पद राजन। भायो मोहि ज्ञान गुन भाजन ॥दो०॥ ज्ञान भक्ति के पात्र तुम शुभ गुन के आगार ॥ गुरु कृतारथ भये तब निराधार आधार ॥४॥ शिष्य गुरू दोउ प्राण पियारे। नित हौ मेरे प्राण आधारे ॥ चिंता रहित रहौ जग माहीं। सुख संपति निज सहज सोहाहीं ॥ अंत समय ह्वौ मोरे धामा। पावो अनिर्वाच्य विश्रामा॥ जो कोइ चहै दरश मम राजा ॥दो०॥ कपट रहित शुचि भाव से जो सेवत गुरु देव ॥ सो मोहि पावत अवश नर कोउ २ जानत भेव ॥५॥ वेद भेद जानत यह नीका। मत विक्षेप आवरण ठीका॥ त्रय प्रतिबंध मिटै जब जीका। लहै सुखी नित पाय अमीका॥ पाप समूह मलहि तुम जानौ। चंचलता विक्षेप पछानो ॥ मूलाज्ञान आवरण कहिये। यह विस्तर सब पोथिन लहिये ॥ निज अधिकार कर्म जो करई॥ मलनाशत सत कर्म शुभनई ॥दो०॥ करि उपासना इष्ट की चंचलता भव दूरि॥ होत आवरण नाश तब गुरु होवत भर पूरि ॥६॥ चौ०॥ कर्म उपासन ज्ञान समेता। वेद भनत तीनहि चितचेता॥ एतदर्थ वेद त्रयी नामा। कहत संहिता वेद ललामा ॥ कर्म सुदुर्गम जानहु भाई। गहना गति गीता बिच गाई ॥ पुनि उपासना अति

गंभीरा । सकल योग सम्मत मन थीरा ॥ तस्मिम् प्रिति स्तस्य प्रिय कार्य साधनम् च तदुपासनमे व,॥ यह उपासना सूत्र कहावै । संत पुनीत भेद यश गावै ॥ जस ममता निज सुत पर होई । अरु बामा पर प्रीति सजोई । स्वाभाविक धन पर जस प्रीती । अस उपास्य पर सो सत रीती ॥ रहत डरत जस राजा को सब । अस डर डरत उपास्य लोग जब ॥ निशि दिन रहत यही मन चिंता । रूखी दृष्टि न होय सुमिंता ॥ सब चंचलता दूरि बहाई । सेवत प्रीति प्रतीति सदाई ॥ अब सुनिये आबरन बिनाशक । कहत ज्ञान जेहि राम उपासक ॥ श्रीगुरुदेव कहत जेहि लोगू । मिटत जाहि सेवत सब रोगू ॥ सो सब गुरुमुख के निज स्वामी । तिन की होवत जो अनुगामी ॥ बर्तमान जब होत गुसाईं आज्ञा पालन प्रीति सोहाई ॥ जब वह लीला लोक सिधावै । तब उन कृत यश नित प्रति गावै ॥ चित्र आदि जो वस्तु पूज्यवर । प्रीति प्रतीति सुसेवत प्रियतर ॥ सदा समीप विचारत रहिये । वह गुरुदेव सु अंतर लहिये ॥ व्यापक जाहि कहत सब योगी । सुख संपति जेहि जाचत भोगी ॥ सत्ता मात्र कहत जेहि वेदा । चिंतत जाहि मिटत सब खेदा ॥ सोइ गुरुदेव परम प्रिय स्वामी । प्रीति परा सुख होत सुधामी ॥दो०॥ आशंका

की दूर कर वेद भेद विलगाय॥ श्री गुरु चरण सुध्याइये सुख संपति सरसाय॥ पानी पीजै छानि के गुरु कीजे पहिचानि॥ लोक कहावत प्रगट इह समुझी मन अनुमानि॥ गुरु माता गुरु पिता है गुरु बन्धू सन मान॥ अन्न देय रक्षा करे हित उपदेशी जान॥चौ०॥ गुरुता यामे होय विशेषी। माननीय सोई प्रिय पेखी॥ सीताराम लखावै जोई। सो सतगुरु कहवावत सोई॥ परंब्रह्म जेहि बेद बखाना॥ जेहि जिज्ञासा करत महाना॥ जाते उतपति होत जगत सब। जीवत रहत कर्म बसतब जब॥ सोइ परमातम बस्तु अनूठी। निरगुन सगुन न आवत मूठी॥ इनते परे परात्पर स्वामी। उभय प्रकाशक अंतरजामी॥ सुन्दर रूप सोहावन पावन। सुर नर मुनि मन मान लोभावन॥ जिनकी महिमा अकथ बखानी। सब जग जानी कोपि न जानी॥ निज अनुसार भावना भावन। सब से सुन्दर परम सोहावन॥ एकहु पल जेहि चिंतत चिंतक। होत अभय तेहि डर नहि अंतक॥ शैव शाक्त गाणपत्य सुसौरी। वैष्णवादि जेहि ध्यावत पौरी॥दो०॥ नाम अनंत अनंत गुण अमित भावना भाव॥ सोइ सीतापति जानिये जाको अमित प्रभाव॥ जाके भक्त अनंत जग गावत ध्यावत रूप॥ दशरथ नंदन राम प्रभु सच्चि

दरूप अनूप ॥चौ०॥ योगी योग युक्त सो जागत । ज्ञानी ज्ञेय बस्तु नित माँगत ॥ ध्यानी ध्यान धरत जेहि ध्याता । श्रीशंकर अरु इन्द्र बिधाता ॥ सब मे रहत सबहु से पर है । उनके सही अवध निज घर है ॥दो०॥ अवध बास जो नित करत सेवत गुरु पद रेनु ॥ ज्ञानकिवर तेहि संत को जाचत सुर तरु धेनु ॥चौ०॥ गुरु गुरु जपत तपत नहि ताषा । ताहि न व्यापत कछु संतापा ॥ जयति जयति जय गुरु प्रभुताइं । जेहि प्रताप असमंजस जाई ॥ जयति जयति जय श्रीगुरु स्वामी । सब घट भीतर अंतरयामी ॥ अर्थी अर्थ जहां तक चाहत । धर्म काम रुचि मोक्ष सराहत ॥ जाको अर्थ अभीष्ट जो होई । अर्थ सोई स्वारथ रत जोई ॥ तामे भेद सुवेद बतावै । लोक अपर परलोक सहावै ॥ लोक अर्थ बहु भांति बखानत । लोकहु में परलोक जनावत ॥दो०॥ लोक बासना दूर करि सेवत सीता कंत ॥ सोई संत महंत हैं फूले नितहि बसंत ॥चौ०॥ सहज उपाय उपेय सोहावन । सो गुरु चिंतन पावन पावन ॥ श्रीगुरुदेव अखंड प्रतापी । चाह रहित जप यग्य सुजापी ॥ सगुन देह जब प्रगट गुरू हैं । सर्व प्रकार सुसेव गुरू हैं ॥ जब निज लीला देह विहाई । निरगुन रूप प्रगट रहे छाई ॥ सर्वकाल सब देश विराजत । जैसे

सीताराम सु राजत ॥ जहां चहत तह प्रगटत स्वामी। भाव भावना अंतर्यामी ॥ पूजन करत शिष्य जो गुरु को। सगुन अगुन दोउ रूप प्रभू को ॥ परम देव सब देव बतावै। गुरु सम दूसर कहाँ सो आवै ॥ सब जग ढूढ़त ईश्वर पइये। कहां जांव मैं कँह सो लइये॥ बड़ी भूल संसार अपारा। कैसे तरै जीव निरधारा ॥ प्रभू दया जब कीन्ही नर पर। गुरमुख भये लये स्वामीवर ॥ श्रीगुरु पद पंकज रज धारै। लोक तथा परलोक सुधारै ॥ कैसेहूँ असमर्थ अजाना। करै यथा मति गुरु पद ध्याना ॥ दृढ़ विश्वास आस प्रभु केरी। ह्वै अनन्य जस स्वामिनि चेरी ॥ सकल कामना पूरन होवै। सतगुरु ध्यान पाय सब धोवै ॥ अन्य छंद ॥ जगमगात गुरु महिमा चौदह लोक। ध्यान धरत जो निश दिन होत अशोक ॥ लोक लोक पति गावत मन हरषाय। जयति जयति कहि पावत ध्यानी ध्याय॥ हे गुरु देव महा प्रभु तव बलि जाँव। आन उपाव न भावत कतहु सुठाँव॥ एक भरोस चरन मम दीन दयाल। शोक बिनाशक शासक परम कृपाल॥ एक बार प्रभु श्रीमुखबचन अमोल। अति हर्षित ह्वै दीन्हो सु बचन अतोल॥ होहु प्रीति रघुबर पद आनद रूप। यही एक अवलंबन हर्ष अनूप ॥ जब करनी मैं समझहुं अपनी

ओर । होत महा दुख मोकहँ मन झक झोर ॥ डमाडोल मन होवत निशि दिन नाथ ॥ बचन रचन से स्वामी करहु सनाथ। डरत रहत मन कादर कंपत गात । नाथ अनाथ सनाथ हो होहु मैं श्रीरघुनाथ ॥ बार बार पद बंदत जय रघुबीर ॥ जय करुणाकर रघुबर धीर सुबीर ॥ बार्तिक ॥ श्रीगुरुदेव महिमा विदित है । उपनिषद् बचन प्रसिद्ध है ॥ यथा ॥ यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥ परंतु देव जो परमात्मा है सो अति दुर्विज्ञेय दुरूह सब के मत से है और गुरु देव स्वामी प्रगट नराकार महात्मा परंब्रह्म साक्षात्कार हैं एतदर्थ ही बेद भगवान यह बचन कहते हैं कदाचित् श्री गुरु महाराज तिरोधान लीला करि चुके होँ तत्पश्चात् यह परिज्ञान हुवा होवे के श्रीगुरुदेव भक्ती करने से सर्व मनोर्थ पूर्ण होता है तब यही करना उचित है उन महापुरुष की मूर्ति पूर्व दृष्ट हुई को स्नेह पूर्बक स्मरण करिके यह प्रार्थना करै के हे नाथ सर्वनाथ नाथ आप के प्रत्यक्ष मे मेरा मन सांसारिक जैसा आप का आराधन उचित रहा सो नहीं हुआ हे परात्पर दायक मैं महा मलीन दीन आप की सेवा से रहित रहा हे दीनबंधो अब मैं आप से दीन हो के प्रार्थना करता हूं के पूर्ब आप के स्वरूप नहीं जानने से अभाग बस

हो के आप के चरन कमल से विरहित रहा हे नाथ अब ऐसी अनुग्रह होवे के आप अपने प्रताप से निज परात्पर स्वरूप को बता दीजिये सेवाय आप के इस दीन के कोई नहीं है हे प्रभो यह मनुष्य शरीर जिस मनुज देह की महिमा सर्व शास्त्र बेद में प्रसंशनीय है वह मेरा अब तक व्यर्थ गया हे करुणासागर आप नित्य अखंड बयापक निरगुण सगुण से पार निराकार साकार स्वरूप अभिमत मत दातार हो यह सब कोई जानते हैं कि संत भगवंत कभी मरते नहीं यह जो पांचभौतिक शरीर का व्यवधान है सो तो लीला मात्र है निस्संदेह आप मेरी प्रार्थना सुनते हैं आप से और परमात्मा से केवल नाम मात्र का बीच है चतुर नाम वपु एक, अतएव हे नाथ जिसमें मेरे आत्यंतिक दुःख की निवृत्ति और आप के चरण कमल स्नेह में रूप परमानंद की प्राप्ति होवै सो आप के आधीन है मैं आप का लघु शिष्य दास बिना सेवा का सेवक हूं यह बचन मैंने पूर्वाचार्य्यों से सुना है कि ॥ सत्सुकार्य्याऽवतां पुंसामलमेवाग्रतः स्थितिः ॥ आप गरीब नेवाज दाता दयाल हो परम कृपाल हो ॥श्लो०॥ स्वर्गो धनं वा धान्यं वा बिद्या पुत्रसुखानि च ॥ गुरुवृत्यनुरोधेन न किंचिदपि दुर्ल्लभम् ॥१॥ प्रथमावस्था मे बिना बिचारे

सामान्य रीति से गुरुमुख हो गया हो पश्चात् बिचार के साथ उपदेश दीक्षा दूसरे महात्मा से लेना उचित है नह्येकस्मात् गुरोर्ज्ञानं लभते, परंतु पूर्व दीक्षा जिन महात्मा से लिया गया है उन में अभाव नहीं करना चाहिए कदाचित् प्रथम उपदेष्टा गुरु देव महाराज में काम या क्रोध अथवा लोभ संबंध दृष्टि गोचर होता हो तब भगवत्मूर्ति बिचार के श्री कृष्णचन्द्र जी नृसिंह जी श्री वामन जी बिचार के लीलानुसंधान परामर्श पूर्वक तिरस्कार नहीं करना इस में एक आख्यायिका है एक राजा को एक पाखंड़ी नट चेला किया हजारहां रुपया उस पाखंडी नट ने लिया और फिर देशान्तर में अपनी जीविकार्थ नट विद्या करा करता दैव योग किसी देश में वह पाखंडी नट वांस पर चढ़ा हुवा शिर के ऊपर मटुका आदि खेल की चीज रक्खे हुए तमाशा कर रहा था किसी संयोग से वही चेला राजा लशकर के साथ जा पड़ा राजा रूपान्तर से नहीं पछान सका परन्तु और नौकरों ने उस वेषधारी नट को चीन्ह लिया और राजा से प्रार्थना किया कि देखिये महाराज यह वही साधू है जिसने आप को शिष्य किया था यह बात सुनते हीं वह परम निष्ठा युक्त महाराज सवारी से उतर के साष्टांग प्रणाम करते

भये और कहा कि धन्य मेरे भाग्य अनंत रूप से आप दर्शन देते हैं अश्रुपात पुलकावली गदगदकंठ रोमांच हुवा वह बडभागी राजा पृथ्वी पर लोट रहा था कि सर्वान्तर्यामी महाराज परमेश्वर भाववश्य भगवान द्विभुज श्याम सुंदर धनुष बाण धारण किये परम मनोहर मूर्ति प्रगट हो के राजा साहेब का शिर पकड़ के उठाया और प्रभु ने कहा कि हे गुरुभक्त मेरे प्राणप्रिय तूं धन्य है और तेरी निष्ठा की बलिहारी तेरे माता पिता को धन्य तेरी निष्ठा से तेरे गुरु भी कृतार्थ हुये बरदान देके प्रभु अन्तर्धान हो गये॥ किसी प्रकार से गुरुदेव में स्नेह होवे वह शिष्य सब तरह से कृतार्थ है अनेक प्रकार कीजिज्ञासा परमेश्वर प्राप्ति वास्ते लौकिक सुख वास्ते सब लोग यत्न करते हैं परन्तु ऐसी भगवत की माया प्रबला है कि अच्छे अच्छे बिचारवान पंडित ज्ञाता भी धोखे में आ जाते हैं विचारना चाहिए के बहुत कम लोग हैं जो गुरु नहीं करते तथापि जो लोग गुरुमुख हैं उनको सुखी होने का बहुत सहज उपाय है वह यह है कि जिस के गुरुदेव चाहे विद्वान हों अथवा अविद्वमान होवें सामान्य जाति होवें वा विशेष गृहस्थ या विरक्त वर्ण या आश्रम कोई क्यों न होवें उन गुरुदेव को प्रसन्न करना तन से मन से धन

से बचन से जन्म भर में एक बेर भी वह महाराज को प्रसन्न करना यही लोक परलोक का आनंददायक है कदाचित् वह गुरुदेव परमधाम पधार गए होवें तब उनकी स्थूल मूर्ति का ध्यान करना और मानसी पूजा करना ॐगुं गुरवे नमः इस महामंत्र को जप करना वह शिष्य कुछ धन का सम्बन्ध रखते होवे तब उन गुरुदेव का उद्देश करके अच्छा भोजन उत्तम बस्त्र खिलाना पहिराना श्रीगुरुदेव महाराज को प्राप्त होगा इस आराधन से बहुत शीघ्रही श्री गुरुदेव महाराज प्रसन्न होंगे ॥ श्री गुरु महाराज प्रगट परमात्मा मूर्ति का पूजन आराधन चिन्तन अति शीघ्र फलदायक होता है ॥ जन्म भर में एक बेर भी महाराज स्वामी गुरु देव शिष्य के ऊपर प्रसन्न हुये हों वह कृतार्थ है जो लोग कम समझ के होते हैं वह करामात सिद्धाई को देखते हैं और जो बिचारवान सत् पुरुष हैं वह शास्त्रीय शुभाचरण को सर्वोत्तम करामात जानते हैं हमारे श्री स्वामी जी महाराज की अति ही अद्भुत रीति थी एक दिन की बार्ता है कि एक प्रेमी मुन्शी बैद्यनाथ नाम एक मृगीवाले पुरुष को लाए उसकी माता भी संग में थी उस बीमार का दुःख मुन्शी साहब ने श्री स्वामी जी से निवेदन किया उक्त मुन्शी उसका

दुःख कही रहे थे उसी समय उस रोगी पुरुष को ऐसी मृगी आई कि मुख से कफ जारी तड़पता हुवा बेहोश हो गया श्रीस्वामी जी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से तुर्त आज्ञा की कि इस रोगी को श्रीसरजू जी में खूब स्नान करावो नहाने के बाद उसकी चेष्टा अति प्रफुल्लित हुई उस दिन से जन्म पर्यन्त मृगी आदि कोई रोग उसे नहीं हुवा यह कोई विशेष बात नहीं है महा पुरुष सन्तों के समागम से वह आनन्द होता है जो अकथनीय है अपने मन से जिस किसी को कह देवें उसका लोक परलोक दोनो सुधरता है जिन महात्मा की वृत्ति परंब्रह्म में लगी होती है वह जिसके वास्ते जो कुछ कहते हैं वह निस्संदेह होता है अतएव जो कोई गुरु निष्ठा में सावधान है मन से बचन से शरीर से धन से श्री गुरुदेव का पूजन मानसी अथवा शरीर से करते हैं उनको कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं होता ॥श्लो०॥ गुरु वृत्यनुरोधेन न किंचिदपि दुर्लभम् । यह श्रुति प्रगट है ॥श्रुतिः॥ यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ तस्येयं कथिताह्यर्थाः प्रकाश्यन्ते महात्मना ॥१॥ जैसी भक्ति परमात्मा में उसी तरह गुरुदेव में, परमात्मा परोक्ष है तिसमें भी अनेक विवाद है निरगुण सगुण निराकार साकार मतमतान्तर

नास्तिक आस्तिक द्वैत अद्वैत द्वैताद्वैत विशिष्टाद्वैत शुद्धाद्वैत बैष्णव शाक्त गाणपत्य सौर्य्य शैव अनेक प्रकार भगवत के प्राप्ति होने में वाद विवाद हैं परन्तु श्रीगुरुदेव महाराज के पूजन में कोई विवाद नहीं सब मत में गुरु होते हैं श्री गुरुदेव विना कोई मत नहीं ज्ञान भक्ति उपासना बिना गुरु की कोई सिद्धि नहीं है श्री गोस्वामी का बचन। बिनु गुरु भव निधि तरै न कोई। जो विरंचि शंकर सम होई॥ अतएव जिसके जिस मत के गुरु होवैं उन महाराज का पूजनाराधन करना सर्व सिद्धि प्रद है॥ कदाचित् उन गुरुदेव महाराज में अज्ञता बस किसी प्रकार की ... ...

॥ श्रीः ॥

श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥ रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम् ॥ सुग्रीवं वायुसूनुं च प्रणमामि पुनः पुनः ॥१॥ अथ स्वस्तिश्रीमन्नृपति विक्रमार्कराज्याद्गताब्दवृन्देषु १८७५ तथा चावनीशेन्द्रश्रीमच्छालिवाहनाख्येलापगीतशुभशकाब्देषु १७४० तत्र मांगल्यप्रदोर्ज्जमासि बहुलपक्षगसप्तम्याम्बुधवासरे घटीपले ३६०७ पुनर्वसुनक्षत्रे दण्डपले ५११६ सिद्धियुतौ ५१।४५ बालकृतावेवंपचाङ्गशुद्धौ द्युमितिः २८ १४ तमीभानम् ३१ ४६ द्युदलम् १४ ७ तमीसकलम् १५ ४३ निशार्कयोर्म्मानदण्डाः ६० ० तत्र रात्रावर्घकपाले प्राक्तनम् २१ २४ प्रागुन्नतम् ८६ अथजूकर्क्षस्थसवितुर्जातलवाः ६ भोग्यांशाः २४ तथाच श्रीमत्पद्मिनीरमणमंडलार्द्धोदयाद्गतासु सावनास्विष्टघटीषु ५२।४५ तत्समये शुभगुणविशिष्टे सिंहलग्नोदये श्रीमच्छीतारामचरणारविन्दानुरतानन्दस्वरूपस्वेष्टदेवताराधन–दिव्यपुरुषार्थ गुणिजन गुणज्ञ परमदयाल्वनेक विद्वज्जन कवि संत वृन्द बन्दित चरण कमल मंगलायतन श्री

श्री श्री श्री श्री श्री मद्युगलानन्यशरण महाशयानाम्प्रादुर्भावोऽभूत् पुष्यप्रथमांशी ।

श्रीसीतारामशरणं सदास्तु शुभम्

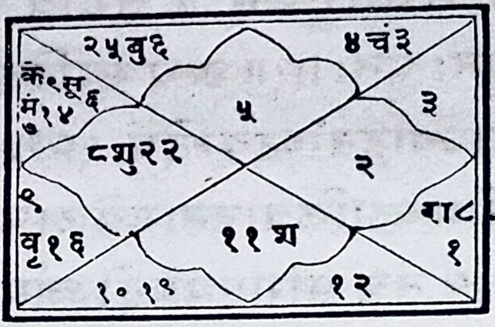
२५बु६
४चं३
कें०सू६
मं१४
५
३
८गु२२
२
९
रा८
वृ१६
११श
१
१०११
१२

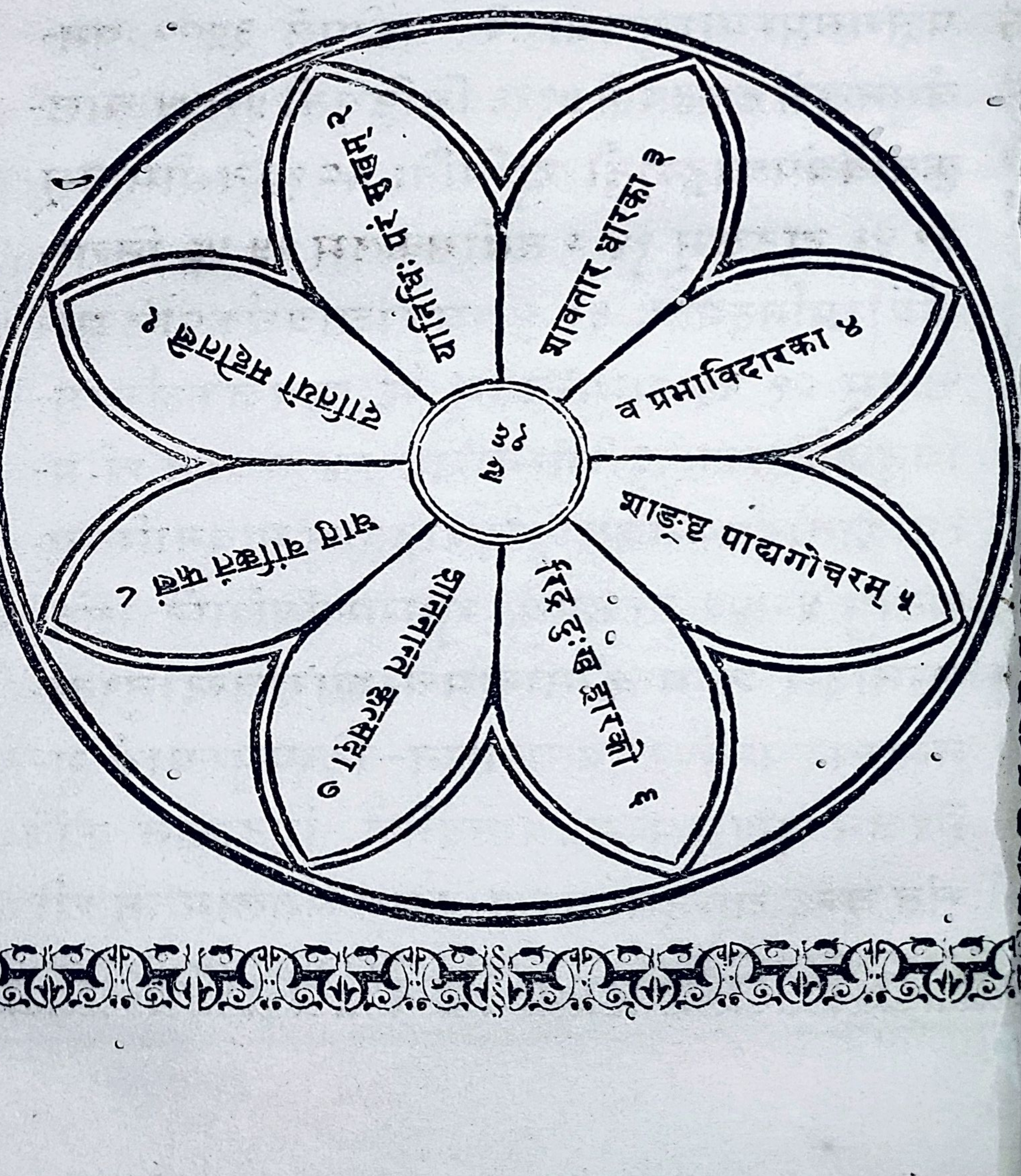
दातियो महोतले १
यान्निधिं परं शुभम् २
श्रावतार धारका ३
व प्रभाविदारका ४
शाङ्घ्रि पाद्यगोचरम् ५
र्दुःख हारकौ ६
शाननान्त कल्मषा ७
धातु वांछितं फलं ८
श्र
३४

सवैया ।

हे सब सन्तन के शिरताज! कृपा अवलोकनि मो पै निहारो ॥ तेरे ही दास को दास कहावत "रंग" अहै सब भांति तिहारो ॥ यद्यपि दीन मलीन अघी पर है तो तिहारेहि बारे को बारो ॥ श्रीयुग्म अनन्य सो कीजै कृपा जेहि मो द्वै **तव शिष्य दुलारो** ॥१॥

16745